ॐ श्री ओङ्कारानन्द-कामाक्षी पञ्चाङ्गम् ॐ

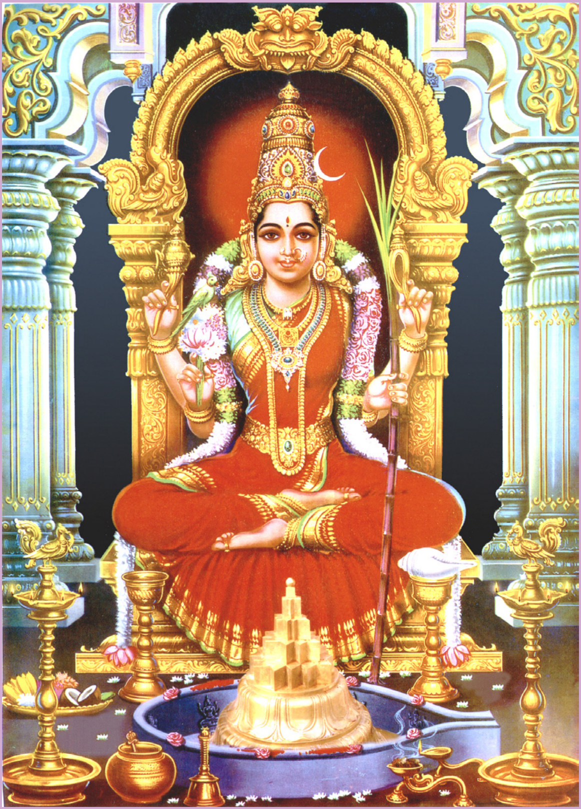

विक्रम सम्वत् 2082 * ईस्वी सन् 2025–2026

‘ सिद्धार्थी ’ नाम सम्वत्सर

राजा - सूर्य मन्त्री - सूर्य

भगवान् श्री दक्षिणामूर्ति

गुरुदेव परमहंस श्रीमत्स्वामी ओङ्कारानन्द सरस्वती जी महाराज

महन्त श्री स्वामी विश्वेश्वरानन्द सरस्वती
अध्यक्ष, ओङ्कारानन्द आश्रम हिमालय

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॐ॥
॥ ॐ श्री ओङ्कारानन्द–कामाक्ष्यै नमः ॐ॥
॥ ॐ श्री सद्गुरुदेव परमहंस ओङ्कारानन्दाय नमः ॐ॥

ॐ श्री ओङ्कारानन्द-कामाक्षी पञ्चाङ्गम्

'सिद्धार्थी' नाम सम्वत्सर

राजा – सूर्य **मन्त्री – सूर्य**

विक्रम सम्वत् 2082, शाङ्कराब्द 1238
कलिवर्ष 5126, शक सम्वत् 1947
ईस्वी सन् 2025–2026

'सिद्धार्थी ' नामक इस सम्वत्सर के दशाधिकारी
राजा–सूर्य, मन्त्री–सूर्य, सस्येश–बुध, धान्येश–चन्द्र,
मेघेश–सूर्य, रसेश–शुक्र, नीरसेश–बुध,
फलेश–शनि, धनेश–मंगल, दुर्गेश–शनि

प्रकाशकः

श्री ओङ्कारानन्द आश्रम हिमालय

स्वामी ओङ्कारानन्द सरस्वती मार्ग,
डाक-घर - शिवानन्दनगर-249192, मुनि-की-रेती,
जिला - टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

सम्पादक - स्वामी परमानन्द गिरि
संकलनकर्ता - पं. सुरेश जोशी

© सर्वाधिकार सुरक्षित

www.oah.in / www.omkarananda-ashram.org

विषय सूची

शुभ संकल्प 4
निर्देश 5
सम्वत् एवं दशाधिकारी फल 6-10
द्वादश राशि फल 11-14
प्रमुख व्रत-त्यौहार, व्रत एवं छुट्टियाँ 15-19
संदिग्ध प्रमुख व्रत-पर्वों का शास्त्रीय निर्णय 20-22
ग्रहण विवरण 23-24
सङ्कटनाशनगणेशस्तोत्रम् 25
महिषासुरमर्दिनी-स्तोत्रम् 26-27
श्री शिवमहिम्नः स्तोत्रम् 28-33
सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम् 33-34
लिङ्गाष्टकम् 35
श्री शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् / द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्मरणम् 36
रुद्राष्टकम् 37
शिवताण्डवस्तोत्रम् 38
श्री शिव जी की आरती 39
कालभैरवाष्टकम् 40
श्री वेङ्कटेश स्तोत्रम् 41
हनुमान चालीसा 42-43
श्री बजरंग बाण 44-45
श्रीगङ्गाष्टकम् 45-46
वर्गीकृत तिथि सूचना (दिनाङ्क अनुसार) 47
तिथि वारादि पञ्चाङ्ग 48-95
शुभ व्यापार आरम्भ मुहूर्त 96-97
यज्ञोपवीत (उपनयन) मुहूर्त 97
चूडाकर्म मुहूर्त 98
शुभ विवाह मुहूर्त 99-104
गृहारम्भ मुहूर्त 105
नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त 106
राहु काल / यम काल / सर्वार्थ सिद्धि योग / अमृत सिद्धि योग 107
सर्वार्थ सिद्धि योग का प्रारम्भ व समाप्ति काल 108-110
गुप्त नवरात्रि / कलंक चौथ चन्द्रदर्शन दोषनिवारक मन्त्र 110
अमृत सिद्धि योग का प्रारम्भ व समाप्ति काल 111
गण्डमूल के नक्षत्र / गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्ति काल 112-113

विषय सूची

शनि की साढ़ेसाती, ढैय्या एवं सुवर्णादि पाया फल विचार 113-114
कुम्भ राशि में शनि का गोचर फल 114-115
शनि के पाद (पाया) फल विचार एवं शनि शान्त्यर्थ शास्त्रीय उपाय 116
नामाक्षरानुसार नक्षत्र राशिज्ञान चक्र 117
यात्रा विचार प्रकरण / राहु वास चक्र 118
दिक्शूल परिहार / यात्रा में चन्द्रमा विचार 119
सूर्योदय से चौघड़िया दिन के प्रति अंश में यात्रा का फल 119
सूर्यास्त से चौघड़िया रात्रि के प्रति अंश में यात्रा का फल 120
भद्रा लोक वास / भद्रा का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल 121-123
यज्ञोपवीत धारण करने एवं त्यागने का मन्त्र 123
पञ्चक नक्षत्र विचार / पञ्चकारम्भ एवं समाप्तिकाल 124
दीपावली (श्री महालक्ष्मी पूजन) 125-126
अथ संक्षिप्त-सन्ध्योपासना-विधिः 127-130
देवपूजा सम्बन्ध में कुछ शास्त्रोक्त बातें 131-134
विविध द्रव्यों द्वारा शिवपूजन से अभीष्ट प्राप्ति 135-136
नव ग्रहों के जपार्थ वैदिक मन्त्र 136
51 शक्तिपीठ 137-141
18 पुराण (एक परिचय) / 84 लाख योनियाँ 142
भारत के चार धाम / उत्तराखण्ड के चार धाम 142
14 लोक / सप्तर्षि / दशावतार 143
षोडश संस्कार (एक संक्षिप्त परिचय) 144
आध्यात्मिक जीवन में गुरु का महत्त्व 145
गुरु से मन्त्र ग्रहण तथा जप विधि (संक्षिप्त) 145
होमादि में अग्निवास 146
होमादि में शिववास 147
चतुर्युगों की व्यवस्था का वर्णन 148
आपको किस दिन क्या करना शुभ है 149
अन्य विविध मुहूर्त 150-151
ग्रह राशि सम्बन्धी रत्न विचार 152
ग्रह कृत अनिष्ट फल निवारण हेतु सूर्यादि ग्रहों के दानादि पदार्थ 153
ग्रह दोष निवारण हेतु बीज मंत्र 154
नवग्रहपीडाहरस्तोत्रम् / नवग्रहस्तोत्रम् 155
वास्तु प्रकरण 156-159
प्राकृतिक उपचार 160-164
मेथी के गुणकारी लाभ 164

शुभ संकल्प

ज्योतिष के महान् आचार्य वराहमिहिर 'सिद्धार्थी'-नामक संवत्सर का वर्णन करते हुए कहते हैं कि इस संवत्सर में अनेक सद्गुण विद्यमान हैं, क्योंकि इस संवत्सर में प्रजा के धन-धान्य एवं समृद्धि की बहुत वृद्धि होती है – "सिद्धार्थसंज्ञे बहवो गुणाश्च" (बृहत्संहिता 8.49) अर्थात् सिद्धार्थ नामक इस संवत्सर के बहुत गुण हैं। वस्तुतः जिस संवत्सर में प्रजा के 'अर्थ' अर्थात् प्रयोजन की सिद्धि होती है, उस संवत्सर को ही 'सिद्धार्थ' अथवा 'सिद्धार्थी' कहा गया है।

वैदिक सनातन धर्म में मानव जीवन का सर्वोच्च प्रयोजन माना गया है – परमात्म-साक्षात्कार। इसीलिये इसे ही परम पुरुषार्थ भी माना गया है। मानव जीवन के समस्त प्रयोजनों की सिद्धि इसी से होती है, इसीलिये श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र में परमात्मा का एक नाम 'सिद्धार्थ' भी बताया गया है क्योंकि उनके साक्षात्कार मात्र से ही जीवन के सभी अर्थ अर्थात् प्रयोजन सिद्ध हो जाते हैं। यही बात उपनिषदों में भी कही है – "सोऽश्नुते सर्वान् कामान्" (तैत्तिरीय उपनिषद् 2.1) अर्थात् सच्चिदानन्द स्वरूप परब्रह्म तत्त्व का अपनी हृदय गुहा में साक्षात्कार करने वाले की सभी इच्छायें पूर्ण हो जाती हैं। यही जीवन की वास्तविक समृद्धि है। इसीलिये कहा गया है – "विपदो नैव विपदः संपदो नैव संपदः। विपद्विस्मरणं विष्णोः संपन्नारायणस्मृतिः" अर्थात् सांसारिक विपत्तियां कोई विपत्ति नहीं और सांसारिक संपत्ति कोई संपत्ति नहीं, अपितु परमेश्वर का विस्मरण ही सबसे बड़ी विपत्ति और उनकी सतत स्मृति बने रहना ही सबसे बड़ी संपत्ति है।

इसीलिये आध्यात्मिक उन्नति के इच्छुक वैदिक सनातन मार्ग के पथिक का यह कर्तव्य बन जाता है कि वह अपने जीवन में वास्तविक समृद्धि को प्राप्त करने के लिये सदैव परमात्मा का स्मरण करता रहे, इसी से ही मानव जीवन के सभी अर्थ अर्थात् प्रयोजन सिद्ध होते हैं। बस, यही सन्देश देने के लिये इस संवत्सर का नाम हमारे महर्षियों ने "सिद्धार्थी" रखा होगा, ऐसा ज्ञात होता है।

आइये, इस "सिद्धार्थी" नामक संवत्सर के प्रारम्भ में हम सभी जगज्जननी आद्याशक्तिस्वरूपा भगवती ओंकारानन्द-कामाक्षी से प्रार्थना करें कि वे हमें ऐसी शक्ति प्रदान करें जिससे हम सदैव परमात्मा का स्मरण करते रहें, उन्हें कभी भूलें नहीं, जिससे मानव जीवन का सर्वोच्च अर्थ अर्थात् प्रयोजन सिद्ध हो और हम 'सिद्धार्थ' बन सकें, क्योंकि इसी में तो हमारे इस दुर्लभ मानव जीवन की सफलता है। इत्यों शम्।

निवेदक – सिद्धार्थ कृष्ण

निर्देश

- यह पञ्चाङ्ग 30:44 अक्षांश के आधार पर है। तिथि, नक्षत्र की समाप्ति का काल घण्टा, मिनट के अनुसार है।
- दोपहर 12 बजे के बाद 1 बजे का मान पाठकों की सुविधा के लिये 13 दिया गया है। उसी प्रकार दोपहर 2 बजे के लिये 14।
- जहाँ पर 24, 25, 26 आदि अंक लिखे हैं, वहाँ 24 रात्रि 12 बजे, 25 को रात्रि के 1 बजे, 26 को रात्रि के 2 बजे जानें। इसी प्रकार आगे के अंको में भी 24 घटाकर अर्धरात्रि के बाद का समय जानें। जब तक आगामी दिवसीय सूर्योदय न हो, तब तक **भारतीय ज्योतिष परम्परानुसार पिछली तारीख का दिन ही माना जाता है।**
- तिथि एवं नक्षत्र का समय समाप्ति-काल में दिया गया है।
- करण तथा योग प्रातःकालीन सूर्योदय के ही लिखे गये हैं।
- पूर्णिमा के लिये 15 और अमावस्या के लिये 30 लिखा गया है, गते को सौरमास की प्रतिष्ठा जानें।
- भद्रा तथा सर्वार्थ सिद्धियोग पर्वनाम में दिये गये हैं। कहीं-कहीं उनका मान 24 घण्टा 30 मिनट लिखा हो तो उसका अर्थ हैं रात्रि के 12 बजकर 30 मिनट।
- मुहूर्त्त जिस दिन के शुभ हैं उसी दिन के दिये गये हैं।
- **हवन करते समय अग्निवास का बड़ा महत्त्व है तथा जिस दिन अग्निवास पृथ्वी पर हो उसी दिन हवन किया जाता है अतः जिस दिन अग्निवास पृथ्वी पर है उस दिन के पर्वनाम में का चिह्न दिया गया है।**

✻ सम्वत् एवं दशाधिकारी फल वि.सं. 2082 ✻
॥ सम्वत्सर – सिद्धार्थी, राजा – सूर्य, मन्त्री – सूर्य ॥

नव विक्रमी संवत् 2082 के आरम्भ (30 मार्च, 2025 ई.) में बार्हस्पत्यमान (गुरुमान) से शिव (रुद्र) विंशति के अन्तर्गत 'एकादश युग' का तृतीय 'सिद्धार्थी' नामक (सम्वत्सरों में 53वाँ) सम्वत्सर का प्रारम्भ हो चुका होगा। (सिद्धार्थी-संवत्सर का आरम्भ लगभग 15 मार्च, 2025 ई.से हो चुका होगा तथा 10 मार्च, 2026 ई. तक रहेगा)।

नव विक्रमी संवत् का प्रवेश 29 मार्च, 2025 ई. शनिवार को **उत्तराभाद्रपद नक्षत्र तथा ब्रह्म योग कालीन सिंह लग्न** में होगा। शास्त्र एवं प्रचलित परम्परानुसार नवसंवत् का प्रारम्भ तथा राजा का निर्णय चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के वार-अनुसार ही किया जाता है। **'रविवार'** से नवसंवत् का प्रारम्भ होने के कारण आगामी वर्ष (संवत्) का राजा **'सूर्य'** होगा। सम्वत्सर का निर्णय भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (संवत् के आरम्भ) में विद्यमान् सम्वत्सर को ही लिया जाता है। तदनुसार **'सिद्धार्थी'** नामक नव वि. संवत् 2082 तथा चैत्र (वासन्त) नवरात्रों का प्रारम्भ 30 मार्च, रविवार (17 चैत्र प्रविष्टे), उत्तराभाद्रपद नक्षत्र कालीन होगा।

चैत्र (वासन्त) नवरात्र अर्थात् 30 मार्च, रविवार से जप, पाठ, पूजन, दान, ब्रतानुष्ठान, यज्ञादि, धार्मिक अनुष्ठान कर्मों के आदि में संकल्पादि प्रयोग कार्यों में **10 मार्च, 2026 ई. तक 'सिद्धार्थी'** नामक नव सम्वत्सर का प्रयोग होगा। **ता. 10 मार्च, 2026 ई. के बाद सभी प्रकार के संकल्प कार्यों में संवतारम्भे 'सिद्धार्थी' परं वर्तमाने 'रौद्र'** नाम सम्वत्सरे का प्रयोग करना चाहिए।

'सिद्धार्थी' नामक सम्वत्सर का फल शास्त्रों में इस प्रकार वर्णित है-

सिद्धार्थवत्सरे भूयो भूयो-ज्ञान-वैराग्य-युक्त प्रजाः।
सकला-वसुधा-भाति-बहुसस्यार्घ-वृष्टिभिः ।।

अर्थात् **'सिद्धार्थी'** नामक संवत्सर में प्रजा ज्ञान, वैराग्य आदि विषयों में विशेष रुप से रूचि रखेगी तथा धार्मिक आयोजन विशेष रूप से अधिक होंगे। वर्ष में अच्छी-उपयुक्त, वर्षा हो, प्रतिकूल जलवायु के बावजूद अच्छा उत्पादन, शासन-तन्त्र की स्थिरता बनी रहेगी। सम्पूर्ण पृथ्वी पर प्रसन्नता रहे। इस संवत्सर का स्वामी सूर्य है। देश में सुकाल के बावजूद प्रजा असन्तुष्ट रहे। धान्यादि की मांग अधिक रहे। चैत्र में धान्य भाव तेज़ रहे। वैशाख में कुछ मन्दी रहे, वैशाख-ज्येष्ठ में लोगों को पीड़ा और युद्ध-भय हो। भाद्रपद में खण्ड वृष्टि हो, वर्षा कम होगी। आश्विन में रोग पीड़ा और धान्य भाव मध्यम हो। मार्गशीर्ष आदि चार महीनों में राज्य-विरोध, प्रजा में अशान्ति तथा धान्यादि आवश्यक वस्तुओं में तेजी का रुख रहे।

रोहिणी का वास-वि.संवत् 2082 में मेष संक्रान्ति का प्रवेश '**स्वाति**' नक्षत्रकालीन हुआ है। अतएव '**वर्षप्रबोध**' ग्रन्थानुसार रोहिणी का वास '**तट**' पर होगा। यथा-

यदि विधिधिष्ण्यपतति तटस्थम्। शुभजल वृष्टिः धन-कण वृद्धिः॥

अर्थात् '**तट**' पर रोहिणी का वास होने से आगामी वर्ष उपयोगी एवं उत्तम (अच्छी) वर्षा होने के योग बनते है। फलस्वरूप धान्य, चावल, चने, गन्ने, वृक्ष, घास व अन्य जड़ी-बूटियों, पौधों की पैदावार भी अच्छी होगी। प्रजा में अन्न, धन एवं अन्य सुख-साधनों एवं व प्रसाधनों की वृद्धि होगी।

संवत् (समय) का वास–रोहिणी का वास '**तट**' पर होने की स्थिति में संवत्सर पर वास '**रजक (धोबी)**' के घर रहेगा, जिसके प्रभावस्वरूप वर्षा विपुल एवं उत्तम मात्रा में होगी 'रजके वृष्टिरूत्तमा'। धान्य, गेहूँ, चना, ईख, मक्की, हरी, सब्ज़ियों, वृक्षों व फलों का उत्पादन अच्छा होगा। लोगों में सुख एवं ऐश्वर्य के साधन बढ़ेंगे। (कुएँ, तालाब, नदी-नाले, बावड़ियां, दरिया आदि जलापूरित रहेंगे। यथा-

वापी कूपतडागानि नदी नद वनानि च। जलपूर्णानि दृश्यन्ते वासो रजके॥

संवत् (समय) का वाहन–वि. संवत् 2082 का राजा '**सूर्य**' होने से सम्वत् का वाहन '**अश्व**' होगा जिससे देश में कहीं बहुत अधिक, कहीं अल्प वर्षा होगी अर्थात् असमान (विषम) वर्षा होगी। कुछ प्रदेशों/क्षेत्रों में अति वर्षा के कारण भूस्खलन, बाढ़, कृषि-हानि, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोपों का भय रहेगा तो कहीं अल्प वर्षा के कारण अकाल, दुर्भिक्ष जन्य परिस्थितियां रहेंगी। राजनीतिक क्षेत्रों में मतभेद तथा अनिश्चितताएं रहेंगी। कहीं उलट-फेर (छत्रभंग) हों। अधिकांश लोग बाह्य आकर्षणों में आसक्त रहें। तापमान में वृद्धि हो।

राजानो विग्रहं यान्ति वृष्टिनाशो महर्घता। भूमिकम्पो भयं घोरं हयारूढ़े तु वत्सरे॥

(1) राजा सूर्य का फल -

सूर्ये नृपे स्वल्पफलाश्च मेघाः स्वल्पं पयो गौषुजनेषु पीडा।
स्वल्पं सुधान्यं फलं अल्पवृक्षाश्चौराग्नि बाधानिधनं नृपाणाम्॥

अर्थात् संवत् का राजा **सूर्य** हो, तो उस वर्ष देश के कुछ क्षेत्रों में समयानुसार एवं उपयोगी वर्षा की कमी रहे। गाय-भैंस आदि चौपाय दूध कम देंगे। सामान्य लोगों में दुःख, विग्रह, कलह-क्लेश एवं कष्टादि अधिक हों। धान्य, गन्ना आदि फसलों, वृक्षों पर फल, फूलादि मौसमी फलों का उत्पादन कम हो। प्रशासकों/राजनेताओं में परस्पर टकराव एवं विरोध अधिक रहे। चोरी, ठगी, डकैती, लूटमार, रेलयान, वाहन, अग्निकाण्ड की वारदातें अधिक होंगी। कट्टरवाद एवं साम्प्रदायिक उपद्रव की घटनाएँ अधिक होंगी। लोगों में क्रोध, उत्तेजना, कलह, विचित्र तथा नेत्र सम्बन्धी गम्भीर रोगों की अधिकता रहे। राजसिक प्रवृत्तियां अधिक बढ़ें। किसी विशिष्ट राजकीय नेता के आकस्मिक निधन होने से देश में शोक व्याप्त हो।

(2) मन्त्री सूर्य का फल -

नृपभयं गदतोऽपि हि तस्करात् प्रचुर धान्यधनादि महीतले।
रसचयं हि समर्घतमं तदा रवि अमात्यपदं हि समागतः॥

अर्थात् जिस वर्ष सूर्यदेव को मन्त्री पद प्राप्त हो, उस वर्ष राजाओं को भय अर्थात् प्रशासकों व राजनीतिक पार्टियों में परस्पर विरोध एवं टकराव बढ़े (केन्द्र व राज्य सरकारों में मतभेद रहेंगे)। पृथ्वी पर धन-धान्यादि सुख-साधनों का प्रसार अधिक बढ़े, परन्तु साथ ही साथ कठोर सरकारी नीतियों व गतिविधियों, चोर-लुटेरों के कारण प्रजा में भय, विक्षोभ व असन्तोष भी रहे। क्लिष्ट एवं पेचीदा रोगों के आधिक्य से जनता में अराजकता अनुभव करें। पेयजल, गुड़, दूध, तेल, ईख, फल, सब्ज़ियाँ, चीनी इत्यादि रसदार वस्तुओं की कमी एवं उनमें समर्घता (तेजी) हो। अन्य जनोपयोगी वस्तुओं के मूल्यों में भी तेजी होगी।

राजा और मन्त्री पद-एक ही ग्रह 'सूर्यदेव' को-

ध्यान दें-इस वर्ष राजा और मन्त्री के दोनों पद **'सूर्यदेव'** के पास है। जिस वर्ष राजा और मन्त्री के पद एक ही ग्रह के पास हो, तो उस वर्ष विभिन्न देशों के राजनेता निरंकुश, स्वार्थपूर्ण एवं मनमाना आचरण करेंगे। अग्निकाण्ड, भूकम्प, बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोप तथा साम्प्रदायिक हिंसा एवं जातीय उपद्रव अधिक होंगे। कहीं वर्षा में कमी और जलवायु में उष्णता (गर्मी) अधिक रहे। लोगों में क्रोध और आवेश के कारण हिंसक घटनाएं अधिक होंगी। सत्तारूढ़ राजनेताओं एवं विपक्षी नेताओं के मध्य टकराव एवं आरोप-प्रत्यारोप अधिक होंगे। अनाज, फलों, सब्ज़ियों व धान्यादि की पैदावार कम होगी। चोरी, डकैती, लूटमार, अग्निकाण्ड एवं लोगों में क्लिष्ट रोग, तनाव एवं नेत्र, रक्त-पित्तजन्य रोग अधिक होंगे। अनाजादि में तेजी के कारण व्यापारी लोग अच्छा मुनाफा उठाएंगे।

स्वयं राजा स्वयं मन्त्री जनेषु रोगपीड़ा चौराग्नि,
शंका-विग्रह-भयं च नृपाणाम्॥

(3) सस्येश बुध का फल -

जलधरा जलराशिमुचो भृशं सुखसमृद्धियुतं निरुपद्रवम् ।
द्विजगणाः स्तुतिपाठरताः सदा प्रथमसस्यपतौ सति बोधने॥

सस्येश (ग्रीष्मकालीन फसलों का स्वामी) बुध हो, तो देश में वर्षा अधिक हो, लोगों में सुख-समृद्धि का वातावरण रहे, परन्तु महँगाई एवं खर्च भी बढ़ेंगे। सामाजिक स्थिति भी शान्तिपूर्ण रहे। बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा शासन-तन्त्र की प्रशंसा हो, आतंक एवं उपद्रव की घटनाओं में अपेक्षाकृत कमी हो। ब्राह्मण लोग (द्विजगण) वेदाध्ययन, हवनादि धार्मिक कार्यों में प्रवृत्त होंगे। बुद्धिजीवी लोग अध्ययन-अध्यापनादि कार्यों में प्रवृत्त होंगे। उच्च-तकनीकी विद्याओं की ओर लोगों का रुझान बढ़ेगा।

(4) धान्येश चन्द्र का फल -

चन्द्रे धान्याधिपे जाते प्रजावृद्धिः प्रजायते।
गोधूमा सर्षपाश्चैव गोषुक्षीरं तदाबहु॥

धान्य (शीतकालीन फसलों का स्वामी) का स्वामी `चन्द्रमा` हो, तो उस वर्ष जनसंख्या में विशेष वृद्धि होती है। शीतकालीन फसलों जैसे-कपास, चना, सोयाबीन, सरसों, गेहूँ, अन्य धान्य आदि तथा गोदुग्ध/गोघृत के उत्पादन में विशेष वृद्धि होगी। श्रेष्ठ एवं उपयोगी वर्षा, धरती पर नदियों, तालाबों में जल-स्तर ठीक रहे तथा लोगों में उत्साह बना रहता है।

(5) मेघेश सूर्य का फल -

जलदपे यदिवासरपे तदा सरसि वै रमते जनतारसम् ।
यव चणेक्षु-निवार सुशालिभिः सुखचयं सुलभं भुविवर्तते॥

मेघेश (वर्षा का स्वामी) सूर्य होने से गेहूँ, जौं, चना, ईख, बाजरा, नीवारू, चावल, मूँग की पैदावार अच्छी होगी। पृथ्वी पर सुख-ऐश्वर्य के विविध प्रकार के साधनों का विस्तार होगा। दूध, गुड़, शक्कर, चावल, ईखादि की पैदावार कम हो, कई स्थानों पर नदी, नालों में जलस्तर कम हो। उपयोगी वर्षा की कमी रहे। जनता भय, ढोंग, पाखण्ड से परेशान रहे।

(6) रसेश शुक्र का फल -

यजन-याजनकोत्सव कोत्सुका जनपदा जलतोषित मानसाः।
सुख-सुभिक्ष सुमोदवती धरा धरणिपा हत पाप गणप्रियाः ॥

`शुक्र` रसेश हो, तो लोग यज्ञ, याजन एवं विविध मांगलिक उत्सवादि करने में उत्सुक रहें। कहीं अनुकूल वर्षा होने से लोग किंचित् प्रसन्न एवं सन्तुष्ट हों। पृथ्वी पर सुभिक्ष, सम्पन्नता एवं सुख-साधनों में वृद्धि हो। मौसमी मेवाजात और कृषि आदि की पैदावार अच्छी हो। शासक लोक-कल्याण के कार्यों में प्रवृत्त हो।

(7) नीरसेश बुध का फल -

चित्र वस्त्रादिकं चैव शंख-चन्दन-पूर्वकम् ।
अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो बुधो यदि ॥

`बुध` नीरसेश (ठोस धातु पदार्थों का स्वामी) हो, तो विभिन्न वर्ण के (रंग- बिरंगे) सुन्दर वस्त्र, शंख, चन्दनादि लकड़ी और हीरा, मोती, पुखराज, पन्ना और जवाहरात तेज भाव होंगे तथा सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा आदि धातुओं के भावों में भी विशेष तेजी होगी।

(8) फलेश शनि का फल -

यदि शनिः फलपः फलहा भवेत् जनित पुष्पगणस्य दमः सदा।
हिमभयं वरतस्कर जन्तुभीः जनपदो गदराशि महाकुलः।।

फलों का स्वामी शनि हो, तो फलदार वृक्षों पर फलों एवं पुष्पों के उत्पादन में कमी हो। पर्वतीय (पहाड़ी) क्षेत्रों में कहीं प्रतिकूल वर्षा एवं असामयिक बाढ़ादि के कारण हानि हो। चोरी, ठगी, बेईमानी व भ्रष्टाचार की घटनाएँ अधिक हों। पर्वतीय प्रदेशों में कहीं असमय हिमपात (बर्फबारी) से हानि हो। प्रदूषण, श्वास एवं पेचीदा रोगों के कारण अधिकांश लोग दुःखी रहें। शहरों में जनसंख्या का भारी दबाव रहे।

(9) धनेश मंगल का फल -

धरणिजे धननायकतां गते शरदि ताम्रकरास्तुष-धान्यहा ।
सकल-देश-जनाश्चलितास्तदा नरपतिर्नर-शोकविधायकः।।

जिस वर्ष धनपति (कोशपति) मंगल हो, तो उस वर्ष थोक व्यापारिक वस्तुओं के सूचकांक (मूल्यों) में विशेष उतार-चढ़ाव हों अर्थात् व्यापार में अस्थिरता रहे। शेयर एवं वायदा बाज़ार में अस्थिरता का माहौल रहे। माघ मास में वर्षा न होने अथवा असमय (बेमौसमी) वर्षा होने से गेहूँ आदि भूसे से प्राप्त होने वाले अनाजों का कम उत्पादन होता है। सारे देश में अस्थिरता एवं अनिश्चितता का माहौल रहता है। शासन एवं प्रशासन की अधिकांश नीतियाँ साधारण प्रजा के दुःखों एवं कष्टों का कारण बनेंगी।

(10) दुर्गेश शनि का फल -

रविसुते गढपालिनी विग्रहे सकलदेशगताश्चलिता जनाः।
विविधवैरि-विशेषित-नागरा कृषिधनं शलभैर्मुषितं भुवि।।

दुर्गेश अर्थात् सेनापति शनि हो, तो अनेक देशों में आन्तरिक दंगों एवं युद्धमय वातावरण से फैली अराजकता से आतंकित लोग अपना निज (निवास) स्थान छोड़कर अन्यत्र पलायन करने के लिए विवश हो जाएंगे। प्रान्तों में विभिन्न समुदाय के लोगों में जातीय एवं साम्प्रदायिक झगड़े तथा टकराव की घटनाएं अधिक होंगी तथा वातावरण अशान्त रहे। कहीं चूहों, विषाक्त कीटाणुओं, टिड्डियों, अनावृष्टि, अतिवृष्टि आदि प्राकृतिक आपदाओं से कृषि, खड़ी फसलों को भारी हानि हो। **(विशेषकर भाद्रपद-आश्विन मासों में)।**

नोट- वर्ष के उपरोक्त **दशाधिकारियों** का फल यद्यपि सर्वत्र होता है, परन्तु **राजा का फल** विशेष रूप से कश्मीर, बांग्लादेश, अफ़गानिस्तान, चीन, तिब्बत एवं हिमालय के निकटवर्ती क्षेत्र, **मन्त्री का फल** आन्ध्र प्रदेश, मालवा, उज्जैन आदि मध्य प्रदेशों में विशेष फल होता है। वैसे सामान्यतः राजा व मन्त्री का फल देश के प्रायः सभी क्षेत्रों में होता है।

॥ द्वादश राशि फल विक्रम सम्वत् 2082 ॥

मेष-चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ।
ता. 29 मार्च से वर्षान्त तक इस राशि पर शनि-साढ़ेसति का प्रभाव रहने से भी वर्षभर व्यर्थ की भागदौड़, मानसिक परेशानियां, कोर्ट-केस तथा अचानक रोग उपस्थित होने के योग रहेंगे । वर्षारम्भ से 17 मई तक राहु द्वादशस्थ रहने से अचानक धन हानि से बचें। ता. 3 अप्रैल से 6 जून तक मगंल पुनः नीच (कर्क) राशिगत संचार करने से इस अवधि में धन-हानि तथा बनते कामों में विघ्न/बाधाएं उत्पन्न होंगी। ता. 6 जून से 27 जुलाई के मध्य मंगल-शनि के मध्य षडाष्टक सम्बन्ध, तदुपरान्त 12 सितम्बर तक सप्तम दृष्टि सम्बन्ध रहने से तनाव एवं उत्तेजना के कारण मन-अशान्त रहे। कठिनता से निर्वाह योग्य आय के साधन बनें, खर्च अधिक हो। ता. 27 अक्टूबर से 6 दिसम्बर तक मंगल अष्टमस्थ रहने से स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। **उपाय- प्रातः एवं सांयकाल श्रीहनुमान चालीसा का पाठ करके श्रीहनुमान मन्दिर में सिन्दूर-तेल-नारियल तथा मिष्ठान्न प्रसाद चढ़ाना शुभ होगा।**

वृष-इ, उ, ए, ओ, व, वि, वु, वे, वो।
वर्षारम्भ से 14 मई तक गुरु का संचार इस राशि पर रहने से मिश्रित फल प्राप्त होंगे। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से मेल-जोल, धार्मिक कार्यों में रुचि, परन्तु किसी निकटस्थ के साथ वाद-विवाद एवं दन्त, त्वचा अथवा बालों से सम्बन्धित रोग की सम्भावना रहे। ता. 29 मार्च से वर्षान्त तक शनि की तृतीय (मित्र) दृष्टि रहने से कुछ सुखद एवं मंगलकारी घटनाएं घटित होंगी। ता. 28 जनवरी से 30 मई तक राशिस्वामी शुक्र मीन (उच्च) राशिगत संचार करने से अकस्मात् धन लाभ के चाँस बनेंगे, परन्तु खर्च भी अधिक रहेंगे। ता. 14 सितम्बर से 8 अक्टूबर तक वाहनादि, घरेलू कार्यों पर खर्च अधिक होगा। ता. 9 अक्टूबर से 1 नवम्बर संघर्षपूर्ण परिस्थितियां बनेंगी। किसी दुष्ट व्यक्ति द्वारा हानि होने के संकेत मिलते हैं। **उपाय - वर्षभर काले वर्ण की गाय की सेवा करें, विशेषकर प्रत्येक मास की अमावस तथा अष्टमी वाले दिन।**

मिथुन-क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह।
इस राशि से गुरु वर्षारम्भ से 14 मई तक द्वादशस्थ रहने से भूमि, वाहनादि पर विशेष खर्च होंगे। पिता तथा स्त्री-सुख में कमी तथा व्यवसाय में भी खर्च अधिक व लाभ कम होने के संकेत हैं।ता. 14 मई से 18 अक्टूबर तक गुरु इस राशि पर संचार करने से मानसिक तनाव व घरेलू उलझनें अधिक रहेंगी। यद्यपि विद्यार्थियों को विद्या में सफलता के चाँस बनेंगे। ता. 6 जून से 22 जून तक, फिर 15 सितम्बर से २ अक्टूबर तक बुध स्वराशिगत रहने से तनाव के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहे। नवम्बर - दिसम्बर में शत्रु हानि पहुँचाने की चेष्टा करेंगे। **उपाय - 21 शनिवार सूखे नारियल को तेल का टीका लगाकर काली डोरी लपेटकर अपने सिर से 3 बार छुआकर बीज मन्त्र पढ़ते हुए शाम के समय चलते पानी में बहा देवें।**

कर्क-हि, हु, हे, हो, डा, डी, ड, डे, डो।

वर्षारम्भ से 20 जनवरी तक, पुनः 2 अप्रैल से 6 जून तक मंगल का संचार इस राशि पर नीचावस्था में रहेगा। फलस्वरूप इन समयावधियों में अनावश्यक परेशानियां, वृथा दौड़ - धूप, गुप्त चिन्ताएं, रोग, शोक, निकटस्थ बन्धुओं से विरोध एवं आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। ता. 29 मार्च के बाद शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव हट जाने से यद्यपि बिगड़े हुए कार्यों में कुछ सुधार होगा। 5 दिसम्बर से गुरु पुनः 12वें संचार करने से संघर्ष अधिक रहेगा।। **उपाय - 21 मंगलवार का व्रत रखकर प्रसाद चढ़ाना शुभ रहेगा।**

सिंह-म, मि, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे।

वर्षान्त तक शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा। जिससे बनते कार्यों में विलम्ब, रुकावटें रहेंगी, घरेलू परेशानियों के कारण मानसिक तनाव, उचाटता रहेगी। 18 मई से केतु का संचार इस राशि पर होने से मानसिक अशान्ति व चिन्ताएं भी रहेंगी। चोटादि का भी भय है, सावधान रहे। ता. 17 अक्टूबर से 16 नवम्बर तक सूर्य नीच राशि तुला में संचार करने तथा शनि की ढैय्या रहने से प्रारम्भ में गुप्त शत्रु हानि पहुँचाने की चेष्टा करेंगे, घरेलू उलझनें तथा कारोबार में रुकावटों के योग हैं, परन्तु उत्साह एवं पुरुषार्थ में वृद्धि से सभी बाधाएं दूर हो जाएंगी। **उपाय - शनि की दृष्टि तथा ढैय्या के अशुभ प्रभाव के निवारण हेतु हर शनिवार सायंकाल को शनि मन्दिर में तेल, काले तिल चढ़ाना तथा दशरथकृत `शनि स्तोत्रम्` का पाठ करना शुभ रहेगा। रविवार का व्रत रखना, सूर्य भगवान् को मंत्रपूर्वक अर्घ्य देना तथा `आदित्य हृदय स्तोत्र` का पाठ करना शुभ रहेगा।**

कन्या-टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो।

वर्षारम्भ से 18 मई तक इस राशि पर केतु का संचार रहने से उद्विग्न चित्त, भाई-बन्धुओं के सहयोग में कमी, कलह-क्लेश, स्त्री (पति) से वैमनस्य, वातादि रोगों से कष्ट रहेगा। वर्षारम्भ से 14 मई तक गुरु की भी अशुभ दृष्टि रहने से गुप्त शत्रु हानि पहुँचाने के प्रयास में रहेंगे। ता. 21 जनवरी से 2 अप्रैल तक मंगल की चतुर्थ दृष्टि होने से मानसिक तनाव, उत्तेजना एवं शरीर कष्ट का भय होगा। ता. 29 मार्च से वर्षान्त तक शनि की भी दृष्टि रहने से रोग एवं शत्रुभय रहे। ता. 28 जुलाई से 13 सितम्बर के मध्य मंगल इसी राशि पर संचार करने से चोट आदि लगने का भय है और मन को परेशान करने वाली घटनाएं होंगी। तनाव व अशान्ति बनेगी। **उपाय - प्रत्येक शनिवार शनि मन्दिर में तेल, तिल चढ़ाना और दशरथकृत `शनि-स्तोत्र` का पाठ करना शुभ रहेगा।**

तुला-रा, री, रु, रे, रो, ता, ति, तु, ते।
2 अप्रैल से 6 जून तक इस राशि पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि रहने से परिश्रम उत्साह से कार्य करने से यथेष्ट लाभ होगा, वाहनादि सावधानीपूर्वक चलाएँ। ता. 2 मार्च से 12 अप्रैल तक राशिस्वामी शुक्र वक्री रहने तथा 13 अप्रैल से 14 मई के मध्य इस राशि पर सूर्य की नीच दृष्टि रहेगी। जिससे बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। 14 मई से 19 अक्टूबर तक गुरु की शत्रु पंचम दृष्टि रहने से व्यवसाय एवं नौकरी में नित्य नई परेशानियां उपस्थित हो, शत्रु हानि पहुँचाएंगे। ता. 31 मई से 29 जून तक राशिस्वामी शुक्र की स्वगृही दृष्टि, 29 जून से 25 जुलाई तक शुक्र अष्टमस्थ (स्वराशि) होने से धन लाभ, शुभ यात्रा, प्रिय बन्धुओं से मिलाप आदि शुभ फल प्राप्त होंगे। परन्तु स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। ता. 9 अक्टूबर से 2 नवम्बर तक शुक्र कन्या (नीच) राशि में संचार करने से आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। ता. 5 दिसम्बर से गुरु की पुनः शत्रु दृष्टि रहने से घरेलू एवं व्यवसाय में नई-नई उलझनें/समस्याएँ उत्पन्न होंगी। **उपाय - 21 शुक्रवार श्रीदुर्गा-पूजन, 5 कन्या पूजन, उन्हें खीर सहित श्वेत वस्तुएं देना एवं गौशाला में शुक्रवार से शुरु करके सात दिन तक गाय को हरा चारा, गुड़ डालना शुभ होगा।**

वृश्चिक-तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू।
2 अप्रैल से 6 जून तक नीच राशिस्थ संचार करने से मानसिक तनाव, व्यर्थ की परेशानियां एवं भागदौड़, खर्च अधिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्ट भी रहेगा। यद्यपि वर्षारम्भ से 14 मई तक गुरु की इस राशि पर मित्र दृष्टि रहने से रुकावटों के बावजूद पराक्रम में वृद्धि एवं आय के साधन बढ़ेंगे। सन्तान सम्बन्धी सुखों में भी वृद्धि होगी।
6 जून से 28 जुलाई के मध्य इस राशि पर मंगल की स्वगृही चतुर्थ दृष्टि रहने से संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। खर्च भी रहेंगे। ता. 27 अक्टूबर से 7 दिसम्बर तक मंगल इस राशि पर स्वराशिगत होकर संचार करने से मान-सम्मान में वृद्धि, धन-लाभ तथा नई-नई योजनाएं बनेंगी। **उपाय - शनि मन्दिर में काले तिल एवं तेल (शनि का बीज मन्त्र पढ़ते हुए) चढ़ाना शुभ रहेगा।**

धनु-ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे।
वर्षारम्भ से 14 मई तक राशिस्वामी गुरु षष्ठ भाव में शत्रुराशिगत संचार करने से अनावश्यक खर्च, निकटस्थ बन्धुओं से कलह-क्लेश व तनाव रहेगा। बिगड़े हुए कार्यों के पूरे होने में अभी विलम्ब होगा। ता. 29 मार्च से इस राशि पर शनि की ढैय्या का भी प्रभाव रहने से व्यवसाय सम्बन्धी मानसिक तनाव, घरेलू उलझनें रहने की सम्भावनाएं रहेंगी। परन्तु 14 मई से राशिस्वामी गुरु की सप्तम दृष्टि 18 अक्टूबर तक रहने से बीच-बीच में पारिवारिक खुशी का वातावरण बनता रहेगा। गतवर्षीय कोई रुका हुआ काम बनेगा। 18 अक्टूबर से 5 दिसम्बर के मध्य राशिपति गुरु कर्क राशि (उच्चस्थ) में आने से अकस्मात् धन प्राप्ति के योग हैं, परन्तु स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। शनि की दृष्टि (ढैय्या) के कारण विघ्न-बाधाओं का भी सामना रहेगा। शत्रु हानि पहुँचाने की चेष्टाएं करेंगे।। **उपाय - लगभग सारा वर्ष बृहस्पतिवार का विधिपूर्वक व्रत रखना तथा पीले वर्ण का पुखराज धारण करना शुभ होगा।**

मकर-भो, ज, जी, खी, खू, खे, खो, ग, गी।
वर्षारम्भ से 6 जून तक मंगल की विशेष उच्च दृष्टि तथा 14 मई तक गुरु की नीच दृष्टि रहेगी। फलस्वरूप संघर्षपूर्ण परिस्थितियां रहेंगी परन्तु विशेष परिश्रम एवं उद्यम करने पर यथानुकूल लाभ प्राप्त होगा। ता. 13 अप्रैल से 13 मई तक सूर्य चतुर्थस्थ उच्चस्थ संचार करने से धन लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। ता. 14 मई से 14 जून तक सूर्य पंचमस्थ होने से, सूर्य-शनि के मध्य दृष्टि सम्बन्ध रहने से निकट भाई- बन्धुओं के साथ सम्बन्धों में तनाव, क्रोध की भावना रहेगी। व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी। ता. 16 जुलाई से 15 अगस्त तक इस राशि पर सूर्य की दृष्टि तथा 20 अगस्त से 14 सितम्बर तक शुक्र की सप्तम दृष्टि रहने से बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। ता. 18 अक्टूबर से 5 दिसम्बर तक पुनः इस राशि पर गुरु की नीच सप्तम दृष्टि रहने से यह अवधि भी विशेष संघर्षपूर्ण एवं कठिन परिस्थितियों में से गुजरेगी। केतु अष्टमस्थ रहने से भी अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। **उपाय - प्रत्येक बृहस्पतिवार गरीब लोगों को पीले मीठे चावलों सहित भोजन करवाएं।**

कुम्भ-गू, गे, गो, स, सी, सू, से, सो, द।
कुम्भ राशि पर 'शनि-साढ़ेसाती' का प्रभाव अभी वर्षभर रहेगा। यद्यपि 29 मार्च से शनि का संचार इस राशि से हट जाएगा। राशिस्वामी शनि 29 मार्च से वर्षान्त तक द्वितीयस्थ मीन राशि में संचार करेगा। 18 मई से वर्षान्त तक राहु का संचार इस राशि पर रहने से कार्यों में विलम्ब, व्यर्थ की भागदौड़ तथा एकाग्रता की कमी रहेगी। व्यवसाय में विशेष उतार-चढ़ाव होंगे, परन्तु ध्यान रहे, 14 मई से 18 अक्टूबर तक इस राशि पर गुरु की भी शुभ दृष्टि रहने से बिगड़ते हुए कार्य अचानक किसी के सहयोग से पूर्ण होंगे। ता. 16 सितम्बर से 16 अक्टूबर के मध्य सूर्य-शनि के मध्य समसप्तक योग बनने से व्यवसाय व गृह सम्बन्धी उलझनें बढ़ेंगी। दुर्घटना से चोटादि लगने का भी भय है। स्वास्थ्य कष्ट तथा परिवार में मनमुटाव रहे। **उपाय - वर्षभर प्रत्येक मास की श्रीगणेश चतुर्थी का व्रत रखकर लड्डुओं आदि का भोग लगाना शुभ रहेगा। प्रत्येक शनिवार को शिव मन्दिर में शिवलिङ्ग पर कच्ची लस्सी, बिल्वपत्र, 1 चुटकी शक्कर डालकर (ॐ नमः शिवायः) मन्त्र पढ़कर अभिषेक करें। तदुपरान्त पीपल को भी जल अर्पण करें।**

मीन-दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, चि।
मीन राशि पर शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव वर्षभर रहेगा। वर्षारम्भ से 18 मई तक इस राशि पर राहु का संचार तथा 29 मार्च से शनि का संचार भी इस राशि पर रहने से व्यवसाय एवं घरेलू स्तर पर बड़ी पेचीदा समस्याएँ उपस्थित होती रहेंगी। निकटस्थ पति/पत्नी में अथवा भाई- बन्धुओं के साथ तनाव की स्थिति रहे। अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। ता. 6 जून से 13 सितम्बर तक मंगल की दृष्टि इस राशि पर रहने से भूमि, जायदाद, सन्तानादि सुखों में वृद्धि कारक होगा। 14 मई से 18 अक्टूबर के मध्य राशिस्वामी गुरु चतुर्थ भावस्थ (मिथुन) रहने से माता-पिता से लाभ तथा उन्हें भी तरक्की के अवसर प्राप्त होंगे। ता. 18 अक्टूबर से 5 दिसम्बर तक राशिपति गुरु पंचम भाव में उच्चस्थ होकर संचार करने से उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क रहेंगे। धार्मिक कार्यों में रूचि बढ़ेगी।। **उपाय - प्रतिदिन गुरु गायत्री मन्त्र का 108 बार जप करके भगवान् सूर्य को 'ॐ घृणि सूर्याय नमः' मन्त्र पढ़कर अर्घ्य प्रदान करना। गुरु गायत्री मन्त्र - ॐ परब्रह्मणे विद्महे गुरु देवाय धीमहि तन्नो गुरु प्रचोदयात्।।**

✻ प्रमुख व्रत–त्यौहार, व्रत एवं छुट्टियाँ (2025 ई०) ✻

दिनाङ्क	वार	पर्व
30 मार्च	**रवि**	**वि. संवत् 2082 शुरु, चैत्र (वासन्त) नवरात्र आरम्भ, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण।**
31 मार्च	सोम	गौरी तृतीया (गणगौर)
2 अप्रैल	बुध	श्री (लक्ष्मी) पंचमी, हय व्रत, नाग पंचमी।
3 अप्रैल	गुरु	स्कन्द षष्ठी व्रत।
5 अप्रैल	शनि	अशोकाष्टमी, श्री दुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति।
6 अप्रैल	**रवि**	**वासन्त नवरात्र समाप्त, श्री रामनवमी।**
7 अप्रैल	**सोम**	**नवरात्र व्रत पारणा।**
8 अप्रैल	मंगल	लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव।
9 अप्रैल	बुध	श्रीविष्णु दमनोत्सव।
10 अप्रैल	गुरु	अनङ्ग त्रयोदशी, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)।
11 अप्रैल	शुक्र	शिव दमनोत्सव।
12 अप्रैल	**शनि**	**श्री हनुमान जयंती (दक्षिण), वैशाखस्नान प्रारम्भ।**
13 अप्रैल	**रवि**	**बैशाखी-पर्व (पं.)।**
18 अप्रैल	शुक्र	गुड फ्राइडे (क्रिश्चि.)
29 अप्रैल	मंगल	भगवान् परशुराम जयंती।
30 अप्रैल	**बुध**	**अक्षय-तृतीया, केदार-बद्री यात्रा प्रारम्भ।**
2 मई	**शुक्र**	**आद्यगुरु शंकराचार्य जयंती।**
3 मई	शनि	श्रीगङ्गा-जयन्ती।
5 मई	सोम	श्रीबगलामुखी जयन्ती, जानकी-जयन्ती।
11 मई	रवि	श्री नृसिंह-जयन्ती।
12 मई	सोम	श्रीकूर्म-जयन्ती, बैशाख-बुद्ध पूर्णिमा, बैशाख स्नान समाप्त।
23 मई	शुक्र	भद्रकाली एकादशी।
26 मई	सोम	शनैश्चर-जयन्ती (सायं व्या.) वटसावित्री व्रत (अमा.पक्ष)
27 मई	मंगल	ज्येष्ठ, भावुका अमावस।
29 मई	गुरु	रम्भा तृतीया व्रत।
1 जून	रवि	अरण्य षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा।
3 जून	मंगल	श्री दुर्गाष्टमी, धूमावती जयन्ती, मेला क्षीर-भवानी (कश्मीर)।
5 जून	**गुरु**	**श्री गङ्गा-दशहरा पर्व।**
6 जून	**शुक्र**	**निर्जला एकादशी व्रत (स्मार्त्त)।**

✻ प्रमुख व्रत–त्यौहार, व्रत एवं छुट्टियाँ (2025 ई०) ✻

दिनाङ्क	वार	पर्व
7 जून	शनि	निर्जला एकादशी व्रत (वैष्ण.)।
10 जून	मंगल	वट्सावित्री व्रत (पूर्णिमा)।
11 जून	बुध	ज्येष्ट पूर्णिमा, सन्त कबीर जयन्ती।
21 जून	शनि	सायन दक्षिणायन शुरु।
26 जून	गुरु	गुप्त नवरात्र प्रारम्भ।
27 जून	शुक्र	श्रीजगन्नाथ रथ-यात्रा-पुरी।
30 जून	सोम	कुमार-षष्ठी।
1 जुलाई	मंगल	विवस्वत सप्तमी।
4 जुलाई	**शुक्र**	**गुप्त नवरात्र समाप्त।**
6 जुलाई	**रवि**	**हरिशयनी एकादशी व्रत, श्री विष्णुशयनोत्सव, चतुर्मास्यि व्रत, नियम शुरु।**
10 जुलाई	गुरु	श्रीशिवशयनोत्सव, कोकिला व्रत, गुरुपूर्णिमा, व्यास पूजा।
14 जुलाई	**सोम**	**श्रावण सोमवार व्रत आरम्भ।**
23 जुलाई	**बुध**	**श्रावण-शिवरात्रि।**
24 जुलाई	**गुरु**	**हरियाली अमावस्या।**
25 जुलाई	शुक्र	मे.चिन्तपूर्णी-हि. प्र. आरम्भ।
27 जुलाई	रवि	मधुश्रवा-हरियाली तीज।
29 जुलाई	मंगल	नाग-पंचमी।
30 जुलाई	बुध	श्रीकल्कि-जयन्ती।
31 जुलाई	गुरु	गो. तुलसीदास जयन्ती।
1 अगस्त	**शुक्र**	**श्रीदुर्गाष्टमी। मे.चिन्तपूर्णी-हि.प्र. समाप्त।**
9 अगस्त	**शनि**	ऋक-उपाकर्म, यजु-अथर्ववेदि उपाकर्म, श्रावण पूर्णिमा,**रक्षाबन्धन (राखी), श्रीअमरनाथ यात्रा समाप्त।**
12 अगस्त	**मंगल**	**कज्जली तृतीया, अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी, बहुला चतुर्थी।**
14 अगस्त	गुरु	चन्दन षष्ठी व्रत।

✻ प्रमुख व्रत-त्यौहार, व्रत एवं छुट्टियाँ (2025 ई०) ✻

दिनाङ्क	वार	पर्व
15 अगस्त	**शुक्र**	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत, स्वतन्त्रता दिवस।**
16 अगस्त	**शनि**	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव)।**
17 अगस्त	रवि	गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव, श्रीगुग्गा नवमी।
20 अगस्त	बुध	वत्स द्वादशी (पूजा)
22 अगस्त	शुक्र	पिठोरी अमावस्या।
23 अगस्त	शनि	कुशाग्रहणी अमावस्या।
26 अगस्त	मंगल	सामवेदि उपाकर्म, हरितालिका तृतीया, कलंक चतुर्थी।
27 अगस्त	बुध	सिद्धि विनायक व्रत।
28 अगस्त	गुरु	ऋषि पंचमी व्रत।
29 अगस्त	शुक्र	सूर्य षष्ठी व्रत।
30 अगस्त	शनि	मुक्ताभरण-सन्तान सप्तमी।
31 अगस्त	रवि	श्रीराधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रत शुरु, दुर्वाष्टमी व्रत।
1 सितम्बर	सोम	श्री चन्दन नवमी (उदासीन)।
4 सितम्बर	गुरु	श्रीवामन -जयन्ती।
6 सितम्बर	शनि	अनन्त चतुर्दशी व्रत, मेला सोढल, जालंधर (पं.)
7 सितम्बर	रवि	प्रोष्ठपदी-पूर्णिमा श्राद्ध, महालय प्रारम्भ,खग्रास चन्द्रग्रहण।
8 सितम्बर	सोम	पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ।
14 सितम्बर	रवि	श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त।
21 सितम्बर	रवि	महालय/श्राद्ध समाप्त, सर्वपितृ श्राद्ध।
22 सितम्बर	**सोम**	**शरद् नवरात्र प्रारम्भ।**
26 सितम्बर	शुक्र	उपाङ्ग ललिता व्रत।
29 सितम्बर	सोम	सरस्वती आवाहन।
30 सितम्बर	मंगल	सरस्वती पूजन, श्री दुर्गाष्टमी।
1 अक्टूबर	**बुध**	**महानवमी (व्रत, पूजा, बलिदान हेतु), सरस्वती बलिदान, नवरात्र समाप्त।**
2 अक्टूबर	**गुरु**	**महात्मा गाँधी जयन्ती, विजयादशमी (दशहरा), सरस्वती-विसर्जन, नवरात्र व्रत पारणा।**
3 अक्टूबर	**शुक्र**	**भरत-मिलाप।**
6 अक्टूबर	सोम	शरद् पूर्णिमा व्रत, कोजागर व्रत।
7 अक्टूबर	मंगल	महर्षि श्रीवाल्मीकि जयंती, कार्तिकस्नान प्रारम्भ।
10 अक्टूबर	शुक्र	व्रत करवा-चौथ।
13 अक्टूबर	सोम	अहोई अष्टमी व्रत।

✻ प्रमुख व्रत–त्यौहार, व्रत एवं छुट्टियाँ (2025 ई०) ✻

दिनाङ्क	वार	पर्व
17 अक्टूबर	शुक्र	गोवत्स द्वादशी।
18 अक्टूबर	**शनि**	**धन त्रयोदशी, यम प्रीत्यर्थं दीपदान।**
19 अक्टूबर	रवि	श्रीहनुमान जयंती (उ.भारत)।
20 अक्टूबर	सोम	नरक-चतुर्दशी।
21 अक्टूबर	**मंगल**	**दीपावली, महालक्ष्मी पूजन, कार्तिक अमावस।**
22 अक्टूबर	बुध	अन्नकूट-गोवर्धन पूजा, बलि-पूजा, गोक्रीडा, विश्वकर्मा दिवस (पं.)
23 अक्टूबर	**गुरु**	**भाईदूज, यमद्वितीया, श्रीविश्वकर्मा-पूजन।**
27 अक्टूबर	**सोम**	**सूर्य षष्ठी पर्व (बिहार)।**
30 अक्टूबर	गुरु	गोपाष्टमी।
31 अक्टूबर	शुक्र	अक्षय-कूष्माण्ड नवमी।
1 नवम्बर	शनि	भीष्मपंचक प्रारम्भ, हरिप्रबोधिनी एका. (स्मा.)
2 नवम्बर	**रवि**	**हरिप्रबोधोत्सव, तुलसी विवाह, चातुर्मास्य व्रतादि समा.।**
3 नवम्बर	**सोम**	**वैकुण्ठ चतुर्दशी।**
5 नवम्बर	बुध	त्रिपुरोत्सव, कार्तिक पूर्णिमा, भीष्मपंचक समाप्त, श्री गुरु-नानक जयन्ती, कार्तिकस्नान समाप्त।
6 नवम्बर	गुरु	पद्मक योग।
12 नवम्बर	बुध	श्रीकालभैरवाष्टमी।
26 नवम्बर	बुध	स्कन्द-गुह षष्ठी, चम्पा-षष्ठी (महाराष्ट्र)।
27 नवम्बर	गुरु	मित्र (विष्णु) सप्तमी।
1 दिसम्बर	**सोम**	**मोक्षदा एकादशी व्रत, श्री गीता-जयन्ती।**
4 दिसम्बर	गुरु	श्री दत्तात्रेय जयन्ती।
12 दिसम्बर	शुक्र	रूक्मणी अष्टमी।
21 दिसम्बर	रवि	सूर्य उत्तरायण में।
25 दिसम्बर	गुरु	**श्री ओंकारानन्द जयन्ती। ओंकारानन्द महोतस्व आरम्भ 25 से 31 दिसम्बर तक।** तुलसी पूजन महोत्सव।
27 दिसम्बर	शनि	मार्तण्ड-सप्तमी, श्रीगुरु गोविन्द सिंह जयंती।
30 दिसम्बर	मंगल	पुत्रदा एका. (स्मार्त)।

✻ प्रमुख व्रत–त्यौहार, व्रत एवं छुट्टियाँ (2026 ई०) ✻

दिनाङ्क	वार	पर्व
		जनवरी 2026
3 जनवरी	शनि	पौष पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ।
6 जनवरी	**मंगल**	**श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी।**
13 जनवरी	**मंगल**	**लोहड़ी पर्व।**
14 जनवरी	**बुध**	**मकर (माघ) संक्रान्ति।**
18 जनवरी	**रवि**	**माघ (मौनी) अमावस।**
19 जनवरी	**सोम**	**गुप्त नवरात्र प्रारम्भ।**
21 जनवरी	बुध	गौरी तृतीया (गोंतरी)
22 जनवरी	गुरु	तिल-कुन्द चतुर्थी।
23 जनवरी	शुक्र	वसन्त (श्री) पंचमी, लक्ष्मी-सरस्वती पूजन।
25 जनवरी	रवि	आरोग्य-पुत्र सप्तमी, रथसप्तमी (पूर्वारुणोदाय वाली)
26 जनवरी	सोम	भीष्माष्टमी, गणतन्त्र दिवस (77वाँ)।
27 जनवरी	**मंगल**	**गुप्त नवरात्र समाप्त।**
29 जनवरी	गुरु	भीष्म-द्वादशी, तिल 12।
1 फरवरी	रवि	माघ पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त, श्रीगुरु रविदास जयन्ती।
12 फरवरी	गुरु	स्वा.दयानन्द सरस्वती जयन्ती।
15 फरवरी	**रवि**	**श्रीमहाशिवरात्रि व्रत।**
24 फरवरी	**मंगल**	**होलाष्टक प्रारम्भ, अन्नपूर्णा-अष्टमी।**
28 फरवरी	शनि	गोविन्द-द्वादशी।
2 मार्च	सोम	होलिका-दहन (भद्रा-पुच्छे)
3 मार्च	**मंगल**	**ग्रस्तोदय खग्रास चंद्रग्रहण, होलाष्टक समाप्त, होली-पर्व।**
4 मार्च	**बुध**	**वसन्तोत्सव, होला मेला (श्रीआनन्दपुर व पांओटा साहिब)**
8 मार्च	रवि	श्रीरंग-पंचमी।
11 मार्च	बुध	शीतलाष्टमी व्रत।
17 मार्च	मंगल	वारुणी पर्व, मेला पिहोवातीर्थ (हरि.)।
19 मार्च	गुरु	**वि.संवत् 2082 पूर्ण, वि.संवत् 2083 आरम्भ, चैत्र (वासन्त) नवरात्र प्रारम्भ।**

॥ संदिग्ध प्रमुख व्रत–पर्वों का शास्त्रीय निर्णय वि.सं. 2082॥

(1) निर्जला एकादशी व्रत (ज्येष्ठ शुक्ल)-(6-7 जून)

द्वादशी तिथि की वृद्धि हो जाने पर स्मार्त्त (गृहस्थी) द्वादशीयुता एकादशी वाले दिन और वैष्णव सम्प्रदाय वाले षष्ठिघट्यात्मक (६० घड़ी) द्वादशी के दिन व्रत करते हैं दशमी तिथि द्वारा अरुणोदय के वेध और अवेध-दोनों स्थितियों में यह नियम समान रूप से चरितार्थ होगा।

यहाँ माधव मतानुसार स्मार्तों का व्रत द्वादशीयुता एकादशी वाले दिन तथा वैष्णवों का व्रत षष्ठिघट्यात्मक (60 घड़ी) द्वादशी वाले दिन होना चाहिए। जबकि हेमाद्रि, पद्मपुराण, नारद के मतानुसार स्मार्त्तों (गृहस्थियों) और वैष्णव (संन्यासी, दीक्षित, विधवा आदि) सम्प्रदाय वालों-दोनों का व्रत षष्ठिघट्यात्म द्वादशी के दिन होना चाहिए। **सर्वत्रैकादशी कार्या द्वादशीमिश्रिताः नरैः** (पद्मपुराण)। मार्कण्डेय के वचनानुसार भी सन्देह होने पर द्वादशी में ही उपवास करें।- **'संधिग्धेषु च वाक्येषु द्वादशीं समुपोषयेत्।।'** तथा **'विवादेषु च सर्वेषु द्वादश्यां समुपोषणम् ।।' पारणं च त्रयोदश्यामाज्ञेयम्।** इस वर्ष ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी की वृद्धि हुई है। यह 7 जून, 2025 ई. को अहोरात्रव्यापिनी है। **अतः उपरोक्त बहुसम्मत् माधवमतानुसार इस वर्ष निर्जला एकादशी स्मार्त्तों (गृहस्थियों) हेतु 6 जून, शुक्रवार को तथा वैष्णव सम्प्रदाय हेतु 7 जून, शनिवार, 2025 ई. को लिखी गई है।**

******

(2) श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी (भाद्रपद कृष्ण 8) (15-16 अगस्त, 2025 ई.)

प्रस्तुत वर्ष 15 अगस्त, 2025 ई. शुक्रवार को सप्तमी तिथि रात्रि 23:50 तक है। तदुपरान्त अर्धरात्रि में अष्टमी तिथि व्याप्त है। अतएव गृहस्थी आदि स्मार्त लोगों को व्रत, पूजन, चन्द्रमा को अर्घ्य देना, झूला-झुलाना आदि के यही दिन प्रशस्त होगा। **16 अगस्त 2025 ई. को अष्टमी तिथि रात्रि 21:35 तक ही है अर्थात् अर्धरात्रि के समय नवमी तिथि व्याप्त है।** प्रातः 11:44 के बाद वृष राशिस्थ चन्द्रमा रहेगा। मथुरा, वृन्दावन सहित उ.प्र, बिहार, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों में उदयकालिक अष्टमी (नवमीयुता) के दिन ही श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाते है एवं पहले दिन अर्धरात्रि व्यापिनी अष्टमी को सप्तमीविद्धा मानकर त्याग देते है।

******

(3) कलंक-चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषेध) (26-27 अगस्त)

इस वर्ष (वि. संवत् 2082) '**सिद्धि विनायक व्रत**' मध्याह्न-व्यापिनी 27 **अगस्त, बुधवार को है।** परन्तु चतुर्थी तिथि 26 अगस्त, मंगलवार की दोपहर $13^{\text{घं.}}$-$55^{\text{मिं.}}$ से प्रारम्भ हो रही है तथा इसदिन चतुर्थी के समय ही रात्रि $20^{\text{घं.}}$-$34^{\text{मिं.}}$ पर चन्द्रास्त होगा। जबकि 27 अगस्त को चतुर्थी तिथि दोपहर बाद $15^{\text{घं.}}$-$45^{\text{मिं.}}$ तक ही है तथा इस दिन चन्द्रास्त $21^{\text{घं.}}$-$00^{\text{मिं.}}$ पर होगा, जबकि उस समय पंचमी तिथि व्याप्त होगी। **इस प्रकार उत्तरी भारत में तो लोग शास्त्रनिर्देशानुसार 26 अगस्त, मंगलवार को ही चन्द्रदर्शन का निषेध मानेंगे।** परन्तु महाराष्ट्र आदि कुछ राज्यों में 27 अगस्त, बुधवार को चन्द्रदर्शन निषेध का विचार करेंगे तथा कलंक चतुर्थी, पत्थर चौथ आदि इसी दिन मनाई जायेगी।

******

(4) करक चतुर्थी (करवा-चौथ व्रत) (10 अक्टूबर, शुक्रवार)

प्रस्तुतवर्ष 9 अक्टूबर, गुरुवार को तृतीया तिथि रात्रि 22:55 तक व्याप्त रहेगी। चन्द्रोदय लगभग सारे भारत में तृतीया तिथिकालीन 19घं. 15 मिं. से 20घं.-00मिं. तक हो जाएगा। परन्तु 10 अक्टूबर, शुक्रवार को चतुर्थी तिथि रात्रि 19घं. 39 मिं. तक ही व्याप्त रहेगी। सम्पूर्ण भारत में इसदिन चन्द्रोदय (सुदूर पूर्वी-भारत को छोड़कर) चतुर्थी तिथि की समाप्ति 19घं.-39मि. के बाद ही होगा। दोनों दिन चतुर्थी तिथि चन्द्रोदय का स्पर्श नहीं कर रही है। (अर्थात् चन्द्रोदय के समय चतुर्थी तिथि नहीं होगी।) अतः **शास्त्रीय-निर्णयानुसार करक-चतुर्थी व्रत (करवा चौथ) दूसरे दिन ही (अर्थात् 10 अक्टूबर, शुक्रवार) किया जाएगा।**

******

(5) कार्तिक शुक्ल (हरिप्रबोधिनी) एकादशी व्रत (1/2 नवम्बर, 2025)

एकादशी द्वादशी च रात्रिशेषे त्रयोदशी।
उपवासं न कुर्वीत पुत्रपौत्रसमन्वितः॥

इस वर्ष एकादशी-द्वादशी-त्रयोदशी-इन तिथियों का एकत्र (एक ही वार में संगम) होने के कारण स्मार्त्तों (गृहस्थियों) का 'देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत' विशेष नियमानुसार 1 नवम्बर, 2025 ई. को सूर्योदय-वेधवती दशमी के दिन शनिवार को लिखा गया है, जो सर्वथा शास्त्रीय है, जबकि वैष्णवों का व्रत 2 नवम्बर, रविवार को होगा।

(6) वैकुण्ठ चतुर्दशी (3/4 नवम्बर, 2025)

कार्तिक शुक्ल-चतुर्दशी को "वैकुण्ठ-चतुर्दशी" मनाई जाती है। कुछ श्रद्धालुजन इस दिन उपवास रखकर रात्रि में जागरण करके भगवान विष्णु की पूजा करते हैं। ये लोग निशीथव्यापिनी चतुर्दशी स्वीकार करते है तथा कुछ अन्य श्रद्धालु जन पहले दिन उपवास करके अरुणोदय-व्यापिनी चतुर्दशी में शिवपूजा करके बाद में अरुणोदय के समय पूजा, फिर पारण करते है। इस वर्ष यह चतुर्दशी 3/4 नवम्बर, 2025 ई. को अरुणोदय व्यापिनी है, अतः यह पर्व इसी दिन होगा।

(7) होलिका दहन का समय (2 मार्च, सोमवार, 2026 ई.)

इस वर्ष (वि. संवत् 2082 में) फाल्गुन पूर्णिमा केवल 2 मार्च, 2026 ई. को ही प्रदोषव्यापिनी है। ता. 3 मार्च को तो वह प्रदोष को बिल्कुल स्पर्श नहीं कर रही। ता. **2 मार्च, 2026 ई. को प्रदोषकाल जोकि लगभग 18:22 से 20:53 तक रहेगा**, भद्रा से व्याप्त है और भद्रा निशीथ (अर्द्धरात्रि) से कहीं आगे जाकर अगले दिन प्रातः 5:32 (29:32) तक जाकर समाप्त हो रही है। अतः शास्त्र निर्देशानुसार इस वर्ष होलिकादहन 2 मार्च, 2026 ई. को भद्रा के मुख को त्यागकर भद्रा में ही करना होगा। इसदिन भद्रा का मुख 26:38 (मार्च 3, 2026 के प्रातः 2:35) से 28:34 (मार्च 3, 2026 के प्रातः 4:34) तक है। इस प्रकार स्पष्ट है, इसदिन भद्रामुख प्रदोष से बहुत दूर अर्धरात्रि के भी बाद विद्यमान् है। **अतः 2 मार्च, 2026 ई. को भद्रामुख/पुच्छ का विचार न करके भद्रा में ही प्रदोषकाल में होलिका-दहन' करना शास्त्रसम्मत ही होगा।**

(8) वासन्त (चैत्र) नवरात्रारम्भ (वि.सं. 2083 प्रारम्भ) (19 मार्च, 2026 ई., गुरुवार)

वि. संवत् 2083 में चैत्र (वासन्त) नवरात्रों का प्रारम्भ 19 मार्च, 2026 ई. को ही हो जाएगा, क्योंकि यहाँ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि का क्षय हुआ है। प्रतिपदा के क्षय की स्थिति में नव चान्द्र विक्रमी संवत् एवं नवरात्र-आरम्भ अमावस-युक्त प्रतिपदा से ही किए जाएंगे। इसदिन प्रातः 6 बजकर 53 मिनट तक अमावस, तदुपरान्त चैत्र नवरात्रों का प्रारम्भ होगा। **'निर्णयसिन्धुः' का वचन है-" (नवरात्रारम्भ) परदिने प्रतिपदोऽत्यन्ताऽसत्त्वे तु दर्शयुतापि पूर्वैव (प्रतिपद्) ग्राह्या॥"**

******

✻ ग्रहण विवरण विक्रम सम्वत् 2082 ✻

(1) खग्रास चन्द्रग्रहण (7 सितम्बर, 2025 ई.)

यह ग्रहण भाद्रपद पूर्णिमा को 7 एवं 8 सितम्बर 2025 ई की मध्यगत रात्रि को सम्पूर्ण भारत में खग्रास रूप में दिखाई देगा।

इस ग्रहण का स्पर्श-मोक्षादि काल भा.स्टै.टा. में इस प्रकार हैं-

	घं.	मिं.	
ग्रहण स्पर्श	**21**	**57**	**7/8 सितम्बर, 2025 ई. की मध्यगत रात्रि (भा.स्टैं.टा. अनुसार)**
ग्रहण प्रारम्भ	**23**	**01**	
ग्रहण मध्य	**23**	**42**	
खग्रास समाप्त	**24**	**23**	
ग्रहण समाप्त	**25**	**26**	

ग्रहण की अवधि = $3^{\text{घं.}}$-$29^{\text{मि.}}$, ग्रासमान = 1.362 प्रतिशत

चन्द्रमालिन्यारम्भ = $20^{\text{घं.}}$-$58^{\text{मि.}}$ / चन्द्र क्रान्ति निर्मल = $26^{\text{घं.}}$-$25^{\text{मि.}}$

भारत में जब 7 सितम्बर 2025 ई. की रात्रि 9 बजकर 57 मिनट पर चन्द्रग्रहण शुरु होगा अथवा $20^{\text{घं.}}$-$58^{\text{मि.}}$ पर चन्द्र मालिन्य आरम्भ होगा। उस समय से बहुत पहले ही सम्पूर्ण भारत में चन्द्र-उदय हो चुका होगा। भारत के सभी नगरों में 7 सितम्बर को सायं 6 बजे से 7 बजे तक चन्द्रोदय हो जायेगा तथा यह खग्रास चन्द्रग्रहण 7 सितम्बर की रात्रि 21:57 से आरम्भ होकर रात्रि 25:26 (अर्थात् 1 बजकर 26 मिनट) पर समाप्त हो जायेगा। भारत के सभी नगरों में इसका आरम्भ, मध्य तथा मोक्ष रूप देखा जा सकेगा।

ग्रहण का सूतक – इस ग्रहण का सूतक **7 सितम्बर 2025 ई. को दोपहर $12^{\text{घं.}}$-$57^{\text{मि}}$** (भा.स्टैं.टा.) प्रारम्भ हो जायेगा।

✻✻✻✻✻

(2) खग्रास (ग्रस्तोदय) चन्द्रग्रहण (3 मार्च, 2026 ई., मंगलवार)

यह खग्रास चन्द्रग्रहण फाल्गुनी पूर्णिमा मंगलवार को 3 मार्च, 2026 ई. के दिन सम्पूर्ण भारत में ग्रस्तोदय रूप में दिखाई देगा। अर्थात् भारत के किसी भी नगर में जब चन्द्रोदय होगा, उससे बहुत ही पहले यह खग्रास चन्द्रग्रहण आरम्भ हो चुका होगा। **भारत के किसी भी क्षेत्र में इस खग्रास चन्द्रग्रहण का आरम्भ, खग्रास आरम्भ तथा ग्रहण-मध्य (परमग्रास) नहीं देखा जा सकेगा।**

भारत के केवल सुदूर पूर्वी राज्यों (बंगाल के उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों, नागालैण्ड, मिज़ोरम, असम, मणिपुर, अरु.प्रदेश आदि) में इस ग्रहण की खग्रास समाप्ति तथा ग्रहण समाप्ति देखी जा सकती है। शेष भारत में तो जब चन्द्रोदय होगा, तब तक खग्रास समाप्त हो चुका होगा तथा केवल ग्रहण समाप्ति ही दृष्टिगोचर होगी। भूगोल पर इस ग्रहण के स्पर्शादि काल (भा.स्टै.टा.) इस प्रकार है-

	घं.	मिं.	
ग्रहण (स्पर्श) प्रारम्भ	**15**	**20**	**(भा.स्टैं.टा.) 3 मार्च, 2026 ई.**
खग्रास प्रारम्भ	**16**	**34**	
ग्रहण मध्य (परमग्रास)	**17**	**04**	
खग्रास समाप्त	**17**	**33**	
ग्रहण समाप्त (मोक्ष)	**18**	**47**	

[चन्द्रमालिन्य आरम्भ = 14घं.:14मि. तथा चन्द्र क्रान्ति निर्मल = 19घं.:53मि. पर्वकाल = 3घं.:27मि. खग्रासकाल = 59 मिनट]

भारत में स्थानीय चन्द्रोदय से ही इस ग्रहण का आरम्भ माना जायेगा क्योंकि भारत में मुख्यतः चन्द्रोदय के बाद इस ग्रहण की समाप्ति ही देखी जा सकेगी।

ग्रहण का सूतक – इस ग्रहण का सूतक 3 मार्च 2026 ई. को प्रातः 6:20 से ही आरम्भ हो जायेगा। शुद्ध (ग्रहण-मोक्ष) चन्द्र-बिम्ब के दर्शन एवं तर्पण करने के बाद ही सभी धार्मिक कार्य करने चाहिये।

✻ सामान्यतः ग्रहण में क्या करें एवं क्या न करें ✻

क्या करें - ग्रहण के सूतक एवं ग्रहणकाल में स्नान, दान, जप-पाठ, मन्त्र जप, तीर्थस्नान, ध्यान करना शुभ होता हैं। धार्मिक, आस्थावान लोगों को ग्रहण पूर्व ही अपनी राशि अनुसार अथवा ब्राह्मण परामर्श अनुसार दानयोग्य वस्तुओं का संग्रह करके संकल्प कर लेना चाहिये तथा ग्रहण मोक्ष के बाद पुनः स्नान करके संकल्पपूर्वक ब्राह्मण को दान देना चाहिये।

क्या न करें - ग्रहण के सूतक एवं ग्रहणकाल में मूर्ति स्पर्श, अनावश्यक खानपान, मैथुन, निद्रा, तेल लगाना वर्जित है। वृथा-आलाप, नाखुन, बाल काटना आदि से परहेज करना चाहिये। वृद्ध, रोगी, बालक एवं गर्भवती स्त्रियों को यथानुकूल भोजन या दवाई आदि लेने में दोष नहीं।

ग्रहण सूतक से पहले ही दूध, दहीं, आचार, चटनी, मुरब्बा में कुशातृण रख देना श्रेयस्कर होता है। इससे ये दूषित नहीं होते। सूखे खाद्य पदार्थों में कुशा डालने की आवश्यकता नहीं।

✻✻✻✻✻

✻ सङ्कटनाशनगणेशस्तोत्रम् ✻

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुःकामार्थसिद्धये।। १।।

प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्।। २।।

लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टकम्।। ३।।

नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्।। ४।।

द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं प्रभो।। ५।।

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम्।। ६।।

जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः।। ७।।

अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्।
तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः।। ८।।

इति श्रीनारदपुराणे सङ्कटनाशनगणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

❋ महिषासुरमर्दिनी–स्तोत्रम् ❋

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दिनुते।
गिरिवर-विन्ध्य-शिरोधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूरिनुते।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ १॥

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते।
त्रिभुवनपोषिणि शङ्करतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते।
दनुजनिरोषिणि दितिसुतरोषिणि दुर्मदशोषिणि सिन्धुसुते।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ २॥

अयि शतखण्ड-विखण्डितरुण्ड-वितुण्डितशुण्ड-गजाधिपते।
रिपुगजगण्ड-विदारणचण्ड-पराक्रमशुण्ड-मृगाधिपते।
निजभुजदण्ड-निपातितचण्ड-विपातितमुण्ड-भटाधिपते।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ ३॥

धनुरनुसङ्ग-रणक्षणसङ्ग-परिस्फुरदङ्ग-नटत्कटके।
कनक-पिशङ्ग-पृषत्कनिषङ्ग-रसद्भटशृङ्ग-हताबटुके।
कृतचतुरङ्ग-बलक्षितिरङ्ग-घटद्बहुरङ्ग-रटद्बटुके।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ ४॥

जय जय जप्यजये जयशब्द-परस्तुति-तत्पर-विश्वनुते।
झणझण-झिञ्झिमि-झिङ्कृत-नूपुर-सिञ्जित-मोहित-भूतपते।
नटित-नटार्धनटीनटनायक-नाटितनाट्य-सुगानरते।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ ५॥

अयि सुमनस्सुमनस्सुमनस्सुमनस्सुमनोहर-कान्तियुते।
श्रितरजनी-रजनी-रजनी-रजनी-रजनीकर-वक्त्रवृते।
सुनयन-विभ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमराधिपते।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ ६॥

सहित-महाहव-मल्ल-मतल्लिक-वल्लित-रल्लिक-मल्लरते।
विरचित-वल्लिक-पल्लिक-मल्लिक-झिल्लिक-भिल्लिक-वर्गवृते।
सितकृतफुल्लि-समुल्लसितारुण-तल्लजपल्लव-सल्ललिते।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ ७॥

कमल-दलामल-कोमल-कान्ति-कला-कलितामल-भाललते।
सकल-विलास-कला-निलयक्रम-केलि-चलत्कलहंस-कुले।
अलिकुल-सङ्कुल-कुवलय-मण्डल-मौलिमिलद्बकुलालि-कुले।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ ८॥

❋ श्री शिवमहिम्नः स्तोत्रम् ❋

गजाननं भूतगणाधिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्॥

॥ श्री पुष्पदन्त उवाच ॥

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथाऽवाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः॥ 1॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः॥ 2॥

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता॥ 3॥

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः॥ 4॥

किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः॥ 5॥

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे॥ 6॥

त्रयी साङ्ख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिल नानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥ 7॥

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भ्रूप्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति॥ 8॥

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याऽध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता॥ 9॥

तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरिञ्चिर्हरिरधः
परिच्छेतुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति॥ 10॥

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।
शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम्॥ 11॥

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्यापातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः॥ 12॥

यदृद्धिं सूत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन्वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः॥ 13॥

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्याऽऽसीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः।

स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः॥ 14॥
असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः॥ 15॥
मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम्।
मुहुर्द्यौर्दौःस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता॥ 16॥
वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते।
जगद् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः॥ 17॥
रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः॥ 18॥
हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषः
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्॥ 19॥
क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः॥ 20॥
क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धा विधुरमभिचाराय हि मखाः॥ 21॥

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः॥ 22॥
स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः॥ 23॥
श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि॥ 24॥
मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमविधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान्॥ 25॥
त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि॥ 26॥
त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम्॥ 27॥
भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते॥ 28॥
नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।

नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः।। 29।।

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः।। 30।।

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम्।। 31।।

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।। 32।।

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
र्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य।
सकलगणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार।। 33।।

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान्कीर्तिमांश्च।। 34।।

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः।
महिम्नःस्तव पाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्।। 35।।

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम्।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम्।। 36।।

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्।। 37।।

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुशशिधरमौलेर्देवदेवस्य दासः।

स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः॥ 38॥
सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम्॥ 39॥
श्री पुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः॥ 40॥
इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः॥ 41॥
यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥ 42॥

॥ इति श्री पुष्पदन्त विरचितं श्री शिवमहिम्नः स्तोत्रं समाप्तम्॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

* सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम् *

शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत्॥ १॥

न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम्॥ २॥

कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम्॥ ३॥

गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठमात्रेण संसिद्ध्येत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्॥ ४॥

अथ मन्त्रः

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः
ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल
ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।। ५।।

इतिमन्त्रः।।

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि।। ६।।

नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि।
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे।। ७।।

ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका।
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते।। ८।।

चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी।
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि।। ९।।

धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु।। १०।।

हुं हु हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः।। ११।।

अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं धिजाग्रं।
धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा।। १२।।

पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा।
सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे।। १३।।

इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहितवे।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति।। १४।।

यस्तु कुञ्जिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत्।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा।। १५।।

इति श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

❋ लिङ्गाष्टकम् ❋

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गं निर्मलभासितशोभितलिङ्गम्।
जन्मजदु:खविनाशकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥1॥
देवमुनिप्रवरार्चितलिङ्गं कामदहं करुणाकरलिङ्गम्।
रावणदर्पविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥2॥
सर्वसुगन्धिसुलेपितलिङ्गं बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गम्।
सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥3॥
कनकमहामणिभूषितलिङ्गं फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गम्।
दक्षसुयज्ञविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥4॥
कुङ्कुमचन्दनलेपितलिङ्गं पङ्कजहारसुशोभितलिङ्गम्।
सञ्चितपापविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥5॥
देवगणार्चितसेवितलिङ्गं भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम्।
दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥6॥
अष्टदलोपरि वेष्टितलिङ्गं सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम्।
अष्टदरिद्रविनाशितलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥7॥
सुरगुरुसुरवरपूजितलिङ्गं सुरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गम्।
परात्परं परमात्मकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥8॥

लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

॥ इति लिङ्गाष्टकम् ॥

॥शिवमानसपूजा श्लोकौ॥

किं वानेन धनेन वाजिकरिभि: प्राप्तेन राज्येन किं
किं वा पुत्रकलत्रमित्रपशुभिर्देहेन गेहेन किम्।
ज्ञात्वैतत् क्षणभङ्गुरं सपदि रे त्याज्यं मनो दूरतः
स्वात्मार्थं गुरुवाक्यतो भज भज श्रीपार्वतीवल्लभम्॥
आयुर्नश्यति पश्यतां प्रतिदिनं याति क्षयं यौवनं
प्रत्यायान्ति गताः पुनर्न दिवसाः कालो जगद् भक्षकः।
लक्ष्मीस्तोयतरङ्गभंगचपला विद्युच्चलं जीवितं
तस्मान्मां शरणागतं शरणद त्वं रक्ष रक्षाधुना॥

❋ श्री शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् ❋

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय ॥1॥

मन्दाकिनिसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय ॥2॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ॥3॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय ॥4॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नमः शिवाय ॥5॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं समाप्तम्॥

❋ द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्मरणम् ❋

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वरम्॥1॥

परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने॥2॥

वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे।
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये॥3॥

एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥4॥

एतेशां दर्शनादेव पातकं नैव तिष्ठति।
कर्मक्षयो भवेत्तस्य यस्य तुष्टो महेश्वराः॥

॥ इति द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्मरणं सम्पूर्णम्॥

❃ रुद्राष्टकम् ❃

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम्।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्॥१॥

निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयं गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम्।
करालं महाकाल कालं कृपालं गुणागार संसारपारं नतोऽहम्॥२॥

तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं मनोभूत कोटिप्रभा श्री शरीरम्।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गङ्गा लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा ॥३॥

चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम्।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥४॥

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम्।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्॥५॥

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।
चिदानन्द संदोह मोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥६॥

न यावत् उमानाथ पादारविन्दं भजन्तीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्॥७॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम्।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो॥८॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥

॥ इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतं श्रीरुद्राष्टकं संपूर्णम्॥

✻ शिवताण्डवस्तोत्रम् ✻

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्॥1॥
जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्द्धनि।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम॥2॥
धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुरस्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि॥3॥
जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभाकदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि॥4॥
सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखरप्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः॥5॥
ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभानिपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम्।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः॥6॥
करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वलद्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रकप्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम॥7॥
नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुरत्कुहूनिशीथिनीतमःप्रबन्धबद्धकन्धरः।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः॥8॥
प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभावलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम्।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे॥9॥
अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरीरसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम्।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे॥10॥
जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वसद्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट्।
धिमिद्धिमिद्धिमिद्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गलध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः॥11॥
दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजोर्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम्॥12॥
कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन्।
विलोललोललोचनो ललामभाललग्नकः शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम्॥13॥
इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम्।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम्॥14॥
पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः॥15॥

इति रावण कृतं शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

❋ श्री शिव जी की आरती ❋

ॐ जय शिव ओंकारा, प्रभु हर शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव (2), अर्धाङ्गी धारा।
ॐ जय शिव ओंकारा...

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजै। (स्वामी पञ्चानन राजै)
हंसानन गरुड़ासन (2), वृषवाहन साजै।।
ॐ जय शिव ओंकारा...

दो भुज चार चतुर्भुज दशभुज ते सोहै।। (स्वामी दशभुज ते सोहै)
तीनों रूप निरखता (2), त्रिभुवन जन मोहे।
ॐ जय शिव ओंकारा...

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी। (स्वामी मुण्डमाला धारी)
चन्दन मृगमद चन्दा (2), भाले शशि धारी।
ॐ जय शिव ओंकारा...

श्वेताम्बर पीताम्बर वाघाम्बर अङ्गे। (स्वामी वाघाम्बर अङ्गे)
सनकादिक ब्रह्मादिक (2), भूतादिक सङ्गे।
ॐ जय शिव ओंकारा...

कर मध्ये च कमण्डल चक्र त्रिशूलधर्ता। (स्वामी चक्र त्रिशूलधर्ता)
जगकर्ता जगहर्ता (2), जगपालनकर्ता।
ॐ जय शिव ओंकारा...

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका। (स्वामी जानत अविवेका)
प्रणवाक्षर के मध्ये, ओमाक्षर के मध्ये, यह तीनों एका।
ॐ जय शिव ओंकारा...

त्रिगुण शिवजी की आरती जो कोई जन गावे। (स्वामी जो कोई जन गावे)
कहत शिवानन्द स्वामी, भजत हरिहर स्वामी, मनवाँछित फल पावे।
ॐ जय शिव ओंकारा...

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी हर शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव (2), अर्धाङ्गी धारा।
ॐ जय शिव ओंकारा...

।।इति।।

✻ कालभैरवाष्टकम् ✻

देवराजसेव्यमानपावनांघ्रिपङ्कजं व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम् ।
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगंबरं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ १॥

भानुकोटिभास्वरं भवाब्धितारकं परं नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम् ।
कालकालमंबुजाक्षमक्षशूलमक्षरं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ २॥

शूलटंकपाशदण्डपाणिमादिकारणं श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम् ।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ३॥

भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम् ।
विनिक्वणन्मनोज्ञहेमकिङ्किणीलसत्कटिं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ४॥

धर्मसेतुपालकं स्वधर्ममार्गनाशनं कर्मपाशमोचकं सुशर्मधायकं विभुम् ।
स्वर्णवर्णशेषपाशशोभितांगमण्डलं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ५॥

रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरंजनम् ।
मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्रमोक्षणं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ६॥

अट्टहासभिन्नपद्मजाण्डकोशसंततिं दृष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम् ।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकाधरं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ७॥

भूतसंघनायकं विशालकीर्तिदायकं काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभुम् ।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ८॥

॥ फलश्रुति ॥

कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्धनम् ।
शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनं ते प्रयान्ति कालभैरवांघ्रिसन्निधिं नरा ध्रुवम्॥

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं श्री कालभैरवाष्टकं संपूर्णम् ॥

❋ श्री वेङ्कटेश स्तोत्रम् ❋

ॐ कमला कुच चूचुक कुङ्कमतोर्नियतारुणितातुल नीलतनो।
कमलायतलोचन लोकपते विजयी भव वेङ्कटशैलपते॥ १॥

सचतुर्मुखषण्मुखपञ्चमुख प्रमुखाखिलदैवतमौलिमणे।
शरणागतवत्सल सारनिधे परिपालय मां वृषशैलपते॥ २॥

अतिवेलतया तव दुर्विषहैरनुवेलकृतैरपराधशतैः।
भरितं त्वरितं वृषशैलपते परया कृपया परिपाहि हरे॥ ३॥

अधिवेङ्कटशैलमुदारमतेर्जनताभिमताधिकदानरतात्।
परदेवतया गदितान्निगमैः कमलादयितान्न परं कलये॥ ४॥

कलवेणुरवावशगोपवधू शतकोटिवृतात्स्मरकोटिसमात्।
प्रतिवल्लविकाभिमतात्सुखदात् वसुदेवसुतान्न परं कलये॥ ५॥

अभिरामगुणाकर दाशरथे जगदेकधनुर्धर धीरमते।
रघुनायक राम रमेश विभो वरदोभव देव दयाजलधे॥ ६॥

अवनीतनयाकमनीयकरं रजनीकरचारुमुखाम्बुरुहं।
रजनीचरराजतमोमिहिरं महनीयमहं रघुराम मये॥ ७॥

सुमुखं सुहृदं सुलभं सुखदं स्वनुजं च सूखायममोघशरं।
अपहाय रघूद्वहमन्यमहं नकथञ्चन कञ्चन जातु भजे॥ ८॥

विना वेङ्कटेशं ननाथोर्ननाथः सदा वेङ्कटेशं स्मरामि स्मरामि।
हरे वेङ्कटेश प्रसीद प्रसीद प्रियं वेङ्कटेश प्रयच्छ प्रयच्छ॥ ९॥

अहं दूरतस्ते पदाम्भोजयुग्म प्रणामेच्छयाऽऽगत्य सेवां करोमि।
सकृत्सेवया नित्यसेवाफलं त्वं प्रयच्छ प्रयच्छ प्रभो वेङ्कटेश॥ १०॥

अज्ञानिना मया दोषान् अशेषान्विहितान् हरे।
क्षमस्व त्वं क्षमस्व त्वं शेषशैल शिखामणे॥ ११॥ ॐ

इति वेङ्कटेश स्तोत्रम्॥

✻ हनुमान चालीसा ✻

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवनकुमार ।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं हरहु कलेस बिकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर । जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥
राम दूत अतुलित बल धामा । अंजनिपुत्र पवनसुत नामा ॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा । कानन कुंडल कुंचित केसा ॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै । काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥
संकर सुवन केसरीनंदन । तेज प्रताप महा जग बंदन ॥
विद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मन बसिया ॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा । बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे । रामचंद्र के काज सँवारे ॥
लाय सजीवन लखन जियाये । श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं । अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते । कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना । लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥

राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रच्छक काहू को डर ना ॥
आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥
भूत पिशाच निकट नहिं आवै । महाबीर जब नाम सुनावै ॥
नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥
सब पर राम तपस्वी राजा । तिन के काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोई लावै । सोई अमित जीवन फल पावै ॥
चारों जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु संत के तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस बर दीन जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ॥
तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
अंत काल रघुबर पुर जाई । जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥
और देवता चित्त न धरइ । हनुमत सेई सर्ब सुख करइ ॥
संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥
जै जै जै हनुमान गोसाईं । कृपा करहु गुरु देव की नाईं ॥
जो सत बार पाठ कर कोई । छूटहि बंदि महा सुख होई ॥
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा । होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय मँह डेरा ॥

दोहा

पवनतनय संकट हरन मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप ॥
मंगल भवन अमंगल हारि । द्रवउ सो दशरथ अजिर बिहारी ॥

॥ सियावर रामचन्द्र की जय ॥
॥ पवनसुत हनुमान की जय ॥
॥ उमापति महादेव की जय ॥
॥ बोलो रे भाई सब सन्तन की जय ॥

✻ श्री बजरंग बाण ✻

दोहा – निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करें सनमान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करें हनुमान॥

जय हनुमन्त सन्त हितकारी । सुन लीजै प्रभु अरज हमारी॥
जन के काज विलम्ब न कीजै। आतुर दौरि महा सुख दीजै॥
जैसे कूदि सिन्धु महिपारा । सुरसा बदन पैठि विस्तारा॥
आगे जाय लंकिनी रोका । मारेहु लात गई सुर लोका॥
जाय विभीषन को सुख दीन्हा। सीता निरखि परम पद लीन्हा॥
बाग उजारि सिन्धु महं बोरा । अति आतुर जम कातर तोरा॥
अक्षय कुमार मारि संहारा । लूम लपेट लंक को जारा॥
लाह समान लंक जरि गई । जय जय धुनि सुरपुर में भई॥
अब विलम्ब केहि कारन स्वामी। कृपा करहु उर अन्तर्यामी॥
जय जय लखन प्राण के दाता। आतुर होई दुःख करहु निपाता॥
जै गिरिधर जै जै सुख सागर। सुर समूह समरथ भटनागर॥
ॐ हनु हनु हनुमन्त हठीले। बैरिहि मारु बज्र की कीले॥
गदा बज्र लै बैरिहिं मारो। महाराज प्रभु दास उबारो॥
ऊंकार हुंकार महाप्रभु धावो। बज्र गदा विलम्ब न लावो॥
ॐ ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीसा। ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर शीशा॥
सत्य होहु हरि शपथ पायके। राम दूत धरु मारु जायके॥
जय जय जय हनुमन्त अगाधा। दुःख पावत जन केहि अपराधा॥
पूजा जप तप नेम अचारा। नहिं जानत हौं दास तुम्हारा॥
वन उपवन मग गिरि गृह माहीं। तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं॥
पांय परौं कर जोरि मनावौं। येहि अवसर अब केहि गोहरावौं॥
जय अंजनि कुमार बलवन्ता । शंकर सुवन वीर हनुमन्ता॥
बदन कराल काल कुल घालक। राम सहाय सदा प्रतिपालक॥

भूत प्रेत पिशाच निशाचर । अग्नि बैताल काल मारी मर॥
इन्हें मारु तोहि शपथ राम की। राखु नाथ मरजाद नाम की॥
जनक सुता हरि दास कहावो। ताकी शपथ विलम्ब न लावो॥
जै जै जै धुनि होत अकाशा। सुमिरत होत दुसह दुःख नाशा॥
चरण शरण कर जोरि मनावौं। यहि अवसर अब केहि गोहरावौं॥
उठु उठु चलु तोहि राम दोहाई। पांय परौं कर जोरि मनाई॥
ॐ चं चं चं चपल चलन्ता। ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता॥
ॐ हं हं हांक देत कपि चंचल। ॐ सं सं सहमि पराने खल दल॥
अपने जन को तुरत उबारो। सुमिरत होय आनन्द हमारो॥
यह बजरंग बाण जेहि मारै। ताहि कहो फिर कौन उबारै॥
पाठ करै बजरंग बाण की। हनुमत रक्षा करैं प्राण की॥
यह बजरंग बाण जो जापै। ताते भूत प्रेत सब कापै॥
धूप देय अरु जपै हमेशा। ताके तन नहिं रहै कलेशा॥

दोहा – प्रेम प्रतीतिहि कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥

✻ श्रीगङ्गाष्टकम् ✻

मातः शैलसुतासपत्नि वसुधाशृङ्गारहारावलि
स्वर्गारोहणवैजयन्ति भवतीं भागीरथि प्रार्थये।
त्वत्तीरे वसतस्त्वदम्बु पिबतस्त्वद्वीचिषु प्रेङ्खत-
स्त्वन्नाम स्मरतस्त्वदर्पितदृशः स्यान्मे शरीरव्ययः॥ १॥

त्वत्तीरे तरुकोटरान्तरगतो गङ्गे विहङ्गो वरं
त्वन्नीरे नरकान्तकारिणि वरं मत्स्योऽथवा कच्छपः।
नैवान्यत्र मदान्धसिन्धुरघटासङ्घट्टघण्टारण-
त्कारत्रस्तसमस्तवैरिवनितालब्धस्तुतिर्भूपतिः॥ २॥

उक्षा पक्षी तुरग उरगः कोऽपि वा वारणो वा
वारीणः स्यां जननमरणक्लेशदुःखासहिष्णुः।
न त्वन्यत्र प्रविरलरणत्कङ्कणक्वाणमिश्रं
वारस्त्रीभिश्चमरमरुता वीजितो भूमिपालः॥ ३॥

काकैर्निष्कुषितं श्वभिः कवलितं गोमायुभिर्लुण्ठितं
स्त्रोतोभिश्चलितं तटाम्बुलुलितं वीचीभिरान्दोलितम्।
दिव्यस्त्रीकरचारुचामरमरुत्संवीज्यमानः कदा
द्रक्ष्येऽहं परमेश्वरि त्रिपथगे भागीरथि स्वं वपुः॥ ४॥

अभिनवबिसवल्ली पादपद्मस्य विष्णो-
र्मदनमथनमौलेर्मालतीपुष्पमाला।
जयति जयपताका काप्यसौ मोक्षलक्ष्म्याः
क्षपितकलिकलङ्का जाह्नवी नः पुनातु॥ ५॥

एतत्तालतमालसालसरलव्यालोलवल्लीलता-
च्छन्नं सूर्यकरप्रतापरहितं शङ्खेन्दुकुन्दोज्ज्वलम्।
गन्धर्वामरसिद्धकिन्नरवधूत्तुङ्गस्तनास्फालितं
स्नानाय प्रतिवासरं भवतु मे गाङ्गं जलं निर्मलम्॥ ६॥

गाङ्गं वारि मनोहारि मुरारिचरणच्युतम्।
त्रिपुरारिशिरश्चारि पापहारि पुनातु माम्॥ ७॥

पापापहारि दुरितारि तरङ्गधारि
शैलप्रचारि गिरिराजगुहाविदारि।
झङ्कारकारि हरिपादरजोऽपहारि
गाङ्गं पुनातु सततं शुभकारि वारि॥ ८॥

गङ्गाष्टकं पठति यः प्रयतः प्रभाते
वाल्मीकिना विरचितं शुभदं मनुष्यः।
प्रक्षाल्य गात्रकलिकल्मषपङ्कमाशु
मोक्षं लभेत् पतति नैव नरो भवाब्धौ॥ ९॥

वर्गीकृत तिथि सूचना 30 मार्च 2025 ई० से 19 मार्च 2026 ई० तक (दिनाङ्क अनुसार)								
2025 2026	श्री गणेश चतुर्थी	एकादशी व्रत	अमावस्या (स्नानदान)	पूर्णिमा (उदय व्या.)	प्रदोष व्रत	मास शिवरात्रि	संक्रान्ति	सत्य-नारायण व्रत
अप्रैल	16	8, 24	27	12	10, 25	26	13 (वैशाख)	12
मई	16	8, 23	27	12	9, 24	25	14 (ज्येष्ठ)	12
जून	14	6, 21	25	11	8, 23	23	15 (आषाढ़)	10
जुलाई	14	6, 22(वै.)	24	10	8, 22	23	16 (श्रावण)	10
अगस्त	12	5, 19	23	9	6, 20	21	16 (भाद्रपद)	8
सितम्बर	10	3, 17	21	7	5, 19	19	16 (आश्विन)	7
अक्टूबर	10	3, 17	21	7	4, 18	19	17 (कार्तिक)	6
नवम्बर	8	2(वै.), 15	20	5	3, 17	18	16 (मार्गशीर्ष)	5
दिसम्बर	7	1,15,31वै	19	4	2, 17	18	15 (पौष)	4
जनवरी (26)	6	14, 29	18	3	1,16,30	16	14 (माघ)	2
फरवरी	5	13, 27	17	1	14	15	12 (फाल्गुन)	1
मार्च	6	15	19	3	1,16,30	17	14 (चैत्र)	2

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
30 मार्च से 12 अप्रैल 2025 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
30	17	1	रवि	12:50	रेवती	16:35	ऐन्द्र	बव
31	18	2	सोम	9:12	अश्विनी	13:45	वैधृति	कौलव
-	-	3	सोम	29:43	-	-	-	-
1 अप्रैल	19	4	मंगल	26:33	भरणी	11:07	विष्कुम्भ प्रीति	वणिज्
2	20	5	बुध	23:50	कृत्तिका	8:50	आयुष्मान्	बव
3	21	6	गुरु	21:42	रोहिणी मृगशिरा	7:03 29:51	सौभाग्य	कौलव
4	22	7	शुक्र	20:13	आर्द्रा	29:21	शोभन	गर
5	23	8	शनि	19:27	पुनर्वसु	29:32	अतिगण्ड	विष्टि
6	24	9	रवि	19:24	पुष्य	पूरादिन	सुकर्मा	बालव
7	25	10	सोम	20:01	पुष्य	6:25	धृति	तैतिल
8	26	11	मंगल	21:14	आश्लेषा	7:55	शूल	वणिज्
9	27	12	बुध	22:56	मघा	9:57	गण्ड	बव
10	28	13	गुरु	25:01	पू.फाल्गुनी	12:25	वृद्धि	कौलव
11	29	14	शुक्र	27:22	उ.फाल्गुनी	15:10	ध्रुव	गर
12	30	15	शनि	29:52	हस्त	18:08	व्याघात	विष्टि

सूर्य उत्तरायण, वसन्त ऋतु
चैत्र शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:13	18:30	मेष में 16:35 से	**'सिद्धार्थी' नामक नव वि.संवत् 2082 आरम्भ। चैत्र (वासन्त) नवरात्र प्रा.। घटस्थापन प्रातः 6:13 से 10:22। संवत्सर फल श्रवण।** पंचक समाप्त 16:35। ध्वजारोहण। श्रीदुर्गा-पूजा। गुड़ी-पड़वा। तैलाभ्यङ्ग। गण्डमूल विचार।
6:11	18:31	मेष	गणगौरी तृतीया। श्रीमत्स्य जयन्ती। ग.मू 13:45 तक।
-	-	-	तृतीया तिथि का क्षय।
6:10	18:32	वृष में 16:30 से	भद्रा 16:08 से 26:33 तक। दमनक चतुर्थी।
6:09	18:32	वृष	**श्री (लक्ष्मी) पंचमी। नाग पंचमी। मंगल कर्क में 25:24।** हय व्रत।
6:08	18:33	मिथुन में 18:22 से	स्कन्द षष्ठी व्रत। वक्री बुध पू.भाद्रपदा (4) में 18:42।
6:07	18:33	मिथुन	भद्रा 20:13 से।
6:06	18:34	कर्क में 23:25 से	भद्रा 7:50 तक। **श्रीदुर्गाष्टमी।** भवान्युत्पत्ति, अशोकाष्टमी। मेला बाहूफोर्ट, काँगड़ादेवी, नैनादेवी। अशोककालिका प्राशन। अन्नपूर्णा पूजन।
6:04	18:35	कर्क	श्रीदुर्गा-नवमी। **नवरात्र-समाप्त। श्रीरामनवमी।** सर्वार्थ सिद्धि योग। रवि-पुष्य योग।
6:03	18:35	कर्क	**नवरात्र पारणा। बुध मार्गी 16:40।** गण्डमूल 6:25 से।
6:02	18:36	सिंह में 7:55 से	भद्रा 8:38 से 21:14 तक। **कामदा एकादशी व्रत (स्मार्त)।** लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव। ग.मू. विचार।
6:01	18:36	सिंह	श्रीविष्णु-दमनोत्सव।। गण्डमूल 9:57 तक।
6:00	18:37	कन्या में 19:05 से	**प्रदोष व्रत। अनङ्ग त्रयोदशी।** श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)। गुरु मृगशिरा (1) में 18:50।
5:59	18:38	कन्या	भद्रा 27:22 से। श्री शिव दमनोत्सव।
5:57	18:38	कन्या	भद्रा 16:37 तक। **चैत्र-पूर्णिमा। वैशाख स्नान आरम्भ। श्रीहनुमान जयन्ती (दक्षिण भारत)।** श्रीसत्यनारायण व्रत।

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
13 अप्रैल से 27 अप्रैल 2025 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
13	1 वैशाख	1	रवि	पूरादिन	चित्रा	21:11	हर्ष	बालव
14	2	1	सोम	8:26	स्वाति	24:14	वज्र	कौलव
15	3	2	मंगल	10:56	विशाखा	27:11	सिद्धि	गर
16	4	3	बुध	13:18	अनुराधा	29:55	व्यतिपात	विष्टि
17	5	4	गुरु	15:24	ज्येष्ठा	पूरादिन	वरीयान	बालव
18	6	5	शुक्र	17:08	ज्येष्ठा	8:21	परिघ	तैतिल
19	7	6	शनि	18:23	मूल	10:21	शिव	वणिज्
20	8	7	रवि	19:01	पूर्वाषाढ़ा	11:49	सिद्ध	विष्टि
21	9	8	सोम	18:59	उत्तराषाढ़ा	12:37	साध्य	बालव
22	10	9	मंगल	18:13	श्रवण	12:44	शुभ	तैतिल
23	11	10	बुध	16:44	धनिष्ठा	12:08	शुक्ल	विष्टि
24	12	11	गुरु	14:33	शतभिषा	10:49	ब्रह्म	बालव
25	13	12	शुक्र	11:45	पू.भाद्रपदा	8:54	ऐन्द्र	तैतिल
26	14	13	शनि	8:28	उ.भाद्रपदा रेवती	6:27 27:39	वैधृति विष्कुम्भ	वणिज्
-	-	14	शनि	28:50	-	-	-	-
27	15	30	रवि	25:01	अश्विनी	24:39	प्रीति	चतुष्पाद्

सूर्य उत्तरायण, वसन्त – ग्रीष्म ऋतु
वैशाख कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:56	18:39	तुला में 7:39 से	**सूर्य अश्वि.1 मेष में 27:21, वैशाख संक्रान्ति मु.15, पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रात:9.45 तक।शुक्र मार्गी 6:34। मेला वैशाखी (पंजाब)।**
5:55	18:39	तुला	**पुण्यकाल संक्रान्ति प्रात:9.45 तक।**
5:54	18:40	वृश्चिक में	20:27 से। भद्रा 24:07 से।
5:53	18:41	वृश्चिक	भद्रा 13:18 तक। **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 22:01।** सर्वार्थ सिद्धि योग।
5:52	18:41	वृश्चिक	सति अनसूया जयन्ती। गण्डमूल प्रात: 5:55 से।
5:51	18:42	धनु में	8:21 से। गण्डमूल विचार।
5:50	18:43	धनु	भद्रा 18:23 से। ग्रीष्म ऋतु आ.। गण्डमूल 10:21 तक।
5:49	18:43	मकर में	18:05 से। भद्रा 6:42 तक। **अगस्त्य अस्त।**
5:48	18:44	मकर	शक वैशाख आरम्भ।
5:47	18:44	कुम्भ में	24:31 से। भद्रा 29:29 से। पंचक आरम्भ 24:31।
5:46	18:45	कुम्भ	भद्रा 16:44 तक।
5:45	18:46	मीन में 27:26 से	**वरूथिनी एकादशी व्रत।** श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती।
5:44	18:46	मीन	**प्रदोष व्रत।**
5:43	18:47	मेष में 27:39 से	भद्रा 8:28 से 18:39 तक। पंचक समाप्त 27:39। मासशिवरात्रि व्रत। गण्डमूल 6:27 से।
-	-	-	चतुर्दशी तिथि का क्षय।
5:42	18:48	मेष	**वैशाख अमावस्या।** गण्डमूल 24:39 तक।

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
28 अप्रैल से 12 मई 2025 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
28	16	1	सोम	21:11	भरणी	21:38	आयुष्मान्	किंस्तुघ्न
29	17	2	मंगल	17:32	कृत्तिका	18:47	सौभाग्य	बालव
30	18	3	बुध	14:13	रोहिणी	16:18	शोभन	गर
1मई	19	4	गुरु	11:24	मृगशिरा	14:21	अति/सुक	विष्टि
2	20	5	शुक्र	9:15	आर्द्रा	13:04	धृति	बालव
3	21	6	शनि	7:53	पुनर्वसु	12:34	शूल	तैतिल
4	22	7	रवि	7:20	पुष्य	12:54	गण्ड	वणिज्
5	23	8	सोम	7:36	आश्लेषा	14:01	वृद्धि	बव
6	24	9	मंगल	8:39	मघा	15:52	ध्रुव	कौलव
7	25	10	बुध	10:20	पू.फाल्गुनी	18:17	व्याघात	गर
8	26	11	गुरु	12:30	उ.फाल्गुनी	21:07	हर्ष	विष्टि
9	27	12	शुक्र	14:57	हस्त	24:09	वज्र	बालव
10	28	13	शनि	17:30	चित्रा	27:15	सिद्धि	तैतिल
11	29	14	रवि	20:02	स्वाति	पूरादिन	व्यतिपात	गर
12	30	15	सोम	22:26	स्वाति	6:17	वरीयान	विष्टि

सूर्य उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु
वैशाख शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:41	18:48	वृष में	26:54 से। गुरु मृगशिरा 2 में 18:05।
5:40	18:49	वृष	चन्द्रदर्शन मु.45। श्रीशिवाजी जयन्ती। **भगवान परशुराम जयन्ती।** सर्वार्थ सिद्धि योग 18:47 तक।
5:39	18:49	मिथुन में 27:15 से	भद्रा 24:49 से। **अक्षय-तृतीया।** **केदार-बदरीनाथ यात्रा आरम्भ। स.सि.यो।**
5:38	18:50	मिथुन	भद्रा 11:24 तक। श्रम दिवस।
5:37	18:51	मिथुन	**आद्यजगद्गुरु श्रीशङ्कराचार्य जयन्ती।**
5:37	18:51	कर्क में 6:37 से	**श्रीगङ्गा जयन्ती (मध्याह्न व्यापिनी)।** श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती।
5:36	18:52	कर्क	भद्रा 7:20 से 19:28 तक। श्रीदुर्गाष्टमी। गण्डमूल 12:54 से। रविपुष्य योग 12:54 तक।
5:35	18:53	सिंह में 14:01 से	**जानकी** (सीता) **जयन्ती। श्रीबगलामुखी जयन्ती** (अर्धरात्रि-व्यापिनी)।
5:34	18:53	सिंह	**बुध अश्वि.1 मेष में 28:06**। गण्डमूल 15:52 तक।
5:33	18:54	कन्या में	24:58 से। भद्रा 23:25 से। श्री टैगोर-जयन्ती।
5:33	18:55	कन्या	भद्रा 12:30 तक। **मोहिनी एकादशी व्रत।**
5:32	18:55	कन्या	**प्रदोष व्रत।**
5:31	18:56	तुला में	13:42 से।
5:30	18:56	तुला	भद्रा 20:02 से। श्रीनृसिंह जयन्ती। श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती।
5:30	18:57	वृश्चिक में 26:28 से	भद्रा 9:14 तक। **वैशाख पूर्णिमा।** श्री बुद्ध पूर्णिमा। श्री कूर्म जयन्ती। वैशाख स्नान समाप्त। श्री सत्यनारायण व्रत। महर्षि भृगु जयन्ती।

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
13 मई से 27 मई 2025 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
13	31	1	मंगल	24:36	विशाखा	9:09	वरीयान	बालव
14	1 ज्येष्ठ	2	बुध	26:30	अनुराधा	11:47	परिघ	तैतिल
15	2	3	गुरु	28:03	ज्येष्ठा	14:08	शिव	वणिज्
16	3	4	शुक्र	29:14	मूल	16:08	सिद्ध	बव
17	4	5	शनि	पूरादिन	पूर्वाषाढ़ा	17:44	साध्य	कौलव
18	5	5	रवि	5:58	उत्तराषाढ़ा	18:53	शुभ	तैतिल
19	6	6	सोम	6:12	श्रवण	19:30	शुक्ल/ब्रह्म	वणिज्
20	7	7	मंगल	5:52	धनिष्ठा	19:32	ऐन्द्र	बव
-	-	8	मंगल	28:56	-	-	-	-
21	8	9	बुध	27:22	शतभिषा	18:58	वैधृति	तैतिल
22	9	10	गुरु	25:13	पू.भाद्रपदा	17:47	विष्कुम्भ	वणिज्
23	10	11	शुक्र	22:30	उ.भाद्रपदा	16:03	प्रीति	बव
24	11	12	शनि	19:21	रेवती	13:48	आयुष्मान्	कौलव
25	12	13	रवि	15:52	अश्विनी	11:12	सौभाग्य	गर
26	13	14	सोम	12:12	भरणी	8:24	शोभ/अति	शकुनि
27	14	30	मंगल	8:32	कृत्तिका रोहिणी	5:33 26:51	सुकर्मा	नाग

सूर्य उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:29	18:58	वृश्चिक	ज्येष्ठ कृष्णपक्ष आरम्भ।
5:28	18:58	वृश्चिक	सूर्य वृष में 24:11। **ज्येष्ठ संक्रान्ति, मु.15। पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रातः 6:35 तक।** श्रीनारद-जयन्ती। वीणादान। **गुरु मृगशिरा 3 मिथुन में 22:33।** गण्डमूल 11:47 से।
5:28	18:59	धनु में	14:08 से। भद्रा 15:17 से 28:03 तक। ग.मू.विचार।
5:27	19:00	धनु	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 22:40।** गण्डमूल 16:08 तक।
5:27	19:00	मकर में	24:04 से।
5:26	19:01	मकर	**राहु** पू.भा.3 **कुम्भ, केतु** उ.फा.1 **सिंह में** 19:35। **बुध पूर्व में अस्त 27:25।** सर्वार्थ सिद्धि योग।
5:26	19:01	मकर	भद्रा 6:12 से 18:02 तक। स.सि.योग 19:30 तक।
5:25	19:02	कुम्भ में	7:36 से। पंचक आरम्भ 7:36 से।
-	-	-	अष्टमी तिथि का क्षय।
5:25	19:03	कुम्भ	बुध कृत्तिका में 22:17।
5:24	19:03	मीन में	12:08 से। भद्रा 14:18 से 25:13 तक। शक ज्येष्ठ आ.।
5:24	19:04	मीन	**अपरा एकादशी व्रत। मेला भद्रकाली। बुध वृष में 13:00,** गण्डमूल 16:03 से।
5:23	19:05	मेष में 13:48 से	**शनि प्रदोष व्रत।** पंचक समाप्त 13:48। गण्डमूल विचार।
5:23	19:05	मेष	भद्रा 15:52 से 26:02 तक। मासशिवरात्रि व्रत। गणडमूल 11:12 तक।
5:22	19:06	वृष में 13:41 से	शनैश्चर जयन्ती। पितृकार्येषु अमावस्या। वटसावित्री व्रत (अमावस्या पक्ष)।
5:22	19:06	वृष	**ज्येष्ठ अमावस्या** (स्नानदानादि प्रातः 8:32 तक।) **भौमवती अमावस्या।** भावुका अमावस्या। करवीर व्रत। श्रीगङ्गा स्नान प्रारम्भ।

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
28 मई से 11 जून 2025 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
-	-	1	मंगल	29:03	-	-	-	-
28	15	2	बुध	25:55	मृगशिरा	24:29	धृति	बालव
29	16	3	गुरु	23:19	आर्द्रा	22:39	शूल	तैतिल
30	17	4	शुक्र	21:23	पुनर्वसु	21:29	गण्ड	वणिज्
31	18	5	शनि	20:16	पुष्य	21:08	वृद्धि	बव
1 जून	19	6	रवि	20:00	आश्लेषा	21:37	ध्रुव	कौलव
2	20	7	सोम	20:36	मघा	22:56	व्याघात	गर
3	21	8	मंगल	21:57	पू.फाल्गुनी	24:59	हर्ष	विष्टि
4	22	9	बुध	23:55	उ.फाल्गुनी	27:36	वज्र	बालव
5	23	10	गुरु	26:17	हस्त	पूरादिन	सिद्धि	तैतिल
6	24	11	शुक्र	28:49	हस्त	6:34	व्यतिपात	वणिज्
7	25	12	शनि	पूरादिन	चित्रा	9:40	वरीयान	बव
8	26	12	रवि	7:18	स्वाति	12:42	परिघ	बालव
9	27	13	सोम	9:36	विशाखा	15:31	शिव	तैतिल
10	28	14	मंगल	11:36	अनुराधा	18:02	सिद्ध	वणिज्
11	29	15	बुध	13:14	ज्येष्ठा	20:11	साध्य	बव

सूर्य उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
-	-	-	प्रतिपदा तिथि का क्षय।
5:22	19:07	मिथुन में	13:37 से। सर्वार्थ सिद्धि योग।
5:21	19:07	मिथुन	रम्भा तृतीया व्रत। महाराणा प्रताप जयन्ती।
5:21	19:08	कर्क में	15:43 से। भद्रा 10:21 से 21:23 तक। उमा अवतार।
5:21	19:08	कर्क	शुक्र अश्विन 1 मेष में 11:32। गण्डमूल 21:08 से।
5:21	19:09	सिंह में 21:37 से	अरण्य षष्ठी। विन्ध्यवासिनी पूजा। गण्डमूल विचार।
5:20	19:09	सिंह	भद्रा 20:36 से। गण्डमूल 22:56 तक।
5:20	19:10	सिंह	भद्रा 9:17 तक। **श्रीदुर्गाष्टमी।** धूमावती जयन्ती। मेला क्षीर-भवानी (कश्मीर)।
5:20	19:10	कन्या में	7:35 से।
5:20	19:11	कन्या	**श्रीगङ्गा दशहरा पर्व** (हरिद्वार आदि)।
5:20	19:11	तुला में 20:07 से	भद्रा 15:33 से 28:49 तक। **निर्जला एकादशी व्रत** (स्मार्त)। मंगल मघा 1 सिंह में 26:10। बुध मिथुन में 9:27।
5:20	19:12	तुला	**निर्जला एकादशी व्रत** (वैष्णव)। चम्पक द्वादशी।
5:20	19:12	तुला	**प्रदोष व्रत।** वट्सावित्री व्रत आरम्भ।
5:20	19:13	वृश्चिक में	8:51 से। बुध आर्द्रा में 14:57।
5:20	19:13	वृश्चिक	भद्रा 11:36 से 24:25 तक। **वट्सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष)। श्रीसत्यनारायण व्रत।** बुध पश्चिम में उदय 19:33। **गुरु पश्चिम में अस्त 19:29।** गण्डमूल 18:02 से।
5:20	19:14	धनु में 20:11 से	**ज्येष्ठ पूर्णिमा।** सन्त कबीर जयन्ती। ज्येष्ठी योग। गण्डमूल विचार।

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
12 जून से 25 जून 2025 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
12	30	1	गुरु	14:28	मूल	21:57	शुभ	कौलव
13	31	2	शुक्र	15:19	पूर्वाषाढ़ा	23:21	शुक्ल	गर
14	32	3	शनि	15:47	उत्तराषाढ़ा	24:22	ब्रह्म	विष्टि
15	1 आषाढ़	4	रवि	15:52	श्रवण	25:00	ऐन्द्र	बालव
16	2	5	सोम	15:32	धनिष्ठा	25:14	वैधृति	तैतिल
17	3	6	मंगल	14:47	शतभिषा	25:02	विष्कुम्भ	वणिज्
18	4	7	बुध	13:35	पू.भाद्रपदा	24:23	प्रीति/आयु	बव
19	5	8	गुरु	11:56	उ.भाद्रपदा	23:17	सौभाग्य	कौलव
20	6	9	शुक्र	9:50	रेवती	21:45	शोभन	गर
21	7	10	शनि	7:19	अश्विनी	19:50	अतिगण्ड	विष्टि
-	-	11	शनि	28:28	-	-	-	-
22	8	12	रवि	25:23	भरणी	17:39	सुकर्मा	कौलव
23	9	13	सोम	22:10	कृत्तिका	15:17	धृति	गर
24	10	14	मंगल	19:00	रोहिणी	12:54	शूल	विष्टि
25	11	30	बुध	16:02	मृगशिरा	10:41	गंड/वृद्धि	नाग

सूर्य उत्तरायण – दक्षिणायण, ग्रीष्म – वर्षा ऋतु
आषाढ़ कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:20	19:14	धनु	गण्डमूल 21:57 तक।
5:20	19:14	धनु	भद्रा 27:33 से।
5:20	19:15	मकर में 5:38 से	भद्रा 15:47 तक। **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 20:08।**
5:20	19:15	मकर	**सूर्य मिथुन में 6:44। आषाढ़ संक्रान्ति, मु.30, पुण्यकाल संक्रान्ति दोपहर 13:08 तक।**
5:20	19:15	कुम्भ में	13:10 से। पंचक आरम्भ 13:10 से।
5:20	19:16	कुम्भ	भद्रा 14:47 से 26:11 तक।
5:20	19:16	मीन में	18:35 से।
5:20	19:16	मीन	गण्डमूल 23:17 से।
5:21	19:16	मेष में 21:45 से	भद्रा 20:35 से। पंचक समाप्त 21:45। गण्डमूल विचार।
5:21	19:17	मेष	भद्रा 7:19 तक। **योगिनी एकादशी व्रत** (स्मार्त)। सायन दक्षिणायण आरम्भ। वर्षा ऋतु आरम्भ। गण्डमूल 19:50 तक।
-	-	-	एकादशी तिथि का क्षय।
5:21	19:17	वृष में 23:04 से	**योगिनी एकादशी व्रत** (वैष्णव)। सूर्य आर्द्रा में 6:19। बुध कर्क में 21:32। शक आषाढ़ आरम्भ।
5:21	19:17	वृष	भद्रा 22:10 से। **सोम प्रदोष व्रत।** मासशिवरात्रि व्रत।
5:22	19:17	मिथुन में	23:46 से। भद्रा 8:35 तक। बुध पुष्य में 29:03।
5:22	19:17	मिथुन	**आषाढ़ अमावस्या।**

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
26 जून से 10 जुलाई 2025 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
26	12	1	गुरु	13:25	आर्द्रा	8:47	ध्रुव	बव
27	13	2	शुक्र	11:20	पुनर्वसु	7:22	व्याघात	कौलव
28	14	3	शनि	9:55	पुष्य	6:36	हर्ष	गर
29	15	4	रवि	9:15	आश्लेषा	6:34	वज्र	विष्टि
30	16	5	सोम	9:24	मघा	7:21	सिद्धि	बालव
1जु.	17	6	मंगल	10:21	पू.फाल्गुनी	8:54	व्यतिपात	तैतिल
2	18	7	बुध	11:59	उ.फाल्गुनी	11:08	वरीयान	वणिज्
3	19	8	गुरु	14:07	हस्त	13:51	परिघ	बव
4	20	9	शुक्र	16:32	चित्रा	16:50	शिव	कौलव
5	21	10	शनि	18:59	स्वाति	19:52	सिद्ध	तैतिल
6	22	11	रवि	21:16	विशाखा	22:42	साध्य	वणिज्
7	23	12	सोम	23:11	अनुराधा	25:12	शुभ	बव
8	24	13	मंगल	24:39	जेष्ठा	27:15	शुक्ल	कौलव
9	25	14	बुध	25:37	मूल	28:50	ब्रह्म	गर
10	26	15	गुरु	26:07	पूर्वाषाढ़ा	पूरादिन	ऐन्द्र	विष्टि

सूर्य दक्षिणायन, वर्षा ऋतु
आषाढ़ शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:22	19:17	कर्क में	25:40 से। **गुप्त नवरात्र आरम्भ।**
5:22	19:17	कर्क	रथयात्रा उत्सव (श्रीजगन्नाथपुरी)।
5:23	19:18	कर्क	भद्रा 21:35 से। गण्डमूल 6:36 से।
5:23	19:18	सिंह में 6:34 से	भद्रा 9:15 तक। शुक्र वृष में 14:08। गण्डमूल विचार।
5:23	19:18	सिंह	**स्कन्द (कुमार) षष्ठी** (पूर्वविद्धा)। गण्डमूल 7:21 तक।
5:24	19:18	कन्या में	15:24 से। विवस्वत सप्तमी (पूर्वविद्धा)।
5:24	19:18	कन्या	भद्रा 11:59 से 25:03 तक।
5:25	19:18	तुला में	27:19 से। श्रीदुर्गाष्टमी।
5:25	19:17	तुला	भड़ली नवमी। **गुप्त नवरात्र समाप्त।**
5:25	19:17	तुला	सर्वार्थ सिद्धि योग।
5:26	19:17	वृश्चिक में 16:01 से	भद्रा 8:08 से 21:16 तक। **हरिशयनी एकादशी व्रत।** चातुर्मास्य व्रतनियमादि आरम्भ। श्रीविष्णु-शयनोत्सव। **गुरु पूर्व में उदय 29:20।**
5:26	19:17	वृश्चिक	गण्डमूल 25:12 से। सर्वार्थ सिद्धि योग।
5:27	19:17	धनु में	27:15 से। **भौम प्रदोष व्रत।**
5:27	19:17	धनु	भद्रा 25:37 से। मेला ज्वालामुखी। गण्डमूल 28:50 तक।
5:28	19:17	धनु	भद्रा 13:52 तक। **आषाढ़ी पूर्णिमा। गुरु पूर्णिमा। व्यास पूजा।** श्रीसत्यनारायण व्रत। वायु-परीक्षा। शिवशयनोत्सव। कोकिला व्रत।

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
11 जुलाई से 24 जुलाई 2025 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
11	27	1	शुक्र	26:09	पूर्वाषाढ़ा	5:56	वैधृति	बालव
12	28	2	शनि	25:47	उत्तराषाढ़ा	6:36	विष्कुम्भ	तैतिल
13	29	3	रवि	25:03	श्रवण	6:53	प्रीति	वणिज्
14	30	4	सोम	24:00	धनिष्ठा	6:49	आयुष्मान्	बव
15	31	5	मंगल	22:40	शतभिषा	6:27	सौभाग्य	कौलव
16	1 श्रावण	6	बुध	21:02	पू.भाद्रपदा उ.भाद्रपदा	5:47 28:51	शोभन	गर
17	2	7	गुरु	19:10	रेवती	27:39	अतिगण्ड	विष्टि
18	3	8	शुक्र	17:02	अश्विनी	26:14	सुक/धृति	बालव
19	4	9	शनि	14:43	भरणी	24:38	शूल	गर
20	5	10	रवि	12:14	कृत्तिका	22:54	गण्ड	विष्टि
21	6	11	सोम	9:40	रोहिणी	21:07	वृद्धि	बालव
22	7	12	मंगल	7:06	मृगशिरा	19:25	ध्रुव	तैतिल
-	-	13	मंगल	28:40	-	-	-	-
23	8	14	बुध	26:29	आर्द्रा	17:55	व्याघात	विष्टि
24	9	30	गुरु	24:41	पुनर्वसु	16:44	हर्ष	चतुष्पाद्

सूर्य दक्षिणायन, वर्षा ऋतु
श्रावण कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:28	19:16	मकर में	12:09 से।
5:29	19:16	मकर	अशून्यशयन व्रत।
5:29	19:16	कुम्भ में 18:54 से	भद्रा 13:25 से 25:03 तक। पंचक आरम्भ 18:54। शनि वक्री 9:40। कज्जली तीज।
5:30	19:15	कुम्भ	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 21:54। श्रावण प्रथम सोमवार। नीलकण्ठ कांवड मेला यात्रा आरम्भ।**
5:30	19:15	मीन में 23:58 से	नाग-पंचमी (राज. व बंगाल)। मङ्गलागौरी व्रत आरम्भ।
5:31	19:15	मीन	भद्रा 21:02 से। **सूर्य कर्क में 17:30। श्रावण संक्रान्ति** मु.45, पुण्यकाल सं. प्रातः 11:06 बाद। निरयण दक्षिणायण आरम्भ। गण्डमूल 28:51 से।
5:31	19:14	मेष में 27:39 से	भद्रा 8:06 तक। पंचक समाप्त 27:39। शीतला सप्तमी। सर्वार्थ सिद्धि योग।
5:32	19:14	मेष	**बुध वक्री 10:12।** गण्डमूल 26:14 तक।
5:33	19:14	मेष	भद्रा 25:29 से।
5:33	19:13	वृष में	6:12 से। भद्रा 12:14 तक।
5:34	19:13	वृष	**कामिका एकादशी व्रत।** सर्वार्थ सिद्धि योग। **श्रावण द्वितीय सोमवार।**
5:34	19:12	मिथुन में	8:15 से। भद्रा 28:40 से। **भौम प्रदोष व्रत।**
-	-	-	त्रयोदशी तिथि का क्षय।
5:35	19:12	मिथुन	भद्रा 15:35 तक। श्रावण शिवरात्रि व्रत। शक श्रावण आ.
5:35	19:11	कर्क में 10:59 से	**श्रावण (हरियाली) अमावस्या। वक्री बुध पश्चिम में अस्त 19:50।**

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
25 जुलाई से 9 अगस्त 2025 तक

ता॰	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
25	10	1	शुक्र	23:24	पुष्य	16:01	वज्र/सिद्धि	किंस्तुघ्न
26	11	2	शनि	22:43	आश्लेषा	15:52	व्यतिपात	बालव
27	12	3	रवि	22:43	मघा	16:23	वरीयान	तैतिल
28	13	4	सोम	23:25	पू.फाल्गुनी	17:36	परिघ	वणिज्
29	14	5	मंगल	24:47	उ.फाल्गुनी	19:28	शिव	बव
30	15	6	बुध	26:42	हस्त	21:53	सिद्ध	कौलव
31	16	7	गुरु	28:59	चित्रा	24:42	साध्य	गर
1	17	8	शुक्र	पूरादिन	स्वाति	27:41	शुभ	विष्टि
2	18	8	शनि	7:24	विशाखा	पूरादिन	शुक्ल	बव
3	19	9	रवि	9:43	विशाखा	6:35	शुक्ल	कौलव
4	20	10	सोम	11:42	अनुराधा	9:13	ब्रह्म	गर
5	21	11	मंगल	13:13	ज्येष्ठा	11:23	ऐन्द्र	विष्टि
6	22	12	बुध	14:09	मूल	13:00	वैधृति	बालव
7	23	13	गुरु	14:28	पूर्वाषाढ़ा	14:01	विष्क/प्रीति	तैतिल
8	24	14	शुक्र	14:13	उत्तराषाढ़ा	14:28	आयुष्मान्	वणिज्
9	25	15	शनि	13:25	श्रवण	14:24	सौभाग्य	बव

सूर्य दक्षिणायन, वर्षा ऋतु
श्रावण शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:36	19:11	कर्क	मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी) आरम्भ। गण्डमूल 16:01 से।
5:37	19:10	सिंह में	15:52 से। **शुक्र मिथुन में 8:56।** गण्डमूल विचार।
5:37	19:09	सिंह	मधुस्रवा हरियाली सिंघारा तीज। गण्डमूल 16:23 तक। स्वर्णगौरी व्रत।
5:38	19:09	कन्या में 24:00 से	भद्रा 11:04 से 23:25 तक। मंगल कन्या में 19:57। दूर्वा गणपति व्रत। वरद् चतुर्थी। **श्रावण तृतीय सोमवार।**
5:38	19:08	कन्या	नाग-पंचमी।
5:39	19:07	कन्या	श्रीकल्कि-जयन्ती। सर्वार्थ सिद्धि योग।
5:40	19:07	तुला में 11:15 से	भद्रा 28:59 से। **गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती। शीतला सप्तमी।**
5:40	19:06	तुला	भद्रा 18:12 तक। मेला चिन्तपूर्णी-चामुण्डादेवी समाप्त। लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव।
5:41	19:05	वृश्चिक में	23:53 से।
5:41	19:05	वृश्चिक	
5:42	19:04	वृश्चिक	भद्रा 24:28 से। गण्डमूल 9:13 से। स.सि.यो 9:13 तक। **श्रावण चतुर्थ सोमवार।**
5:42	19:03	धनु में 11:23 से	भद्रा 13:13 तक। **पवित्रा एकादशी व्रत।** गण्डमूल विचार।
5:43	19:02	धनु	**प्रदोष व्रत।** गण्डमूल 13:00 तक।
5:44	19:01	मकर में	20:11 से।
5:44	19:00	मकर	भद्रा 14:13 से 25:49 तक। श्रीसत्यनारायण व्रत। ऋषि तर्पण (अपराह्न-काले)। हयग्रीव जयन्ती।
5:45	19:00	कुम्भ में 26:11 से	पंचक आरम्भ 26:11 से। **श्रावण पूर्णिमा। रक्षाबन्धन।** श्रीसत्यनारायण व्रत। यजुर्वेदि-अथर्ववेदि-श्रावणी उपाकर्म। कोकिला व्रत पूर्ण। **दर्शन श्री अमरनाथ गुफा समाप्त। संस्कृत दिवस।** श्री गायत्री जयन्ती।

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
10 अगस्त से 23 अगस्त 2025 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
10	26	1	रवि	12:11	धनिष्ठा	13:53	शोभन	कौलव
11	27	2	सोम	10:34	शतभिषा	13:01	अतिगण्ड	गर
12	28	3	मंगल	8:41	पू.भाद्रपदा	11:52	सुकर्मा	विष्टि
13	29	4	बुध	6:37	उ.भाद्रपदा	10:33	धृति	बालव
-	-	5	बुध	28:24	-	-	-	-
14	30	6	गुरु	26:08	रेवती	9:06	शूल	गर
15	31	7	शुक्र	23:50	अश्विनी	7:36	गण्ड	विष्टि
16	1 भाद्रपद	8	शनि	21:35	भरणी कृत्तिका	6:06 28:39	वृद्धि ध्रुव	बालव
17	2	9	रवि	19:25	रोहिणी	27:18	व्याघात	तैतिल
18	3	10	सोम	17:23	मृगशिरा	26:06	हर्ष	वणिज्
19	4	11	मंगल	15:33	आर्द्रा	25:08	वज्र	बालव
20	5	12	बुध	13:59	पुनर्वसु	24:27	सिद्धि	तैतिल
21	6	13	गुरु	12:45	पुष्य	24:09	व्यतिपात	वणिज्
22	7	14	शुक्र	11:57	आश्लेषा	24:17	वरीयान	शकुनि
23	8	30	शनि	11:37	मघा	24:55	परिघ	नाग

सूर्य दक्षिणायन, वर्षा – शरद् ऋतु
भाद्रपद कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:45	18:59	कुम्भ	गायत्री जपम्
5:46	18:58	कुम्भ	भद्रा 21:38 से। बुध मार्गी 12:57।
5:47	18:57	मीन में 6:11 से	भद्रा 8:41 तक। **अङ्गारकी श्रीगणेश (बहुला) चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 20:57।** कज्जली तीज।
5:47	18:56	मीन	गण्डमूल 10:33 से।
-	-	-	पंचमी तिथि का क्षय।
5:48	18:55	मेष में 9:06 से	भद्रा 26:08 से। पंचक समाप्त 9:06। चन्दन षष्ठी व्रत। चन्द्रोदय 22:12 हल षष्ठी।
5:48	18:54	मेष	भद्रा 12:59 तक। शीतला सप्तमी। गण्डमूल 7:36 तक। **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त)। भारतीय 79वाँ स्वतन्त्रता दिवस।**
5:49	18:53	वृष में 11:44 से	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव)। सूर्य मघा 1 सिंह में 25:52। भाद्रपद संक्रान्ति मु.30, पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रातः 8:16 तक।**
5:49	18:52	वृष	श्रीगुग्गा-नवमी। गोकुलाष्टमी। नन्दोत्सव।
5:50	18:51	मिथुन में	14:41 से। भद्रा 6:24 से 17:23 तक। स.सि.यो।
5:51	18:50	मिथुन	**अजा एकादशी व्रत।**
5:51	18:49	कर्क में 18:36 से	**वत्स द्वादशी (पूजा)। प्रदोष व्रत। शुक्र कर्क में 25:19।**
5:52	18:48	कर्क	भद्रा 12:45 से 24:21 तक। अघोरा चतुर्दशी मासशिवरात्रि व्रत। गण्डमूल 24:09 से।
5:52	18:47	सिंह में 24:17 से	**पितृकार्येषु अमावस्या। पिठोरी अमावस्या (मध्याह्नकाले)।** शरद् ऋतु आरम्भ।
5:53	18:46	सिंह	**भाद्रपद शनैश्चरी अमावस्या** (स्नानदानादि)। **कुशोत्पाटिनी अमावस्या "ॐ हुं फट् स्वाहा" से कुशोत्पाटनम्।** गण्डमूल 24:55 तक।

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
24 अगस्त से 7 सितम्बर 2025 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
24	9	1	रवि	11:49	पू.फाल्गुनी	26:06	शिव	बव
25	10	2	सोम	12:35	उ.फाल्गुनी	27:50	सिद्ध	कौलव
26	11	3	मंगल	13:55	हस्त	30:04	साध्य	गर
27	12	4	बुध	15:45	चित्रा	पूरादिन	शुभ	विष्टि
28	13	5	गुरु	17:57	चित्रा	8:44	शुक्ल	बालव
29	14	6	शुक्र	20:22	स्वाति	11:39	ब्रह्म	कौलव
30	15	7	शनि	22:47	विशाखा	14:38	ऐन्द्र	गर
31	16	8	रवि	24:58	अनुराधा	17:27	वैधृति	विष्टि
1सि.	17	9	सोम	26:44	ज्येष्ठा	19:55	विष्कुम्भ	बालव
2	18	10	मंगल	27:53	मूल	21:51	प्रीति	तैतिल
3	19	11	बुध	28:22	पूर्वाषाढ़ा	23:09	आयुष्मान्	वणिज्
4	20	12	गुरु	28:09	उत्तराषाढ़ा	23:44	सौभाग्य	बव
5	21	13	शुक्र	27:14	श्रवण	23:39	शोभन	कौलव
6	22	14	शनि	25:42	धनिष्ठा	22:56	अतिगण्ड	गर
7	23	15	रवि	23:39	शतभिषा	21:42	सुकर्मा	विष्टि

सूर्य दक्षिणायन, शरद् ऋतु
भाद्रपद शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:53	18:45	सिंह	
5:54	18:44	कन्या में	8:29 से। श्रीवराह जयन्ती (अपराह्न व्यापिनी)।
5:55	18:42	कन्या	भद्रा 26:50 से। हरितालिका तृतीया, गौरी तृतीया। **कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषेध)। चन्द्रास्त 20:18। पत्थर चौथ।** सामवेदि उपाकर्म।
5:55	18:41	तुला में	19:22 से। भद्रा 15:45 तक। **सिद्धि विनायक व्रत।**
5:56	18:40	तुला	**ऋषि-पंचमी।**
5:56	18:39	तुला	**सूर्य षष्ठी व्रत।**
5:57	18:38	वृश्चिक में 7:53 से	भद्रा 22:47 से। मुक्ताभरण/सन्तान सप्तमी व्रत। **बुध मघा 1 सिंह में 16:41।**
5:57	18:37	वृश्चिक	भद्रा 11:53 तक। श्रीमहालक्ष्मी व्रत आरम्भ। ग.मू. 17:27 से। **श्रीराधाष्टमी। दधीची जयन्ती। श्रीदूर्वाष्टमी।**
5:58	18:36	धनु में	19:55 से। श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन-सम्प्र.)।
5:58	18:34	धनु	गण्डमूल 21:51 तक।
5:59	18:33	मकर में 29:21 से	भद्रा 16:08 से 28:22 तक। **पद्मा एकादशी व्रत।**
5:59	18:32	मकर	**श्रीवामन-जयन्ती। अगस्त्य-उदय।**
6:00	18:31	मकर	**प्रदोष व्रत।** सर्वार्थ सिद्धि योग।
6:00	18:30	कुम्भ में 11:22 से	भद्रा 25:42 से। पंचक आरम्भ 11:22। कदली-व्रत-पूजन। ग्रहण वेधदिन। **अनन्त चतुर्दशी व्रत।**
6:01	18:28	कुम्भ	भद्रा 12:41 तक। **भाद्रपद पूर्णिमा। प्रोष्ठपदी महालय श्राद्ध आरम्भ। पूर्णिमा का श्राद्ध। श्रीसत्यनारायण व्रत। खग्रास चन्द्रग्रहण विवरण हेतु पृ.सं.23। सूतक दोपहर-12:57 से।**

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
8 सितम्बर से 21 सितम्बर 2025 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
8	24	1	सोम	21:12	पू.भाद्रपदा	20:03	धृति/शूल	बालव
9	25	2	मंगल	18:30	उ.भाद्रपदा	18:07	गण्ड	तैतिल
10	26	3	बुध	15:39	रेवती	16:03	वृद्धि	विष्टि
11	27	4	गुरु	12:46	अश्विनी	13:58	ध्रुव	बालव
12	28	5	शुक्र	9:59	भरणी	11:59	व्याघात	तैतिल
13	29	6	शनि	7:24	कृत्तिका	10:12	हर्ष	वणिज्
-	-	7	शनि	29:05	-	-	-	-
14	30	8	रवि	27:07	रोहिणी	8:41	वज्र/ सिद्धि	बालव
15	31	9	सोम	25:32	मृगशिरा	7:32	व्यतिपात	तैतिल
16	1 आषाढ़	10	मंगल	24:23	आर्द्रा	6:46	वरीयान	वणिज्
17	2	11	बुध	23:40	पुनर्वसु	6:26	परिघ	बव
18	3	12	गुरु	23:25	पुष्य	6:33	शिव	कौलव
19	4	13	शुक्र	23:38	आश्लेषा	7:06	सिद्ध	गर
20	5	14	शनि	24:17	मघा	8:06	साध्य	विष्टि
21	6	30	रवि	25:24	पू.फाल्गुनी	9:32	शुभ	चतुष्पाद्

सूर्य दक्षिणायन, शरद् ऋतु
आश्विन कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:02	18:27	मीन में 14:29 से	श्राद्ध पक्ष आरम्भ। प्रतिपदा का श्राद्ध। ग्रहण वेधदिन।
6:02	18:26	मीन	भद्रा 29:05 से। द्वितीया का श्राद्ध। ग्रहण वेधदिन। गण्डमूल 18:07 से। सर्वार्थ सिद्धि योग।
6:03	18:25	मेष में 16:03 से	भद्रा 15:39 तक। पंचक समाप्त 16:03। **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय 20:02।** तृतीया एवं चतुर्थी का श्राद्ध।
6:03	18:23	मेष	भरणी श्राद्ध। पंचमी का श्राद्ध। गण्डमूल 13:58 तक।
6:04	18:22	वृष में	17:31 से। चन्द्र षष्ठी व्रत। षष्ठी का श्राद्ध।
6:04	18:21	वृष	भद्रा 7:24 से 18:15 तक। मंगल तुला में 21:21। सप्तमी का श्राद्ध।
-	-	-	सप्तमी तिथि का क्षय।
6:05	18:20	मिथुन में 20:04 से	**श्रीमहालक्ष्मी व्रत सम्पन्न। शुक्र मघा 1 सिंह में 24:16।** अष्टमी का श्राद्ध। जीवित्पुत्रिका व्रत।
6:05	18:18	मिथुन	सौभाग्यवतीनां श्राद्ध। नवमी का श्राद्ध। मातृ-नवमी। बुध कन्या में 11:08।
6:06	18:17	कर्क में 24:29 से	भद्रा 12:58 से 24:23 तक। **सूर्य कन्या में 25:47। आश्विन संक्रान्ति,** मु.45। **पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रातः 8:11 तक।** दशमी का श्राद्ध।
6:06	18:16	कर्क	**इन्दिरा एकादशी व्रत।** विश्वकर्मा पूजन। एकादशी का श्राद्ध।
6:07	18:15	कर्क	संन्यासिनां श्राद्ध। द्वादशी का श्राद्ध। गण्डमूल 6:33 तक।
6:07	18:13	सिंह में 7:06 से	भद्रा 23:38 से। **प्रदोष व्रत।** मासशिवरात्रि व्रत। त्रयोदशी का श्राद्ध। गण्डमूल विचार। मघा श्राद्ध।
6:08	18:12	सिंह	भद्रा 11:58 तक। शस्त्र-विष-दुर्घटनादि (अपमृत्यु) से मृतों का श्राद्ध। गण्डमूल 8:06 तक।
6:08	18:11	कन्या में 15:58 से	**आश्विन /महालय अमावस्या।** सर्वपितृ श्राद्ध। चतुर्दशी/अमावस्या का श्राद्ध। श्राद्ध समाप्त। अज्ञात मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध। पितृ विसर्जन।

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
22 सितम्बर से 7 अक्टूबर 2025 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
22	7	1	सोम	26:57	उ.फाल्गुनी	11:24	शुक्ल	किंस्तुघ्न
23	8	2	मंगल	28:52	हस्त	13:40	ब्रह्म	बालव
24	9	3	बुध	पूरादिन	चित्रा	16:17	ऐन्द्र	तैतिल
25	10	3	गुरु	7:07	स्वाति	19:09	वैधृति	गर
26	11	4	शुक्र	9:34	विशाखा	22:09	विष्कुम्भ	विष्टि
27	12	5	शनि	12:04	अनुराधा	25:08	प्रीति	बालव
28	13	6	रवि	14:28	ज्येष्ठा	27:55	आयुष्मान्	तैतिल
29	14	7	सोम	16:32	मूल	30:18	सौभाग्य	वणिज्
30	15	8	मंगल	18:07	पूर्वाषाढ़ा	पूरादिन	शोभन	बव
1 अक्टू.	16	9	बुध	19:02	पूर्वाषाढ़ा	8:06	अतिगण्ड	बालव
2	17	10	गुरु	19:11	उत्तराषाढ़ा	9:13	सुकर्मा	तैतिल
3	18	11	शुक्र	18:34	श्रवण	9:35	धृति	वणिज्
4	19	12	शनि	17:10	धनिष्ठा	9:10	शूल	बालव
5	20	13	रवि	15:04	शतभिषा पू.भाद्रपदा	8:01 30:16	गण्ड	तैतिल
6	21	14	सोम	12:24	उ.भाद्रपदा	28:02	वृद्धि	वणिज्
7	22	15	मंगल	9:18	रेवती	25:28	ध्रुव/व्या	बव

सूर्य दक्षिणायन, शरद् ऋतु
आश्विन शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:09	18:10	कन्या	**शरद् नवरात्रे आरम्भ, घटस्थापन प्रातः 6:09 से 8:06 तक। अभिजित मुहूर्त 11:49 से 12:38 तक।** महाराजा अग्रसेन जयन्ती। मातामह (नाना/नानी) का श्राद्ध।
6:10	18:08	तुला में	26:56 से। चन्द्रदर्शन। मंगल स्वाति में 20:56।
6:10	18:07	तुला	
6:11	18:06	तुला	भद्रा 20:21 से।
6:11	18:05	वृश्चिक में	15:24 से। भद्रा 9:34 तक। उपाङ्ग ललिता व्रत।
6:12	18:03	वृश्चिक	गण्डमूल 25:08 से।
6:12	18:02	धनु में	27:55 से।
6:13	18:01	धनु	भद्रा 16:32 से 29:20 तक। सरस्वती आवाहन। भद्रकाली अवतार। गण्डमूल 30:18 तक।
6:13	18:00	धनु	**श्रीदुर्गाष्टमी**, महाष्टमी। सरस्वती बलिदान। बुध पश्चिम में उदय 28:47।
6:14	17:59	मकर में 14:27 से	**महानवमी** (व्रत, पूजा, बलि पूजन व होम हेतु)। सरस्वती बलिदान उ.षाभे। **नवरात्र समाप्त।**
6:15	17:57	मकर	नवरात्र व्रत पारणा। **विजयादशमी (दशहरा)।** सरस्वती विसर्जन (श्रवणे)। सीमोल्लङ्घन। अपराजिता शस्त्रादि पूजन। **बुध तुला में 27:43। महात्मा गाँधी जयन्ती।**
6:15	17:56	कुम्भ में 21:28 से	भद्रा 6:53 से 18:34 तक। पंचक आरम्भ 21:28। **पापांकुशा एकादशी व्रत। भरत मिलाप।**
6:16	17:55	कुम्भ	**शनि प्रदोष व्रत।** पद्मनाभ द्वादशी।
6:16	17:54	मीन में 24:46 से	श्रीसूर्यनारायण को अर्घ्यदान।
6:17	17:53	मीन	भद्रा 12:24 से 22:51 तक। **शरद् पूर्णिमा व्रत।** कोजागर व्रत। वाराह-चतुर्दशी। मेला शाकम्बरी देवी। महारास पूर्णिमा। गण्डमूल 28:02 से। श्रीसत्यनारायण व्रत।
6:18	17:51	मेष में 25:28 से	भद्रा 12:24 से 22:51 तक। **आश्विन पूर्णिमा** (स्नानदानादि)। पंचक समाप्त 25:28। महर्षि श्रीवाल्मीकि जयन्ती। कार्तिक स्नान-नियम आरम्भ। नवान्नभक्षण। आकाश दीपदान आरम्भ। कार्तिक द्विदलं त्यजेत्।

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
8 अक्टूबर से 21 अक्टूबर 2025 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
-	-	1	मंगल	29:54	-	-	-	-
8	23	2	बुध	26:23	अश्विनी	22:45	हर्ष	तैतिल
9	24	3	गुरु	22:55	भरणी	20:03	वज्र	वणिज्
10	25	4	शुक्र	19:39	कृत्तिका	17:32	सिद्धि	बव
11	26	5	शनि	16:44	रोहिणी	15:20	व्यतिपात	तैतिल
12	27	6	रवि	14:18	मृगशिरा	13:37	वरीयान	वणिज्
13	28	7	सोम	12:25	आर्द्रा	12:27	परि/शिव	बव
14	29	8	मंगल	11:10	पुनर्वसु	11:55	सिद्ध	कौलव
15	30	9	बुध	10:34	पुष्य	12:00	साध्य	गर
16	31	10	गुरु	10:36	आश्लेषा	12:42	शुभ	विष्टि
17	1 कार्तिक	11	शुक्र	11:13	मघा	13:58	शुक्ल	बालव
18	2	12	शनि	12:20	पू.फाल्गुनी	15:42	ब्रह्म	तैतिल
19	3	13	रवि	13:52	उ.फाल्गुनी	17:50	ऐन्द्र	वणिज्
20	4	14	सोम	15:45	हस्त	20:17	वैधृति	शकुनि
21	5	30	मंगल	17:55	चित्रा	22:59	विष्कुम्भ	नाग

सूर्य दक्षिणायन, शरद् ऋतु
कार्तिक कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
-	-	-	प्रतिपदा तिथि का क्षय।
6:18	17:50	मेष	गण्डमूल 22:45 तक।
6:19	17:49	वृष में 25:24 से	भद्रा 12:39 से 22:55 तक। **शुक्र कन्या में 10:48।**
6:19	17:48	वृष	**व्रत करवा चौथ (करक चतुर्थी)। चन्द्रोदय 20:07।**
6:20	17:47	मिथुन में	26:25 से। सर्वार्थ सिद्धि योग 15:20 तक।
6:21	17:46	मिथुन	भद्रा 14:18 से 25:22 तक। स्कन्द षष्ठी व्रत।
6:21	17:45	कर्क में	29:59 से। अहोई अष्टमी व्रत (चन्द्रोदय व्यापिनी)।
6:22	17:43	कर्क	
6:23	17:42	कर्क	भद्रा 22:35 से गण्डमूल 12:00 से।
6:23	17:41	सिंह में	12:42 से। भद्रा 10:36 तक।
6:24	17:40	सिंह	**रमा एकादशी व्रत।** गोवत्स द्वादशी। **सूर्य तुला में 13:45। कार्तिक संक्रान्ति मु.30। पुण्यकाल सं. प्रातः 7:21 से।** कौमुदि महोत्सव प्रारम्भ। ग.मू.13:58 तक।
6:25	17:39	कन्या में 22:12 से	**शनि प्रदोष व्रत। धन-त्रयोदशी। गुरु पुन. 4 कर्क में 19:46।** धन्वन्तरी जयन्ती। यम प्रीत्यर्थं दीपदान।
6:25	17:38	कन्या	भद्रा 13:52 से 26:49 तक। **नरक चतुर्दशी। श्रीहनुमान जयन्ती।** (उ.भारत) अर्धरात्रि व्यापिनी। यमाय तर्पण। मासशिवरात्रि व्रत। काली-पूजा।
6:26	17:37	कन्या	**दीपावली। श्रीमहालक्ष्मी पूजन।** कुबेर पूजा-**मूहुर्त सायं 17:46 से 19:21। (देखें पृ.125-126)।** केदार-गौरी व्रत। चोपड़ा पूजन। शारदा व्रत। दीपदान देवालये। कौमुदि महोत्सव सम्पन्न।
6:27	17:36	तुला में 9:36 से	**कार्तिक भौमवती अमावस्या** (देव-पितृकार्येषु अमावस्या)। श्रीमहावीर निर्वाण।

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
22 अक्टूबर से 5 नवम्बर 2025 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
22	6	1	बुध	20:17	स्वाति	25:52	प्रीति	किंस्तुघ्न
23	7	2	गुरु	22:47	विशाखा	28:51	आयुष्मान्	बालव
24	8	3	शुक्र	25:20	अनुराधा	पूरादिन	सौभाग्य	तैतिल
25	9	4	शनि	27:49	अनुराधा	7:52	शोभन	वणिज्
26	10	5	रवि	30:05	ज्येष्ठा	10:47	शोभन	बव
27	11	6	सोम	पूरादिन	मूल	13:28	अतिगण्ड	कौलव
28	12	6	मंगल	8:00	पूर्वाषाढ़ा	15:45	सुकर्मा	तैतिल
29	13	7	बुध	9:24	उत्तराषाढ़ा	17:30	धृति	वणिज्
30	14	8	गुरु	10:07	श्रवण	18:34	शूल/गंड	बव
31	15	9	शुक्र	10:04	धनिष्ठा	18:51	वृद्धि	कौलव
1 नवंबर	16	10	शनि	9:12	शतभिषा	18:21	ध्रुव	गर
2	17	11	रवि	7:32	पू.भाद्रपदा	17:04	व्याघात	विष्टि
-	-	12	रवि	29:08	-	-	-	-
3	18	13	सोम	26:06	उ.भाद्रपदा	15:06	हर्ष	कौलव
4	19	14	मंगल	22:37	रेवती	12:35	वज्र	गर
5	20	15	बुध	18:49	अश्विनी भरणी	9:40 30:34	सिद्धि	विष्टि

सूर्य दक्षिणायन, शरद् – हेमन्त ऋतु
कार्तिक शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:27	17:35	तुला	अन्नकूट। **गोवर्धन पूजा।** गोक्रीडा। बलिपूजा। मार्गपाली पूजा। विश्वकर्मा दिवस (पंजाब)।
6:28	17:34	वृश्चिक में 22:06 से	चन्द्रदर्शन। **भातृ (भाई) दूज। यमद्वितीया।** विश्वकर्मा पूजन। यमुना-स्नान। कलम-दवात पूजन।
6:29	17:33	वृश्चिक	**बुध वृश्चिक में 12:36।**
6:29	17:32	वृश्चिक	भद्रा 14:35 से 27:49 तक। दूर्वा गणपति व्रत। गण्डमूल 7:52 से।
6:30	17:31	धनु में	10:47 से। सौभाग्य-पंचमी। जया-पंचमी। ज्ञान-पंचमी।
6:31	17:30	धनु	मंगल वृश्चिक में 15:41। **सूर्य षष्ठी पर्व (बिहार)।** गण्डमूल 13:28 तक।
6:32	17:29	मकर में	22:15 से।
6:32	17:28	मकर	भद्रा 9:24 से 21:46 तक।
6:33	17:28	मकर	गोपाष्टमी।
6:34	17:27	कुम्भ में 6:49 से	पंचक आरम्भ 6:49 से। **अक्षय-कूष्माण्ड-नवमी।** आमला नवमी। जगधातृ पूजा। आरोग्य व्रत।
6:35	17:26	कुम्भ	भद्रा 20:22 से। **हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स्मार्त)। भीष्मपंचक आरम्भ।**
6:35	17:25	मीन में 11:27 से	भद्रा 7:32 तक। **हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)। तुलसी विवाह (सायं)। चातुर्मास्य-व्रत-नियम-समाप्त। शुक्र तुला में 13:15।** हरिप्रबोधोत्सव। त्रिस्पर्शा महाद्वादशी।
-	-	-	द्वादशी तिथि का क्षय।
6:36	17:24	मीन	**सोम प्रदोष व्रत।** गण्डमूल 15:06 से।
6:37	17:24	मेष में	12:35 से। भद्रा 22:37 से। पंचक समाप्त 12:35। **वैकुण्ठ चतुर्दशी।**
6:38	17:23	मेष	भद्रा 8:43 तक। **कार्तिक पूर्णिमा। श्रीगुरु नानक देव जयन्ती।** भीष्मपंचक समाप्त। कार्तिक स्नान समाप्त। आकाश दीपदान समाप्त। कार्तिक व्रतोद्यापन। श्रीसत्यनारायण व्रत। त्रिपुरोत्सव। **मंगल पश्चिम में अस्त 27:10।** गण्डमूल 9:40 तक।

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
6 नवम्बर से 20 नवम्बर 2025 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
6	21	1	गुरु	14:55	कृत्तिका	27:28	व्य/वरी	कौलव
7	22	2	शुक्र	11:06	रोहिणी	24:34	परिघ	गर
8	23	3	शनि	7:33	मृगशिरा	22:03	शिव	विष्टि
–	–	4		28:26	–	–	–	–
9	24	5	रवि	25:56	आर्द्रा	20:05	सिद्ध	कौलव
10	25	6	सोम	24:09	पुनर्वसु	18:49	साध्य	गर
11	26	7	मंगल	23:10	पुष्य	18:18	शुभ	विष्टि
12	27	8	बुध	22:59	आश्लेषा	18:36	शुक्ल	बालव
13	28	9	गुरु	23:35	मघा	19:38	ब्रह्म/ऐन्द्र	तैतिल
14	29	10	शुक्र	24:50	पू.फाल्गुनी	21:21	वैधृति	वणिज्
15	30	11	शनि	26:38	उ.फाल्गुनी	23:35	विष्कुम्भ	बव
16	1 मार्ग	12	रवि	28:48	हस्त	26:11	प्रीति	कौलव
17	2	13	सोम	पूरादिन	चित्रा	29:02	प्रीति	गर
18	3	13	मंगल	7:13	स्वाति	पूरादिन	आयुष्मान्	वणिज्
19	4	14	बुध	9:44	स्वाति	7:59	सौभाग्य	शकुनि
20	5	30	गुरु	12:17	विशाखा	10:59	शोभन	नाग

सूर्य दक्षिणायन, हेमन्त ऋतु
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:39	17:22	वृष में	11:47 से। मृगछोड़ी स्नान आ.। पद्मक योग।
6:39	17:21	वृष	भद्रा 21:20 से। शुक्र स्वाति में 21:06।
6:40	17:21	मिथुन में 11:15 से	भद्रा 7:33 तक। **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 19:52।** सौभाग्य सुन्दरी व्रत।
-	-	-	चतुर्थी तिथि का क्षय।
6:41	17:20	मिथुन	**बुध वक्री 24:29।**
6:42	17:19	कर्क में	13:03 से। भद्रा 24:09 से।
6:43	17:19	कर्क	भद्रा 11:40 तक। **गुरु वक्री 22:10।** गण्डमूल 18:18 से।
6:43	17:18	सिंह में	18:36 से। **श्रीकालभैरवाष्टमी।** भैरव-जयन्ती।
6:44	17:18	सिंह	गण्डमूल 19:38 तक।
6:45	17:17	कन्या में 27:52 से	भद्रा 12:13 से 24:50 तक। **वक्री बुध पश्चिम में अस्त 26:13।** बाल-दिवस।
6:46	17:17	कन्या	**उत्पन्ना एकादशी व्रत।**
6:47	17:16	कन्या	**सूर्य वृश्चिक में 13:36। मार्गशीर्ष संक्रान्ति, मु.30, पुण्यकाल सं. प्रातः 7:12 से।** आकाशदीपदान समाप्ति।
6:48	17:16	तुला में	15:35 से। **सोम प्रदोष व्रत।**
6:48	17:15	तुला	भद्रा 7:13 से 20:29 तक। मासशिवरात्रि व्रत। श्रीबालाजी जयन्ती।
6:49	17:15	वृश्चिक में	28:14 से। पितृकार्येषु अमावस्या।
6:50	17:15	वृश्चिक	**मार्गशीर्ष अमावस्या (स्नानदानादि)।**

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
21 नवम्बर से 4 दिसम्बर 2025 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
21	6	1	शुक्र	14:48	अनुराधा	13:56	अतिगण्ड	बव
22	7	2	शनि	17:12	ज्येष्ठा	16:47	सुकर्मा	कौलव
23	8	3	रवि	19:25	मूल	19:28	धृति	गर
24	9	4	सोम	21:23	पूर्वाषाढ़ा	21:54	शूल	वणिज्
25	10	5	मंगल	22:58	उत्तराषाढ़ा	23:58	गण्ड	बव
26	11	6	बुध	24:03	श्रवण	25:33	वृद्धि	कौलव
27	12	7	गुरु	24:31	धनिष्ठा	26:32	ध्रुव	गर
28	13	8	शुक्र	24:16	शतभिषा	26:50	व्याघात	विष्टि
29	14	9	शनि	23:16	पू.भाद्रपदा	26:23	हर्ष	बालव
30	15	10	रवि	21:30	उ.भाद्रपदा	25:11	वज्र/सिद्धि	तैतिल
1 दिसंबर	16	11	सोम	19:02	रेवती	23:18	व्यतिपात	बव
2	17	12	मंगल	15:58	अश्विनी	20:52	वरीयान	बालव
3	18	13	बुध	12:26	भरणी	18:00	परिघ	तैतिल
4	19	14	गुरु	8:38	कृत्तिका	14:54	शिव	वणिज्
-	-	15	शुक्र	28:44	-	-	-	-

सूर्य दक्षिणायन, हेमन्त ऋतु
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:51	17:14	वृश्चिक	गण्डमूल 13:56 से।
6:52	17:14	धनु में	16:47 से। चन्द्रदर्शन।
6:53	17:14	धनु	**वक्री बुध तुला में 20:26।** गण्डमूल 19:28 तक।
6:53	17:13	मकर में	28:27 से। भद्रा 8:24 से 21:23 तक। विनायक व्रत।
6:54	17:13	मकर	श्रीपंचमी। श्रीराम-विवाहोत्सव। नाग-पंचमी। वक्री बुध पूर्व में उदय 30:10।
6:55	17:13	मकर	स्कन्द षष्ठी। चम्पा षष्ठी (महाराष्ट्र)। **शुक्र वृश्चिक में 11:21।**
6:56	17:13	कुम्भ में 14:07 से	भद्रा 24:31 से। मित्र (विष्णु) सप्तमी। पंचक आरम्भ 14:07।
6:57	17:13	कुम्भ	भद्रा 12:24 तक। श्रीदुर्गाष्टमी। शनि मार्गी 9:21।
6:58	17:13	मीन में	20:34 से। **बुध मार्गी** 23:07। नन्दा नवमी।
6:58	17:13	मीन	गण्डमूल 25:11 से। सर्वार्थ सिद्धि योग।
6:59	17:12	मेष में 23:18 से	भद्रा 8:16 से 19:02 तक। पंचक समाप्त 23:18। **मोक्षदा एकादशी व्रत। श्रीगीता जयन्ती।**
7:00	17:12	मेष	**भौम प्रदोष व्रत।** अखण्ड द्वादशी। गण्डमूल 20:52 तक।
7:01	17:12	वृष में 23:14 से	पिशाचमोचन श्राद्ध। शिव चतुर्दशी व्रत। भरणी दीपम्। कृतिका दीपम्।
7:02	17:12	वृष	भद्रा 8:38 से 18:41 तक। **मार्गशीर्ष पूर्णिमा। श्रीदत्तात्रेय जयन्ती।** श्रीसत्यनारायण व्रत। त्रिपुरभैरव-जयन्ती। अन्नपूर्णा जयन्ती।
-	-	-	**पूर्णिमा तिथि का क्षय।**

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
5 दिसम्बर से 19 दिसम्बर 2025 तक

ता॰	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
5	20	1	शुक्र	24:56	रोहिणी	11:46	सिद्ध/साध्य	बालव
6	21	2	शनि	21:46	मृगशिरा आर्द्रा	8:49 30:14	शुभ	तैतिल
7	22	3	रवि	18:26	पुनर्वसु	28:12	शुक्ल	वणिज्
8	23	4	सोम	16:04	पुष्य	26:53	ब्रह्म	बालव
9	24	5	मंगल	14:30	आश्लेषा	26:23	ऐन्द्र	तैतिल
10	25	6	बुध	13:47	मघा	26:45	वैधृति	वणिज्
11	26	7	गुरु	13:58	पू.फाल्गुनी	27:56	विष्कुम्भ	बव
12	27	8	शुक्र	14:57	उ.फाल्गुनी	29:50	प्रीति	कौलव
13	28	9	शनि	16:39	हस्त	पूरादिन	आयुष्मान्	गर
14	29	10	रवि	18:50	हस्त	8:19	सौभाग्य	विष्टि
15	1 पौष	11	सोम	21:21	चित्रा	11:09	शोभन	बव
16	2	12	मंगल	23:58	स्वाति	14:10	अतिगण्ड	कौलव
17	3	13	बुध	26:33	विशाखा	17:12	सुकर्मा	गर
18	4	14	गुरु	29:00	अनुराधा	20:07	धृति	विष्टि
19	5	30	शुक्र	31:13	ज्येष्ठा	22:51	शूल	चतुष्पाद्

सूर्य दक्षिणायन, हेमन्त ऋतु
पौष कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
7:02	17:13	मिथुन में	22:16 से। वक्री गुरु पुनर्वसु 3 मिथुन में 17:25।
7:03	17:13	मिथुन	**बुध वृश्चिक में 20:31।**
7:04	17:13	कर्क में 22:39 से	भद्रा 7:56 से 18:26 तक। **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 19:49। मंगल मूल 1 धनु में 20:15।**
7:05	17:13	कर्क	गण्डमूल 26:53 से।
7:05	17:13	सिंह में	26:23 से। सर्वार्थ सिद्धि योग।
7:06	17:13	सिंह	भद्रा 13:47 से 25:53 तक। गण्डमूल 26:45 तक।
7:07	17:13	सिंह	
7:07	17:14	कन्या में 10:21 से	**शुक्र पूर्व में अस्त 26:10।** रुक्मिणी अष्टमी। अष्टका श्राद्ध।
7:08	17:14	कन्या	भद्रा 29:45 से।
7:09	17:14	तुला में	21:42 से। भद्रा 18:50 तक।
7:09	17:15	तुला	**सफला एकादशी व्रत। सूर्य मूल 1 धनु में 28:19। पौष संक्रान्ति मु.15,** पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रातः 10:43 तक।
7:10	17:15	तुला	
7:11	17:15	वृश्चिक में	10:26 से। भद्रा 26:33 से। **प्रदोष व्रत।**
7:11	17:16	वृश्चिक	भद्रा 15:47 तक। मासशिवरात्रि व्रत। गण्डमूल 20:07 से।
7:12	17:16	धनु में	22:51 से। **पौष अमावस्या।**

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
20 दिसम्बर 2025 से 3 जनवरी 2026 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
20	6	1	शनि	पूरादिन	मूल	25:22	गण्ड	किंस्तुघ्न
21	7	1	रवि	9:12	पूर्वाषाढ़ा	27:36	वृद्धि	बव
22	8	2	सोम	10:52	उत्तराषाढ़ा	29:32	ध्रुव	कौलव
23	9	3	मंगल	12:13	श्रवण	31:08	व्याघात	गर
24	10	4	बुध	13:12	धनिष्ठा	पूरादिन	हर्ष	विष्टि
25	11	5	गुरु	13:43	धनिष्ठा	8:19	वज्र	बालव
26	12	6	शुक्र	13:44	शतभिषा	9:01	सिद्धि	तैतिल
27	13	7	शनि	13:10	पू.भाद्रपदा	9:10	व्यतिपात	वणिज्
28	14	8	रवि	12:00	उ.भाद्रपदा	8:44	वरीयान	बव
29	15	9	सोम	10:13	रेवती अश्विनी	7:41 30:05	परिघ शिव	कौलव
30	16	10	मंगल	7:52	भरणी	27:59	सिद्ध	गर
-	-	11	मंगल	29:01	-	-	-	-
31	17	12	बुध	25:48	कृत्तिका	25:30	साध्य	बव
1जन	18	13	गुरु	22:23	रोहिणी	22:49	शुभ	कौलव
2	19	14	शुक्र	18:54	मृगशिरा	20:04	शुक्ल	गर
3	20	15	शनि	15:33	आर्द्रा	17:28	ब्रह्म/ऐन्द्र	बव

सूर्य दक्षिणायन, हेमन्त – शिशिर ऋतु
पौष शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
7:12	17:17	धनु	**शुक्र मूल 1 धनु में 7:44।** गण्डमूल 25:22 तक।
7:13	17:17	धनु	चन्द्रदर्शन। शिशिर ऋतु आरम्भ। आरोग्य व्रत।
7:13	17:18	मकर में	10:07 से। शक पौष आरम्भ।
7:14	17:18	मकर	भद्रा 24:43 से।
7:14	17:19	कुम्भ में	19:47 से। भद्रा 13:12 तक। पंचक आरम्भ 19:47।
7:15	17:19	कुम्भ	तुलसी पूजन महोत्सव। **श्री ओंकारानन्द जयन्ती। श्री ओंकारानन्द महोत्सव प्रारम्भ - 25 से 31 दिसम्बर तक।**
7:15	17:20	मीन में	27:11 से।
7:15	17:21	मीन	भद्रा 13:10 से 24:35 तक। मार्तण्ड सप्तमी। **श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती।**
7:16	17:21	मीन	श्रीदुर्गाष्टमी। महारुद्र व्रत। बुध मूल 1 धनु में 31:23। गण्डमूल 8:44 से।
7:16	17:22	मेष में 7:41 से	पंचक समाप्त 7:41 से। **बुध पूर्व में अस्त 29:14।** गण्डमूल 30:05 तक।
7:16	17:23	मेष	भद्रा 18:27 से 29:01 तक। **पुत्रदा एकादशी व्रत (स्मा.)।**
-	-	-	एकादशी तिथि का क्षय।
7:17	17:23	वृष में	9:23 से। **पुत्रदा एकादशी व्रत (वै.)।** सुजन्म द्वादशी। **श्री ओंकारानन्द महोतस्व समाप्त।**
7:17	17:24	वृष	**प्रदोष व्रत।** जनवरी (2026) ई. आरम्भ।
7:17	17:25	मिथुन में 9:26 से	भद्रा 18:54 से 29:14 तक। ईशान व्रत। श्रीसत्यनारायण व्रत।
7:17	17:25	मिथुन	**पौष पूर्णिमा। माघ स्नान आरम्भ।** शाकम्भरी जयन्ती।

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
4 जनवरी से 18 जनवरी 2026 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
4	21	1	रवि	12:31	पुनर्वसु	15:12	वैधृति	कौलव
5	22	2	सोम	9:57	पुष्य	13:25	विष्कुम्भ	गर
6	23	3	मंगल	8:02	आश्लेषा	12:18	प्रीति	विष्टि
-	-	4	मंगल	30:53	-	-	-	-
7	24	5	बुध	30:34	मघा	11:57	आयुष्मान्	कौलव
8	25	6	गुरु	31:06	पू.फाल्गुनी	12:25	सौभाग्य	गर
9	26	7	शुक्र	पूरादिन	उ.फाल्गुनी	13:41	शोभन	विष्टि
10	27	7	शनि	8:24	हस्त	15:40	अतिगण्ड	बव
11	28	8	रवि	10:21	चित्रा	18:12	सुकर्मा	कौलव
12	29	9	सोम	12:43	स्वाति	21:06	धृति	गर
13	30	10	मंगल	15:18	विशाखा	24:07	शूल	विष्टि
14	1 माघ	11	बुध	17:53	अनुराधा	27:04	गण्ड	बालव
15	2	12	गुरु	20:17	ज्येष्ठा	29:48	वृद्धि	तैतिल
16	3	13	शुक्र	22:22	मूल	पूरादिन	ध्रुव	गर
17	4	14	शनि	24:04	मूल	8:12	व्याघात	विष्टि
18	5	30	रवि	25:22	पूर्वाषाढ़ा	10:14	हर्ष	चतुष्पाद्

सूर्य उत्तरायण, शिशिर ऋतु
माघ कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
7:18	17:26	कर्क में	9:43 से।
7:18	17:27	कर्क	भद्रा 21:00 से। गण्डमूल 13:25 से।
7:18	17:28	सिंह में	12:18 से। भद्रा 8:02 तक। **श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 20:50।** गौरी-वक्रतुण्ड चतुर्थी।
-	-	-	चतुर्थी तिथि का क्षय।
7:18	17:28	सिंह	गण्डमूल 11:57 तक।
7:18	17:29	कन्या में	18:39 से। भद्रा 31:06 से।
7:18	17:30	कन्या	भद्रा 19:45 तक। स्वा. विवेकानन्द जयन्ती (तिथ्यनुसार)।
7:18	17:31	तुला में	28:53 से।
7:18	17:32	तुला	
7:18	17:32	तुला	भद्रा 26:01 से। **शुक्र मकर में 27:57।**
7:18	17:33	वृश्चिक में	17:21 से। भद्रा 15:18 तक। लोहड़ी पर्व (पं. आदि)।
7:18	17:34	वृश्चिक	**षट्तिला एकादशी व्रत। सूर्य मकर में 15:06। मकर (माघ) संक्रान्ति मु.30। पुण्यकाल सं. प्रातः 8:42 से। निरयण उत्तरायण आरम्भ।** गण्डमूल 27:04 से। सर्वार्थ सिद्धि योग।
7:18	17:35	धनु में	29:48 से। **तिल-द्वादशी। मंगल मकर में 28:27।**
7:17	17:36	धनु	भद्रा 22:22 से। **प्रदोष व्रत।** मासशिवरात्रि व्रत। गण्डमूल विचार।
7:17	17:37	धनु	भद्रा 11:13 तक। **बुध मकर में 10:23।** गण्डमूल 8:12 तक।
7:17	17:38	मकर में 16:41 से	**माघ (मौनी) अमावस्या। तीर्थस्नान माहात्म्य (हरिद्वार, प्रयागराजादि)।**

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
19 जनवरी से 1 फरवरी 2026 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
19	6	1	सोम	26:15	उत्तराषाढ़ा	11:53	वज्र	किंस्तुघ्न
20	7	2	मंगल	26:43	श्रवण	13:07	सिद्धि	बालव
21	8	3	बुध	26:48	धनिष्ठा	13:58	व्यतिपात	तैतिल
22	9	4	गुरु	26:29	शतभिषा	14:27	वरीयान	वणिज्
23	10	5	शुक्र	25:47	पू.भाद्रपदा	14:33	परिघ	बव
24	11	6	शनि	24:40	उ.भाद्रपदा	14:16	शिव	कौलव
25	12	7	रवि	23:11	रेवती	13:36	सिद्ध	गर
26	13	8	सोम	21:19	अश्विनी	12:33	साध्य/शुभ	विष्टि
27	14	9	मंगल	19:06	भरणी	11:09	शुक्ल	बालव
28	15	10	बुध	16:37	कृत्तिका	9:27	ब्रह्म	गर
29	16	11	गुरु	13:56	रोहिणी मृगशिरा	7:32 29:30	ऐन्द्र	विष्टि
30	17	12	शुक्र	11:10	आर्द्रा	27:28	वैधृति	बालव
31	18	13	शनि	8:26	पुनर्वसु	25:34	विष्कुम्भ	तैतिल
-	-	14	शनि	29:53	-	-	-	-
1 फरवरी	19	15	रवि	27:39	पुष्य	23:58	प्रीति आयुष्मान्	विष्टि

सूर्य उत्तरायण, शिशिर ऋतु
माघ शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
7:17	17:38	मकर	**गुप्त नवरात्र आरम्भ।**
7:17	17:39	कुम्भ में	25:36 से। पंचक आरम्भ 25:36 से। चन्द्रदर्शन मु.30।
7:16	17:40	कुम्भ	**गौरी तृतीया (गौंतरी) व्रत।**
7:16	17:41	कुम्भ	भद्रा 14:39 से 26:29 तक। **वरद्-तिल-कुन्द-चतुर्थी।**
7:16	17:42	मीन में 8:34 से	**वसन्त पञ्चमी। श्रीपञ्चमी। सरस्वती-लक्ष्मी पूजन।**
7:15	17:43	मीन	गण्डमूल 14:16 से।
7:15	17:44	मेष में 13:36 से	भद्रा 23:11 से। पंचक समाप्त 13:36। रथ सप्तमी व्रत (पूर्व-अरुणोदय वाली)। पुत्र आरोग्य व्रत। भानु सप्तमी।
7:14	17:45	मेष	भद्रा 10:15 तक। **भीष्माष्टमी। भारत गणतन्त्र दिवस (77वाँ)।** गण्डमूल 12:33 तक।
7:14	17:45	वृष में	16:45 से। **गुप्त नवरात्र समाप्त।**
7:13	17:46	वृष	भद्रा 27:17 से।
7:13	17:47	मिथुन में 18:31 से	भद्रा 13:56 तक। **जया एकादशी व्रत। भीष्म-द्वादशी।**
7:12	17:48	मिथुन	**प्रदोष व्रत।** तिल द्वादशी।
7:12	17:49	कर्क	20:01 से। भद्रा 29:35 से। **शुक्र पश्चिम में उदय 7:05।**
-	-	-	चतुर्दशी तिथि का क्षय।
7:11	17:50	कर्क	भद्रा 16:46 तक। **माघ पूर्णिमा। माघस्नान समाप्त।** श्रीगुरु रविदास जयन्ती। गण्डमूल 23:58 से। रविपुष्य योग।

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
2 फरवरी से 17 फरवरी 2026 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
2	20	1	सोम	25:53	आश्लेषा	22:48	सौभाग्य	बालव
3	21	2	मंगल	24:41	मघा	22:11	शोभन	तैतिल
4	22	3	बुध	24:10	पू.फाल्गुनी	22:13	अतिगण्ड	वणिज्
5	23	4	गुरु	24:23	उ.फाल्गुनी	22:58	सुकर्मा	बव
6	24	5	शुक्र	25:19	हस्त	24:24	धृति	कौलव
7	25	6	शनि	26:55	चित्रा	26:29	शूल	गर
8	26	7	रवि	29:02	स्वाति	29:03	गण्ड	विष्टि
9	27	8	सोम	पूरादिन	विशाखा	पूरादिन	वृद्धि	बालव
10	28	8	मंगल	7:28	विशाखा	7:55	ध्रुव	कौलव
11	29	9	बुध	9:59	अनुराधा	10:53	व्याघात	गर
12	1 फाल्गुन	10	गुरु	12:23	ज्येष्ठा	13:43	हर्ष	विष्टि
13	2	11	शुक्र	14:26	मूल	16:13	वज्र	बालव
14	3	12	शनि	16:02	पूर्वाषाढ़ा	18:16	सिद्धि	तैतिल
15	4	13	रवि	17:05	उत्तराषाढ़ा	19:48	व्यतिपात	वणिज्
16	5	14	सोम	17:35	श्रवण	20:48	वरीयान	शकुनि
17	6	30	मंगल	17:31	धनिष्ठा	21:16	परिघ	नाग

सूर्य उत्तरायण, शिशिर ऋतु
फाल्गुन कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
7:11	17:51	सिंह में 22:48 से	गण्डमूल विचार। शुक्र बाल्यत्व समाप्त 31:05।
7:10	17:52	सिंह	बुध कुम्भ में 21:51। गण्डमूल 22:11 तक।
7:09	17:52	कन्या में	28:20 से। भद्रा 12:26 से 24:10 तक।
7:09	17:53	कन्या	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 21:32। शुक्र कुम्भ में 25:10।**
7:08	17:54	कन्या	
7:07	17:55	तुला में	13:22 से। भद्रा 26:55 से।
7:07	17:56	तुला	भद्रा 15:59 तक। **बुध पश्चिम में उदय 27:40।** श्रीनाथ-उत्सव।
7:06	17:57	वृश्चिक में	25:11 से। जानकी-व्रत।
7:05	17:57	वृश्चिक	
7:04	17:58	वृश्चिक	भद्रा 23:11 से। गण्डमूल 10:53 से। स.सि.यो।
7:03	17:59	धनु में 13:43 से	भद्रा 12:23 तक। **सूर्य कुम्भ में 28:08। फाल्गुन संक्रान्ति मु.30, पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रातः 10:32 तक।** स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती।
7:03	18:00	धनु	**विजया एकादशी व्रत।** गण्डमूल 16:13 तक।
7:02	18:01	मकर में	24:42 से। **शनि प्रदोष व्रत।**
7:01	18:01	मकर	भद्रा 17:05 से 29:20 तक। **श्रीमहाशिवरात्रि व्रत। आश्रम में भगवान महादेव की रात में 4 प्रहर की पूजा एवं अभिषेक।** स.सि.यो।
7:00	18:02	मकर	
6:59	18:03	कुम्भ में 9:06 से	**फाल्गुन भौमवती अमावस्या।** पंचक आरम्भ 9:06।

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
18 फरवरी से 3 मार्च 2026 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
18	7	1	बुध	16:58	शतभिषा	21:16	शिव	बव
19	8	2	गुरु	15:59	पू.भाद्रपदा	20:52	सिद्ध	कौलव
20	9	3	शुक्र	14:39	उ.भाद्रपदा	20:08	साध्य	गर
21	10	4	शनि	13:01	रेवती	19:07	शुभ	विष्टि
22	11	5	रवि	11:10	अश्विनी	17:55	शुक्ल	बालव
23	12	6	सोम	9:10	भरणी	16:34	ब्रह्म	तैतिल
-	-	7	सोम	31:03	-	-	-	-
24	13	8	मंगल	28:52	कृत्तिका	15:07	ऐन्द्र/वैधृ	विष्टि
25	14	9	बुध	26:41	रोहिणी	13:39	विष्कुम्भ	बालव
26	15	10	गुरु	24:34	मृगशिरा	12:12	प्रीति	तैतिल
27	16	11	शुक्र	22:33	आर्द्रा	10:49	आयुष्मान्	वणिज्
28	17	12	शनि	20:44	पुनर्वसु	9:35	सौभाग्य	बव
1 मार्च	18	13	रवि	19:10	पुष्य	8:35	शोभन	कौलव
2	19	14	सोम	17:56	आश्लेषा	7:52	अतिगण्ड	वणिज्
3	20	15	मंगल	17:08	मघा	7:32	सुकर्मा	बव

सूर्य उत्तरायण, वसन्त ऋतु
फाल्गुन शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:58	18:04	कुम्भ	चन्द्रदर्शन मु.15। वसन्त ऋतु आरम्भ।
6:57	18:05	मीन में 15:00 से	**फूलेरा दूज।**(मथुरा-वृन्दावन)। श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती।
6:56	18:05	मीन	भद्रा 25:50 से। गण्डमूल 20:08 से।
6:55	18:06	मेष में	19:07 से। भद्रा 13:01 तक। पंचक समाप्त 19:07।
6:54	18:07	मेष	याज्ञवल्क्य जयन्ती। गण्डमूल 17:55 तक। स.सि.यो.।
6:53	18:08	वृष में	22:13 से। भद्रा 31:03 से। **मंगल कुम्भ में 11:49।**
-	-	-	सप्तमी तिथि का क्षय।
6:52	18:08	वृष	भद्रा 17:58 तक। **होलाष्टक आरम्भ।** अन्नपूर्णा-अष्टमी। लक्ष्मी-सीताष्टमी।
6:51	18:09	मिथुन में	24:55 से।
6:50	18:10	मिथुन	**बुध वक्री 12:16।**
6:49	18:10	कर्क में 27:53 से	भद्रा 11:34 से 22:33 तक। **आमलकी एकादशी व्रत।**
6:48	18:11	कर्क	**गोविन्द द्वादशी।** वक्री बुध पश्चिम में अस्त।
6:47	18:12	कर्क	**प्रदोष व्रत। शुक्र मीन में 24:56।** महेश्वर व्रत। गण्डमूल 8:35 से।
6:46	18:13	सिंह में 7:52 से	भद्रा 17:56 से 29:32 तक। **होलिका-दहन (प्रदोषकाले)।** श्रीसत्यनारायण व्रत। लक्ष्मीनारायण व्रत।
6:45	18:13	सिंह	**फाल्गुन पूर्णिमा। ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण (पृ.24)। सूतक प्रातः 6:20 से। होली पर्व। होलाष्टक समाप्त।** श्री चैतन्य महाप्रभु जयन्ती। होलिका विभूति धारण। धूलिवन्दन। गण्डमूल 7:32 तक।

श्री विक्रम सम्वत् 2082, शाके 1947
4 मार्च से 19 मार्च 2026 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
4	21	1	बुध	16:49	पू.फाल्गुनी	7:39	धृति	कौलव
5	22	2	गुरु	17:04	उ.फाल्गुनी	8:18	शूल	गर
6	23	3	शुक्र	17:54	हस्त	9:30	गण्ड/वृद्धि	विष्टि
7	24	4	शनि	19:18	चित्रा	11:16	ध्रुव	बालव
8	25	5	रवि	21:12	स्वाति	13:32	ध्रुव	कौलव
9	26	6	सोम	23:28	विशाखा	16:12	व्याघात	गर
10	27	7	मंगल	25:55	अनुराधा	19:05	हर्ष	विष्टि
11	28	8	बुध	28:20	ज्येष्ठा	22:00	वज्र	बालव
12	29	9	गुरु	30:30	मूल	24:44	सिद्धि	तैतिल
13	30	10	शुक्र	पूरादिन	पूर्वाषाढ़ा	27:03	व्यतिपात	वणिज्
14	1चै	10	शनि	8:11	उत्तराषाढ़ा	28:49	वरीयान	विष्टि
15	2	11	रवि	9:17	श्रवण	29:56	परिघ	बालव
16	3	12	सोम	9:41	धनिष्ठा	30:22	शिव	तैतिल
17	4	13	मंगल	9:23	शतभिषा	30:09	सि/ सा	वणिज्
18	5	14	बुध	8:26	पू.भाद्रपदा	29:21	शुभ	शकुनि
19	6	30	गुरु	6:53	उ.भाद्रपदा	28:05	शुक्ल	नाग
-	-	1	गुरु	28:53	-	-	-	-

सूर्य उत्तरायण, वसन्त ऋतु
चैत्र कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:44	18:14	कन्या में 13:46 से	**होला-मेला। ध्वजारोहण।** ग्रहणवेधदिन। **वसन्तोत्सव।** धुलैण्डी। आम्रकुसुम प्राशन।
6:43	18:15	कन्या	भद्रा 29:29 से। **सन्त तुकाराम जयन्ती।**
6:41	18:15	तुला में 22:19 से	भद्रा 17:54 तक। **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 21:12।**
6:40	18:16	तुला	श्रीभगवन्नारायण जयन्ती।
6:39	18:17	तुला	**शनि पश्चिम में अस्त 18:29।** श्रीरंग-पंचमी।
6:38	18:17	वृश्चिक में	9:30 से। भद्रा 23:28 से। एकनाथ षष्ठी। स.सि.यो. 16:12 से।
6:37	18:18	वृश्चिक	भद्रा 12:42 तक। शीतला सप्तमी (पूजा)। मेला शीतलामाता (कुराली, पंजाब)। गण्डमूल 19:05 से।
6:36	18:19	धनु में	22:00 से। गुरु मार्गी 8:56। **शीतलाष्टमी व्रत।**
6:35	18:19	धनु	गण्डमूल 24:44 तक।
6:33	18:20	धनु	भद्रा 19:21 से।
6:32	18:20	मकर में 9:33 से	भद्रा 8:11 तक। **सूर्य मीन में 25:01। चैत्र संक्रान्ति, मु.45, पुण्यकाल संक्रान्ति अगले दिन प्रातः 7:25 तक। वक्री बुध पूर्व में उदय 18:33।**
6:31	18:21	मकर	**पापमोचनी एकादशी व्रत।**
6:30	18:22	कुम्भ में 18:14 से	पंचक आरम्भ 18:14। **सोम प्रदोष व्रत।** वारुणी योग 30:22 से।
6:29	18:22	कुम्भ	भद्रा 9:23 से 20:55 तक। **वारुणी पर्व (योग)** सूर्योदय से 9:23 तक। मासशिवरात्रि व्रत।
6:27	18:23	मीन में	23:36 से। **पितृकार्येषु अमावस्या।**
6:26	18:24	मीन	**चैत्र अमावस्या (प्रातः 6:53 तक)। वि.सं.2082 पूर्ण। 'रौद्र' नामक नव वि.सं. 2083 आरम्भ। चैत्र (वासन्त) नवरात्र प्रा.। घटस्थापन प्रातः 6:52 से 7:43 तक। अभिजित मुहूर्त 12:05 से 12:53। संवत्सर फल श्रवण।** ध्वजारोहण। तैलाभ्यंग। श्रीदुर्गापूजा। गुड़ी-पड़वा। गण्डमूल 28:05 से।
-	-	-	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का क्षय।

शुभ व्यापार आरम्भ मुहूर्त
विक्रम सम्वत् 2082, सन् 2025 ई०

दिनाङ्क	वार	लग्नविवरण
14 अप्रै.	सोम	मु. 9:45 बाद, सूर्यपूज्य
20 अप्रै.	रवि	मु.11:49 बाद (गुरुवेधऽभावः)
21 अप्रै.	सोम	मु.12:37 बाद ल.5 (बु.शु.दा.)
25 अप्रै.	शुक्र	मु. 8:54 से 11:45 तक, चं.पूज्य
30 अप्रै.	बुध	मु.12:02 तक, (अक्षय-तृतीया)
1 मई	गुरु	मु.11:24बाद अभि.
2 मई	शुक्र	मु. 13:04 बाद
3 मई	शनि	ल.2, 3, अभि., 5 (शु.दा.)-भौमयुति परिहार
4 मई	रवि	मु.7:20 तक (भौम युति परिहार)
8 मई	गुरु	ल.2,3, अभि.(भद्रापरि.)
12 मई	सोम	मु. प्रातः 6:17 तक
18 मई	रवि	ल. 3, अभिजित्
19 मई	सोम	मु. 10:19 तक, (10:19 से क्रान्तिसाम्य दोष)
28 मई	बुध	ल. 3, 6
31 मई	शनि	ल. 3, अभिजित्
7 जून	शनि	मु.9:40 से 11:17 तक (11:17 से 14:17 तक परिघ दोष)
12 जुला.	शनि	ल.4, अभि., 8
13 जुला.	रवि	ल.4, अभि., 8

दिनाङ्क	वार	लग्नविवरण
21 जुला.	सोम	ल.8, 9, अभिजित्
25 जुला.	शुक्र	ल.8, 9, अभिजित्
1 अग.	शुक्र	ल. 7, मु. 12:38 तक(12:38 से क्रान्तिसाम्य दोष)
3 अग.	रवि	मु. 9:43 बाद
4 अग.	सोम	मु.9:13 तक
7 अग.	गुरु	मु.14:01 बाद
8 अग.	शुक्र	मु.14:13 बाद
9 अग.	शनि	ल. 7, अभिजित्
18 अग.	सोम	ल. 7, अभिजित्
20 अग.	बुध	ल.6,7, मु. 13:49 तक
25 अग.	सोम	ल. 7, 8, 9
28 अग.	गुरु	मु. 8:44 बाद
29 अग.	शुक्र	मु.11:39 तक ल.7
4 सितं.	गुरु	ल. 7, 8, अभिजित्
5 सितं.	शुक्र	ल. 7, 8, अभिजित् (मु.13:53 तक)
22 सितं.	सोम	मु. 11:24 तक (चं.दा.)
27 सितं.	शनि	ल. 8, अभिजित् (मृत्युबाण परिहार)
2 अक्टू.	गुरु	ल. 8, 9, अभिजित्
3 अक्टू.	शुक्र	ल. 8, 9, अभिजित्
4 अक्टू.	शनि	मु. प्रातः 9:10 तक
11 अक्टू.	शनि	मु. 14:07 तक
12 अक्टू.	रवि	मु. 10:55 तक (10:55 से परिघ दोष)

शुभ व्यापार आरम्भ मुहूर्त्त, वि. सं. 2082 (2025–2026)

दिनाङ्क	वार	लग्नविवरण
15 अक्टू.	बुध	मु. 10:34 से 12:00 तक
22 अक्टू.	बुध	ल. 8, 10
24 अक्टू.	शुक्र	ल. 8, 10, अभिजित्
29 अक्टू.	बुध	ल. 10, मु. 9:51 बाद (भद्रा-परिहार)
3 नवं.	सोम	ल.10, अभिजित्
7 नवं.	शुक्र	ल.10, अभिजित्
8 नवं.	शनि	मु.प्रातः7:33तककेवल
10 नवं.	सोम	ल. 10, अभिजित्

दिनाङ्क	वार	लग्नविवरण
27 नवं.	गुरु	ल. 10, मु. 12:09 तक
30 नवं.	रवि	ल.10, मु. 12:09 तक
4 दिसं.	गुरु	मु.14:54 बाद,भद्रा.परिहार
5 दिसं.	शुक्र	अभि. (मृत्युबाण दोष परि.)
6 दिसं.	शनि	ल. ९, मु. 8:49 तक
सन् 2026 ई०		
21 फर.	शनि	मु. 13:01 बाद
9 मार्च	सोम	मु. 16:12 बाद

यज्ञोपवीत (उपनयन) मुहूर्त्त, वि. सं. 2082 (2025–2026)

दिनाङ्क	वार	लग्नविवरण
2 अप्रैल	बुध	ल.2 (चन्द्र.दान)
7 अप्रैल	सोम	ल.2 अभिजित्
9 अप्रैल	बुध	मु. 9:57 बाद।
14 अप्रैल	सोम	मु.9:45 बाद, सूर्य पूजा
18 अप्रैल	शुक्र	मु.8:21 बाद, ल.2 (चंद्र दान), 3
30 अप्रैल	बुध	मु.12:02 तक। ल.2 (चं.दा.)
2 मई	शुक्र	ल.2, अभिजित्
7 मई	बुध	ल.2
8 मई	गुरु	ल.2,3 अभिजित् (केतु युति परिहार)।
18 मई	रवि	मु.प्रात 6:19 बाद, ल.3

दिनाङ्क	वार	लग्नविवरण
28 मई	बुध	ल.3।
29 मई	गुरु	ल.3, अभिजित्
31 मई	शनि	ल.3, अभिजित्
7 जून	शनि	मु.9:40से 11:17 तक
सन् 2026 ई०		
4 फरवरी	बुध	ल.1 (चं.दा.)
19 फरवरी	गुरु	ल.1 (चं.दा.),2,3
21 फरवरी	शनि	मु.13:01 से 13:48 तक।

चूडाकर्म मुहूर्त
विक्रम सम्वत् 2082, सन् 2025–2026 ई॰

दिनाङ्क	वार	नक्षत्र	मुहूर्त्तविवरण
14 अप्रैल	सोम	स्वा.	मु. प्रातः 9:45 बाद, सूर्य पूज्य
21 अप्रैल	सोम	श्रव.	मु. 12:37 बाद
24 अप्रैल	गुरु	शत.	ल. 2, 3, मु. 10:49 तक
1 मई	गुरु	मृग.	मु. 11:24 से 14:21 तक
2 मई	शुक्र	पुन.	मु. 13:04 बाद
3 मई	शनि	पु/पु	ल. 2, 3, अभि. (वैश्यानां केवलम्)
4 मई	रवि	पुष्य	मु. प्रातः 7:20 तक (ब्राह्मणों के लिए)(भौम-युति परि.)
12 मई	सोम	स्वा.	मु. प्रातः 6:17 तक
15 मई	गुरु	ज्ये.	अभिजित् (सूर्य पूजा)
19 मई	सोम	श्रव.	मु. 10:19 तक (10:19 से 15:24 तक क्रान्तिसाम्य)
28 मई	बुध	मृग.	ल. 3, 6
31 मई	शनि	पुष्य	ल. 3,6 अभि.(वैश्यानां)
7 जून	शनि	स्वा.	मु. 9:40 बाद (वैश्यानां)
आश्विन-नवरात्रों में-आवश्यके			
28 सितं.	रवि	ज्ये.	ल.8, अभिजित 9 (ब्राह्मणों के लिए)
सन् 2026 ई॰			
18 फरवरी	बुध	शत.	ल.1, 2, 3
21 फरवरी	शनि	रेव.	मु. 13:01 बाद (वैश्यानां केवलम्)
9 मार्च	सोम	अनु.	मु.16:12 बाद
11 मार्च	बुध	ज्ये.	ल.1, 2, 3

मुहूर्त्त सम्बन्धी

✻ बालक के मुण्डन जन्म या गर्भाधान काल से 1,3,5 इत्यादि विषम वर्षों में करने का विधान है। कुछ विद्वान् बालक के जन्म मास एवं जन्म नक्षत्र और विरूद्ध चन्द्र (4,8,12) वें चूड़ाकरण करने का निषेध मानते हैं-(चूड़ामणि) ज्येष्ठ (बड़े) लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में करने का निषेध माना गया है। कुल परम्परानुसार नवरात्रों में सिद्ध शक्ति पीठ या तीर्थ स्थलों पर बिना निर्धारित मुहूर्त्तों के भी मुण्डन आदि शुभ कार्य सम्पादित कराते हैं।

शुभ विवाह मुहूर्त
विक्रम सम्वत् 2082, सन् 2025 ई०

दिनाङ्क	वार	लग्न काल, ग्रह दान-पूजा आदि विवरण।
14 अप्रैल	सोम	15:36 तक सूर्य क्षीणांश। रा.ल.8 (गु.दा.)। मृत्युबाण दोष 27:50 से।
16 अप्रैल	बुध	24 :18 तक व्यतीपात दोष, रा.ल. 11
18 अप्रैल	शुक्र	परिघ दोष परिहार, दि.ल. 2 (8 :21 बाद, अष्टमस्थ चं.परिहार, चं. पूज्य), 3 (चं.दा.), गोधूलि, रा.ल. 8 (गु.दा.), 11-दग्धा तिथिदोष परिहार।
19 अप्रैल	शनि	दि.ल. 2 (अष्टमस्थ चं.परिहार,चंद्र पूज्य), 3 (10 :21 तक,चं.दा.)
20 अप्रैल	रवि	पादेन गुरु वेधऽभावः, गोधूलि, रा.ल. 8 (गु.दा.), 11
21 अप्रैल	सोम	गोधूलि, रा.ल. 8 (गु.दा.)
22 अप्रैल	मंगल	दि.ल. 2 (गु.दा.), 3 (अष्टमस्थ चं.परिहार,चं.के.दा.) गोधूलि, रा.ल. 8 (गु.दा.), 11 (चं.दा.), 29:29 बाद भद्रा-दोष (भूलोके)।
25 अप्रैल	शुक्र	दि.ल.3 (8:54 बाद, मं.के.दा.),11:45 से कृष्ण त्रयोदशी, 12:31 से वैधृति दोष।
29 अप्रैल	मंगल	रा.ल. 8 (गु.दा.), 11
30 अप्रैल	बुध	दि.ल. 2 (चं.गु.दान व पूज्य),3 (चं.गु.के.दा.)12:02 से 14:26 तक अतिगण्ड दोष। रा.ल.8 (चं.गु.दा.), 11 (भद्रा परिहार-स्वर्गे)
1 मई	गुरु	भद्रा-परिहार (स्वर्गे), दि.ल. 2 (चं.गु.दा.), 3 (चं.गु.दा.)
5 मई	सोम	14:50 तक क्रान्तिसाम्य दोष,गोधूलि, रा.ल.8 (गु.दा.),11 (चं.दा.)
6 मई	मंगल	दि.ल. 2 (गु.दा.), 3 (के.दा.)
7 मई	बुध	केतु-युति परिहार, गोधूलि (18:17 बाद), रा.ल. 8 (गु.दा.) 23:25 से 24:58 तक भद्रा-दोष (भूलोके), तदुपरान्त परिहार, रा.ल. 11
8 मई	गुरु	केतु-युति परिहार, दि.ल.2 (गु.दा.),3 (के.दा.), गोधूलि, रा.ल. 8 (21:07 तक)
12 मई	सोम	दि.ल. 2 (6:17 तक)-अत्यल्पकाले (भद्रा-परिहार)
15 मई	गुरु	12:38 तक सूर्य क्षीणांश, गोधूलि, रा.ल. 9 (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं.गु.दा.), 11 (मं.दा.), 1 (बु.दा.)-28:03 से दग्धा तिथिदोष परिहार।

शुभ विवाह मुहूर्त
विक्रम सम्वत् 2082, सन् 2025 ई०

दिनाङ्क	वार	लग्न काल, ग्रह दान-पूजा आदि विवरण।
17 मई	शनि	गोधूलि, रा.ल. 9 (अष्टमस्थ मं. परिहार, चं.मं.गु.दा. व पूज्य), 24:01 से 30:19 तक गुरु पादवेध।
18 मई	रवि	प्रातः 6:19 तक गुरुपादवेध, दि.ल. 3 (के.दा.), गोधूलि। गोधूलि, रा.ल. 9 (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. गु.दा.), 1
19 मई	सोम	दि.ल. 3 (अष्टमस्थ चं. परिहार चं. पूज्य दान वा), 10:19 से 15:24 तक क्रान्तिसाम्य दोष, गोधूलि (19:30 तक)
28 मई	बुध	दि.ल. 3 (चं.गु.दा.), गोधूलि, 19:09 से 21:09 तक शूल दोष, रा.ल. 9 (21:09 बाद), 1 (श.दा.)
1 जून	रवि	रा.ल. 9 (21:37 बाद, अष्टमस्थ मं.परिहार, मं.गु.दा.), 1 (शु.श.दा.)
2 जून	सोम	दि.ल. 3 (बु.गु.दा.), 7 (शु.दा.), गोधूलि, रा.ल. 9 (20:36 तक, अष्टमस्थ मं. परिहार), 20:36 से भद्रादोष (भूलोके)
4 जून	बुध	केतु युति परिहार, मृत्युबाण दोष प्रातः 7:10 तक, दि.ल. 3 (7:10 बाद)(गु.दा.), 7, गोधूलि, रा.ल. 9 (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं.गु.दा.), 1 (27:36 तक, शु.दा.)
7 जून	शनि	दि.ल. 4 (9:40 बाद, मं.दा.),7 (चं.शु.दा.), 19:29 से गुरु वार्धक्य प्रारम्भ।
11 जुलाई	शुक्र	21:56 तक वैधृति-विष्कम्भ दोष, रा.ल. 1 (मं.के.दा.), (2 शु.दा.)
12 जुलाई	शनि	दि.ल. 4 (6:36 तक , बु.दा.)-अत्यल्पकाले। दि.ल. 4 (6:36 बाद, बु.दा.), 8 (गु.शु.दा. व पूजा), गोधूलि, रा.ल. 1, 2 (शु.दा.)
13 जुलाई	रवि	दि.ल. 4 (6:53 तक, बु.दा.) अल्पकाले। दि.ल. 4 (6:53 बाद, चं.बु.दा.), 8 (गु.शु.दा.), 18:51 से 24:50 तक बुधपादवेध। 18:54 से 25:03 तक भद्रा-दोष (भूलोके), रा.ल. 1 (25:03 बाद, मं.दा.), 2 (शु.दा.)
20 जुलाई	रवि	रा.ल. 1 (के.दा.), 2 (चं.शु.के.दा.), 3 (चं.गु.दा.)
21 जुलाई	सोम	दि.ल. 8 (गु.शु.दा.), 9 (षष्ठस्थ शु. परिहार, गु.शु. पूज्य) शुक्र युति परिहार, रा.ल. 1 (मं.के.दा.), 2 (चं.शु.दा.), 3 (चं.गु.दा.)

शुभ विवाह मुहूर्त
विक्रम सम्वत् 2082, सन् 2025 ई०

दिनाङ्क	वार	लग्न काल, ग्रह दान-पूजा आदि विवरण।
28 जुलाई	सोम	भौम-युति परिहार, 23:25 तक भद्रा-दोष (भूलोके), रा.ल. 2 (के.दा.), 3 (गु.शु.दा.)
29 जुलाई	मंगल	भौमयुति परिहार, दि.ल. 7 (चं.मं.दा.), 9 (गु.शु.दा.)
31 जुलाई	गुरु	रा.ल. 2 (षष्ठस्थ चंद्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभप्रदा, चं.दा. व पूजा), 3 (गु.शु.दा.)-28:59 से भद्रा परिहार (पाताले)
1 अगस्त	शुक्र	भद्रा परिहार-पाताले (18:12 तक), दि.ल. 7 (चं.मं.दा., 12:38 तक), 12:38 से 17:48 तक-क्रान्तिसाम्य दोष, 9 (17:48 बाद, गु.शु.दा., धनु लग्न अल्पकाले), गोधूलि, रा.ल. 2 (षष्ठस्थ चं.परिहार, के.दा.), 3 (गु.शु.दा.)
3 अगस्त	रवि	दि.ल. 7, 9 (चं.गु.शु.दा.), गोधूलि, रा.ल. 2 (चं.दा.), 3 (षष्ठस्थ चं. परिहार, चन्द्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभप्रदा, चं.गु.शु.दा.)
6 अगस्त	बुध	प्रातः 8:30 तक वैधृति-विष्कम्भ दोष, दि.ल. 7 (13:00 तक)
7 अगस्त	गुरु	दि.ल.9 (गु.शु.दा.) गोधूलि, रा.ल.2 (के.दा.),3(गु.शु.दा.)
8 अगस्त	शुक्र	दि.ल. 7 (भद्रा परिहार-पाताले)। दि.ल. 9 (गु.शु.दा.), गोधूलि, रा.ल. 2, 3 (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं.गु.शु.दान) (भद्रा-परिहार-पाताले)
9 अगस्त	शनि	दि.ल. 7 (मं.दा.)
13 अगस्त	बुध	22:31 तक भौम-वेध, रा.ल. 2 (के.दा.), 3 (गु.शु.दा.)-28:24 से दग्धातिथि-दोष परिहार।
17 अगस्त	रवि	प्रातः 8:04 तक व्याघात दोष, सूर्य क्षीणांश-14:21 तक, दि.ल. 9 (षष्ठस्थ चं.परिहार,गु.शु.दा.). गोधूलि, रा.ल. 2 (चं.दा.), 3 (गु.शु.दा.)
18 अगस्त	सोम	मृत्युबाण दोष 15:18 तक, 17:23 तक दग्धा तिथि परिहार दि.ल. 9 (15:18 बाद, चं.गु.शु.दा.), गोधूलि, 23:00 से 26:36 तक वज्र दोष। रा.ल. 3 (26:36 बाद, चं.गु.दा.), 4 (चं.बु.शु.दा.)-भद्रा परिहार (स्वर्गे)
24 अगस्त	रवि	रा.ल. 3 (26:06 बाद, गु.दा.) , (बु.शु.दा.)
25 अगस्त	सोम	दि.ल. 7, (चं.मं.दा.), 8 (गु.रा. पूज्य), 9 (अष्टमस्थ शु. परिहार, गु.शु.दा.) गोधूलि, रा.ल. 2 (के.दा.), 3 (गु.दा.), 4 (27:50 तक, .शु.रा.दा.)

शुभ विवाह मुहूर्त
विक्रम सम्वत् 2082, सन् 2025 ई०

दिनाङ्क	वार	लग्न काल, ग्रह दान-पूजा आदि विवरण।
28 अगस्त	गुरु	मृत्युबाण दोषऽभावः, दि.ल. 7 (चं.दा.), 8 (चं.गु.दा.), 9 (अष्टमस्थ शु. परिहार, गु.शु.दा.) गोधूलि, रा.ल. 2 (षष्ठस्थ चं. परिहार, चन्द्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभप्रदा, के.दा.), 3 (गु.दा.), 4
29 अगस्त	शुक्र	दि.ल.7 (11:39 तक, चं.दा.)
1 सितंबर	सोम	पादेन गुरु वेद्यऽभाव,रा.ल.2(के.दा.),3(गु.दा.),4(शु.दा.)
2 सितंबर	मंगल	प्रातः 8:53 से 15:22 तक गुरु पादवेध, दि.ल. 9 (15:22 बाद, अष्टमस्थ शु. परिहार), 10 (गु.शु.दा.) रा.ल. 2,3 (गु.दा.), 4 (शु.दा.)
3 सितंबर	बुध	भद्रा परिहार (पाताले), रा.ल. 2 (23:09 बाद, अष्टमस्थ चं. परिहार), ३ (चं.गु.दा.)
4 सितंबर	गुरु	दि.ल. 7, 8 (गु.दा.), 9 (अष्टमस्थ शु. परिहार),10 (चं. दा.) रा.ल. 2 (23:44 तक)
5 सितंबर	शुक्र	पादेन बुध वेधऽभाव, दि.ल. 7, 8 (13:53 तक), 13:53 से 16:17 तक अतिगण्ड दोष, 14:38 से 27:09 तक मृत्युबाण दोष। मृत्युबाण 27:09 तक, पादेन शुक्र वेधऽभाव, रा.ल. 4 (27:09 बाद, चं.दा.)
22 सितंबर	सोम	सूर्य-युति परिहार, दि.ल. 8 (11:24 तक, चं.-गु. पूज्य दान वा)
26 सितंबर	शुक्र	रा.ल. 3 (षष्ठस्थ चं. परिहार, गु.दा.), 4
27 सितंबर	शनि	प्रातः 7:06 से 19:19 तक मृत्युबाण दोष, रा.ल. 2 (चं.के. दान), 3 (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. गु. पूज्य), 4 (कर्क लग्न 25:08 तक, अत्यल्पकाले)
29 सितंबर	सोम	प्रातः 10:31 से 17:07 तक पादेन गुरु वेध, 16:32 से भद्रा परिहार है (पाताले), रा.ल. 2 (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं.गु. दा.),3 (चं.गु.दा.)
1 अक्टूबर	बुध	दि.ल. 8 (गु.रा.दा.), 9 (चं.गु.दा.), 10 (अष्टमस्थ शु.परिहार, चं.शु.दा.), रा.ल. 2, 3 (अष्टमस्थ चं.गु.दा.), 4 (चं.दा.)
2 अक्टूबर	गुरु	दि.ल. 8 (गु.रा.दा.), 9 (चं.गु.दा.), 10 (अष्टमस्थ शु. परिहार, चं.शु.दा.), रा.ल. 2 (के.दा.), 3 (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं.गु.दा.), 4 (चं.दा.)

शुभ विवाह मुहूर्त
विक्रम सम्वत् 2082, सन् 2025 ई०

दिनाङ्क	वार	लग्न काल, ग्रह दान-पूजा आदि विवरण।
3 अक्टूबर	शुक्र	दि.ल. 8 (गु.रा.दा.), 9 (गु.दा.), 10 (अष्टमस्थ शु. परिहार, चं.शु.दा.), रा.ल. 2 (21:46 तक के.दा.), 21:46 से 23:46 तक शूल दोष, 3 (23:46 बाद, चं.गु. दा.), भद्रा परिहार (पाताले)
7 अक्टूबर	मंगल	प्रातः 9:31 से 13:07 तक व्याघात दोष, दि.ल. 9 (13:07 बाद), 10 (अष्टमस्थ शु.परिहार, शु. पूज्य), 20:07 से 25:28 तक पादेन शुक्र-वेध।
11 अक्टूबर	शनि	14:07 तक व्यतीपात-दोष, दि.ल. 10 (14:07 बाद)-अल्पकाले। रा.ल. 2 (चं.दा.), 3 (चं.गु.दा.), 4 (शु.दा.)
22 अक्टूबर	बुध	दि.ल. 8 (चं.मं.दा. व चं. पूज्य), 10 (गु.दा.), गोधूलि, रा.ल. 3, 4 (गु.शु.दा.) (सभी लग्नों में चन्द्र पूज्य दान वा-क्षीण चंद्र है।)
24 अक्टूबर	शुक्र	दि.ल. 8, 10 (गु.दा.), गोधूलि, रा.ल. 3 (लग्नेश बुध एवं चं. षष्ठस्थ का परिहार), 4 (चं.गु.दा.)
26 अक्टूबर	रवि	प्रातः 10:47 से 17:27 तक पादेन गुरु वेध, गोधूलि, रा.ल. 3 (लग्नेश बु. षष्ठस्थ-परिहार, चं.बु.दा.)
28 अक्टूबर	मंगल	गोधूलि, रा.ल. 3 (लग्नेश बुध षष्टस्थ परिहार, चं.बु.दा.), 4 (22:15 तक चंद्रमा षष्ठस्थ है, तदुपरान्त सप्तमस्थ, कर्क लग्न 22:15 बाद, चं.गु.दा.), मृत्युबाणऽभावः
29 अक्टूबर	बुध	प्रातः 7:51 से 9:51 तक शूल दोष, भद्रा-परिहार (पाताले), दि.ल. 10 (चं.गु.दा.)
30 अक्टूबर	गुरु	रा.ल. 4 (चं.गु.दा.)
31 अक्टूबर	शुक्र	प्रातः 9:34 से 13:46 तक क्रान्तिसाम्य दोष, गोधूलि।
2 नवंबर	रवि	गोधूलि, रा.ल.3 (लग्नेश बु. षष्ठस्थ परिहार, बु.दा.), 4 (गु. दा.),-भीष्मपंचक विचार।
7 नवंबर	शुक्र	दि.ल. 10 (गु.दा.), गोधूलि, रा.ल. 3 (लग्नेश बु. षष्ठस्थ परिहार, चं.बु.गु.दा.), 4- भद्रा परिहार
8 नवंबर	शनि	दि.ल. 10 (गु.दा.), गोधूलि, रा.ल. 3 (लग्नेश बु. षष्ठस्थ परिहार)
12 नवंबर	बुध	रा.ल. 3 (लग्नेश बु. षष्ठस्थ परिहार, बु. पूज्य), 4 (गु.दा.)
13 नवंबर	गुरु	दि.ल. 10 (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं.गु. पूज्य दान वा)
22 नवंबर	शनि	16:47 से 23:27 तक पादेन गुरु वेध, रा.ल. 7 (शु.दा.)

शुभ विवाह मुहूर्त
विक्रम सम्वत् 2082, सन् 2025–2026 ई॰

दिनाङ्क	वार	लग्न काल, ग्रह दान-पूजा आदि विवरण।
24 नवंबर	सोम	रा.ल. 4 (21:54, गु.दा.) (षष्ठस्थ चं. परिहार), 7 (बु.शु.दा.)
26 नवंबर	बुध	क्रान्तिसाम्य दोष 11:08 तक, मृत्युबाण दोष 11:15 से 23:07 तक, रा.ल. 4 (चं.गु.दा.) मृत्युबाण दोषऽभावः, रा.ल. 7 (बु.दा.)
27 नवंबर	गुरु	दि.ल. 10 (चं.गु.दा., 12:09 तक), 12:09 से 15:45 तक व्याघात दोष, गोधूलि, रा.ल. 3 (षष्ठस्थ शु.परिहार, शु.दा.), 24:31 से भद्रादोष (भूलोके)
29 नवंबर	शनि	वज्रदोष परिहार, रा.ल. 7 (षष्ठस्थ चं.परिहार, चं. पूज्य)-दग्धा तिथि परिहार।
30 नवंबर	रवि	दग्धा तिथि दोष परिहार, दि.ल. 10 (गु.दा.), 1 (बु.दा.), गोधूलि, रा.ल. 3 (षष्ठस्थ शु.परिहार, शु.दा.), 4 (गु.दा.) रा.ल. 7 (28:22 तक, तुला लग्न अल्पकाले), 28:22 से व्यतीपात दोष।
4 दिसंबर	गुरु	गोधूलि, रा.ल. 3 (षष्ठस्थ शु.परिहार, शु.दा.), 4 (गु.दा.), 7 (बु.दा.)
6 दिसंबर	शनि	दि.ल. 9 (8:49 तक, गु.दा., धनु लग्न अत्यल्पकाले)
		सन् 2026 ई॰
4 फरवरी	बुध	24:10 तक भद्रादोष (भूलोके), रा.ल. 7 (24:04 बाद) (चं.दा.), 8 (रा.दा.), 9 (गु.दा.),
5 फरवरी	गुरु	दि.ल.1(षष्ठस्थ चं. परिहार, चं.दा.), 2, 3 (अष्टमस्थ मं.परिहार, मं.दा.), गोधूलि।
10 फरवरी	मंगल	दि.ल.1(अष्टमस्थ चं. परिहार, चं.दा.), 2 (चं.दा.), 3 (अष्टमस्थ मं.परिहार, मं.दा.), गोधूलि, रा.ल. 7 (चं.दा.), 8 (25:42 तक केवल) 25:42 से 29:18 तक-व्याघात दोष।
20 फरवरी	शुक्र	रा.ल. 7 (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं.दा.), 8 (25:50 तक), 25:50 से भद्रा-दोष (भूलोके)
21 फरवरी	शनि	13:01 तक भद्रा-दोष (भूलोके), प्रातः 8:09 से 11:55 तक क्रान्तिसाम्य दोष, दि.ल. 3
24 फरवरी	मंगल	29:38 तक वैधृति-विष्कम्भ दोष, रा.ल. 10 (29:38 बाद)-होलाष्टक विचार।
11 मार्च	बुध	रा.ल. 8 (रा.दा.), 9 (गु.दा.), 10 (शु.दा.)
12 मार्च	गुरु	दि.ल. 1 (श.दा.), 9:59 से व्यतीपात दोष।

गृहारम्भ मुहूर्त्त
विक्रम सम्वत् 2082, सन् 2025–2026 ई०

दिनाङ्क	वार	नक्षत्र	मुहूर्त्तविवरण
14 अप्रैल	सोम	स्वा.	मु. 9:45 बाद, सूर्य पूजा
24 अप्रैल	गुरु	शत.	मु. 10:49 तक
25 अप्रैल	शुक्र	उ.भा.	मु. 8:54 से 11:45 तक
30 अप्रैल	बुध	रोहि.	ल. 2, 3 मु. 12:02 तक
1 मई	गुरु	मृग.	मु. 11:24 से 14:21 तक
2 मई	शुक्र	पुन.	मु. 13:04 बाद
8 मई	गुरु	उ.फा.	ल. 2,3, अभि.(भद्रा परिहार)
12 मई	सोम	स्वा.	मु. प्रातः 6:17 तक (भद्रा परिहार)
19 मई	सोम	श्रव.	ल.3, मु.10:19 तक (10:19 से 15:24 तक क्रान्तिसाम्य)
24 मई	शनि	आश्वि.	मु. 13:48 बाद
12 जुलाई	शनि	उ.षा.	मु. प्रातः 6:36 तक (अल्पकाले)
12 जुलाई	शनि	श्रव.	मु.6:36 बाद
21 जुलाई	सोम	रोहि.	ल. 8, 9, अभिजित्
25 जुलाई	शुक्र	पुष्य.	ल. 8, 9, अभिजित् (सूर्य युति परिहार)
1 अगस्त	शुक्र	स्वा.	ल.7, मु. 12:38 तक
7 अगस्त	गुरु	उ.षा.	मु. 14:07 तक, ल.7
9 अगस्त	शनि	श्रव.	मु. 14:07 तक, ल. 7
11 अगस्त	सोम	शत.	ल. 7, अभिजित्
18 अगस्त	सोम	मृग	ल. 6, 7, अभिजित्
25 अगस्त	सोम	उ.फा.	ल. 7, 8, अभिजित्
28 अगस्त	गुरु	स्वा.	मु. 8:44 बाद, ल. 7, 8
29 अगस्त	शुक्र	स्वा.	ल. 7, मु. 11:39 तक
4 सितं.	गुरु	उ.षा.	ल. 7, 8, अभिजित्
22 अक्टू.	बुध	स्वा.	ल. 8, 10
24 अक्टू.	शुक्र	अनु.	ल. 8, 10, अभिजित्
7 नवंबर	शुक्र	रोहि.	ल. 10, अभिजित्
8 नवंबर	शनि	मृग.	मु. प्रातः 7:33 तक
4 दिसं.	गुरु	रोहि.	मु. 14:54 बाद, भद्रा परि.
5 दिसं.	शुक्र	रो/मृ	अभि., मृत्युबाण परिहार
सन् 2026 ई०			
21 फर.	शनि	रेव.	मु. 13:01 बाद

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त
विक्रम सम्वत् 2082, सन् 2025–2026 ई०

दिनाङ्क	वार	मुहूर्त्तविवरण
14 अप्रैल	सोम	मु. 9:45 बाद, सूर्य पूज्य
21 अप्रैल	सोम	मु. 12:37 बाद
24 अप्रैल	गुरु	मु. 10:49 तक, ल.2
25 अप्रैल	शुक्र	मु. 8:54 से 11:45 तक
30 अप्रैल	बुध	ल.2,3(मु. 12:02 तक)
1 मई	गुरु	मु.11:24 से 14:21 तक
2 मई	शुक्र	मु. 13:04 बाद
3 मई	शनि	मु. 12:34 बाद
8 मई	गुरु	ल. 2,3, अभिजित् (भद्रा एवं केतु युति परिहार)
12 मई	सोम	मु. प्रातः 6:17 तक (भद्रा परिहार)
19 मई	सोम	ल.3, मु.10:19 तक (10:19 से क्रान्तिसाम्य)
28 मई	बुध	ल. 3
31 मई	शनि	ल. 3, अभिजित्
7 जून	शनि	मु. 9:40 बाद, ल. 4,अभि., 7

दिनाङ्क	वार	मुहूर्त्तविवरण
12 जुलाई	शनि	मु. प्रातः 6:36 तक (अल्पकाले)
12 जुलाई	शनि	मु.6:36 बाद, ल. 4, 5, अभि.
22 अक्टू.	बुध	ल. 8, 10
24 अक्टू.	शुक्र	ल.8, 10, अभिजित्
29 अक्टू.	बुध	ल.10, (मु.9:51 बाद) भद्रा परिहार
31 अक्टू.	शुक्र	मु.13:46 बाद
3 नवंबर	सोम	ल. 10, अभिजित्
7 नवंबर	शुक्र	ल. 10, अभिजित्
8 नवंबर	शनि	मु. 7:33 तक
10 नवंबर	सोम	ल. 10, अभिजित्
27 नवंबर	गुरु	ल.10 मु. 12:09 तक
4 दिसं.	गुरु	मु.14:54 बाद, भद्रा-परिहार
5 दिसंबर	शुक्र	ल.9 (मृत्युबाण परिहार)
6 दिसंबर	शनि	ल.9, मु.8:49 तक
सन् 2026 ई०		
21 फरवरी	शनि	मु. 13:01 बाद

नूतन (नवीन) गृह प्रवेश में अपने पण्डित जी द्वारा बतलायें गये मुहूर्त्त पर नव-गृह में वास्तु-पूजा शान्ति, नवगृह पूजन-शान्ति, स्वस्तिवाचन एवं पंचदेव, सवत्सा गोपूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों एवं आश्रितजनों को यथाशक्ति भोजन-दानादि तथा कन्या पूजन, जलपूर्ण कलश तथा ब्राह्मणों को आगे करके शंख ध्वनि एवं सुहागिनों द्वारा मंगल-गान सहित नव-गृह में प्रवेश करना चाहिये।

✻ राहु काल ✻

वार	समय
रवि	सायं 4:30 से 6:00 तक।
सोम	प्रातः 7:30 से 9:00 तक।
मङ्गल	सायं 3:00 से 4:30 तक।
बुध	दोपहर 12:00 से 1:30 तक।
गुरु	दोपहर 1:30 से 3:00 तक।
शुक्र	प्रातः 10:30 से 12:00 तक।
शनि	प्रातः 9:00 से 10:30 तक।

✻ यम काल ✻

वार	समय
रवि	दोपहर 12:00 से 1:30 तक।
सोम	प्रातः 10:30 से 12:00 तक।
मङ्गल	प्रातः 9:00 से 10:30 तक।
बुध	प्रातः 7:30 से 9:00 तक।
गुरु	प्रातः 6:00 से 7:30 तक।
शुक्र	दोपहर 3:00 से 4:30 तक।
शनि	दिन 1:30 से 3:00 तक।

राहु काल एवं यमकाल प्रतिदिन 1:30 घण्टे का होता हैं, जिसका प्रत्येक वार में निर्धारित समय सारणी में दिया गया है। राहु काल एवं यम काल में शुभ कार्य न करें।

✻ सर्वार्थ सिद्धि योग ✻

वार	नक्षत्र
रवि	पुष्य, अश्विनी, हस्त, मूल, उत्तराषाढ़ा, उत्तरभाद्रपदा, उत्तरफाल्गुनी।
सोम	श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा।
मङ्गल	अश्विनी, आश्लेषा, उ.भाद्रपदा, कृत्तिका।
बुध	रोहिणी, अनुराधा, हस्त, कृत्तिका, मृगशिरा।
गुरु	रेवती, अनुराधा, पुनर्वसु, पुष्य।
शुक्र	रेवती, अनुराधा,अश्विनी, पुनर्वसु, श्रवण।
शनि	श्रवण, रोहिणी, स्वाति।

अमृत सिद्धि योग

वार	नक्षत्र
रवि	हस्त
सोम	मृगशिरा
मङ्गल	अश्विनी
बुध	अनुराधा
गुरु	पुष्य
शुक्र	रेवती
शनि	रोहिणी

सर्वार्थ सिद्धि योग का प्रारम्भ व समाप्ति काल
विक्रम सम्वत् 2082, सन् 2025 ई०

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
30 मार्च	16:35	31 मार्च	सू.उ.	7 जून	9:40	8 जून	सू.उ.
1 अप्रैल	11:07	3 अप्रै.	सू.उ.	9 जून	15:31	10 जून	सू.उ.
5 अप्रैल	5:21	5 अप्रै.	सू.उ.	14 जून	24:22	15 जून	सू.उ.
6 अप्रैल	सू.उ.	7 अप्रै.	6:25	19 जून	23:17	21 जून	सू.उ.
8 अप्रैल	सू.उ.	8 अप्रै.	7:55	23 जून	15:17	24 जून	सू.उ.
16 अप्रै.	सू.उ.	17 अप्रै.	5:55	25 जून	सू.उ.	25 जून	10:41
20 अप्रै.	11:49	21 अप्रै.	सू.उ.	26 जून	8:47	27 जून	7:22
21 अप्रै.	12:37	22 अप्रै.	सू.उ.	2 जुला.	11:08	3 जुला.	सू.उ.
27 अप्रै.	सू.उ.	27 अप्रै.	24:39	5 जुला.	सू.उ.	5 जुला.	16:50
29 अप्रै.	सू.उ.	29 अप्रै.	18:47	7 जुला.	सू.उ.	7 जुला.	25:12
30 अप्रै.	सू.उ.	1 मई	सू.उ.	12 जुला.	6:36	13 जुला.	सू.उ.
2 मई	13:04	3 मई	सू.उ.	17 जुला.	सू.उ.	18 जुला.	26:14
4 मई	सू.उ.	4 मई	12:54	21 जुला.	सू.उ.	22 जुला.	सू.उ.
11 मई	3:15	11 मई	सू.उ.	24 जुला.	सू.उ.	25 जुला.	सू.उ.
14 मई	सू.उ.	14 मई	11:47	30 जुला.	सू.उ.	30 जुला.	21:53
18 मई	सू.उ.	18 मई	18:53	4 अग.	सू.उ.	4 अग.	9:13
19 मई	सू.उ.	19 मई	19:30	8 अग.	14:28	9 अग.	14:24
23 मई	16:03	24 मई	सू.उ.	12 अग.	11:52	13 अग.	सू.उ.
25 मई	सू.उ.	25 मई	11:12	14 अग.	सू.उ.	15 अग.	7:36
27 मई	सू.उ.	27 मई	5:33	17 अग.	4:39	17 अग.	सू.उ.
28 मई	सू.उ.	28 मई	24:29	18 अग.	सू.उ.	18 अग.	26:06
29 मई	23:39	30 मई	21:29	21 अग.	सू.उ.	21 अग.	24:09
5 जून	3:36	5 जून	सू.उ.	24 अग.	26:06	25 अग.	सू.उ.

सर्वार्थ सिद्धि योग का प्रारम्भ व समाप्ति काल
विक्रम सम्वत् 2082, सन् 2025 – 2026 ई०

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
5 सितं.	सू.उ.	5 सितं.	23:39
9 सितं.	सू.उ.	9 सितं.	18:07
11 सितं.	सू.उ.	11 सितं.	13:58
13 सितं.	10:12	14 सितं.	सू.उ.
15 सितं.	सू.उ.	15 सितं.	7:32
18 सितं.	सू.उ.	18 सितं.	6:33
21 सितं.	9:32	22 सितं.	सू.उ.
26 सितं.	22:09	27 सितं.	सू.उ.
29 सितं.	3:55	29 सितं.	सू.उ.
3 अक्टू.	सू.उ.	3 अक्टू.	9:35
6 अक्टू.	6:16	6 अक्टू.	सू.उ.
7 अक्टू.	25:28	8 अक्टू.	सू.उ.
11 अक्टू.	सू.उ.	11 अक्टू.	15:20
17 अक्टू.	13:58	18 अक्टू.	सू.उ.
19 अक्टू.	सू.उ.	20 अक्टू.	सू.उ.
24 अक्टू.	4:51	25 अक्टू.	सू.उ.
26 अक्टू.	10:47	27 अक्टू.	सू.उ.
2 नवं.	17:04	3 नवं.	सू.उ.
4 नवं.	12:35	5 नवं.	सू.उ.
6 नवं.	6:34	6 नवं.	सू.उ.
10 नवं.	18:49	11 नवं.	सू.उ.
11 नवं.	18:18	12 नवं.	सू.उ.
14 नवं.	सू.उ.	14 नवं.	21:21

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
16 नवं.	सू.उ.	16 नवं.	26:11
20 नवं.	10:59	21 नवं.	13:56
23 नवं.	सू.उ.	23 नवं.	19:28
30 नवं.	सु.उ.	30 नवं.	25:11
2 दिसं.	सु.उ.	2 दिसं.	20:52
3 दिसं.	18:00	4 दिसं.	सु.उ.
8 दिसं.	4:12	8 दिसं.	26:53
9 दिसं.	सु.उ.	9 दिसं.	26:23
14 दिसं.	सु.उ.	14 दिसं.	8:19
17 दिसं.	17:12	18 दिसं.	20:07
22 दिसं.	3:36	22 दिसं.	सु.उ.
23 दिसं.	5:32	23 दिसं.	सु.उ.
28 दिसं.	सु.उ.	28 दिसं.	8:44
31 दिसं.	3:59	1 जन.	सु.उ.
(सन् 2026 ई.)			
4 जन.	15:12	5 जन.	13:25
6 जन.	सु.उ.	6 जन.	12:18
14 जन.	सु.उ.	14 जन.	27:04
18 जन.	10:14	19 जन.	सु.उ.
19 जन.	11:53	20 जन.	सु.उ.
25 जन.	13:36	26 जन.	सु.उ.
27 जन.	11:09	29 जन.	सु.उ.
31 जन.	3:28	31 जन.	सु.उ.
1 फर.	सू.उ.	1 फर.	23:58

सर्वार्थ सिद्धि योग का प्रारम्भ व समाप्ति काल
विक्रम सम्वत् 2082, सन् 2026 ई०

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
7 फर.	26:29	8 फर.	सू.उ.	25 फर.	सू.उ.	26 फर.	सू.उ.
11 फर.	सू.उ.	11 फर.	10:53	27 फर.	10:49	28 फर.	सू.उ.
15 फर.	सू.उ.	15 फर.	19:48	1 मार्च	सू.उ.	1 मार्च	8:35
16 फर.	सू.उ.	16 फर.	20:48	7 मार्च	11:16	8 मार्च	सू.उ.
20 फर.	20:08	21 फर.	सू.उ.	9 मार्च	16:12	10 मार्च	सू.उ.
22 फर.	सू.उ.	22 फर.	17:55	15 मार्च	4:49	15 मार्च	सू.उ.
24 फर.	सू.उ.	24 फर.	15:07	20 मार्च	4:05	20 मार्च	सू.उ.

❋ गुप्त नवरात्रि ❋

आषाढ़ (जून - जुलाई) तथा माघ (जनवरी - फरवरी) मास की शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होने वाली नवरात्रि को गुप्त नवरात्रि अथवा गायत्री नवरात्रि भी कहते हैं। इसे मुख्य रूप से हिन्दीभाषी प्रान्त में मनाया जाता है। उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश की मातायें इन नवरात्रों में व्रत उपवास आदि का पालन करती हैं। सभी उपासकों में भी माँ वाराही के उपासकों के लिये इन नवरात्रों का महत्व मुख्य रूप से विशेष ही होता है।

हिमाचल प्रदेश में इन्हें गुह्य नवरात्र के नाम से भी जाना जाता है। विशेष अनुष्ठान, जप, पूजन तथा काम्य प्रयोगों के लिये ये नवरात्र श्रेष्ठ माने गये हैं।

❋ कलंक चौथ चन्द्रदर्शन दोषनिवारक मन्त्र ❋

सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः।
सुकुमारक! मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः॥

हे सुंदर सलोने कुमार! इस मणि के लिये सिंह ने प्रसेन को मारा हैं और जाम्बवन्त ने उस सिंह का संहार किया हैं।अतः तुम रो मत। अब इस स्यमंतक मणि पर तुम्हारा ही अधिकार हैं।

अमृत सिद्धि योग का प्रारम्भ व समाप्ति काल
विक्रम सम्वत् 2082, सन् 2025–2026 ई॰

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
16 अप्रै.	सू.उ.	17 अप्रै.	5:55
14 मई	सू.उ.	14 मई	11:47
23 मई	16:03	24 मई	सू.उ.
20 जून	सू.उ.	20 जून	21:45
21 जुला.	21:07	22 जुला.	सू.उ.
24 जुला.	16:44	25 जुला.	सू.उ.
16 अग.	28:39	17 अग.	सू.उ.
18 अग.	सू.उ.	18 अग.	26:06
21 अग.	सू.उ.	21 अग.	24:09
13 सितं.	10:12	14 सितं.	सू.उ.
15 सितं.	सू.उ.	15 सितं.	7:32
18 सितं.	सू.उ.	18 सितं.	6:33

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
7 अक्टू.	25:28	8 अक्टू.	सू.उ.
11 अक्टू.	सू.उ.	11 अक्टू.	15:20
19 अक्टू.	17:50	20 अक्टू.	सू.उ.
4 नवं.	12:35	5 नवं.	सू.उ.
16 नवं.	सू.उ.	16 नवं.	26:11
2 दिसं.	सू.उ.	2 दिसं.	20:52
14 दिसं.	सू.उ.	14 दिसं.	8:19
17 दिसं.	17:12	18 दिसं.	सू.उ.
(सन् 2026 ई.)			
14 जन.	सू.उ.	14 जन.	27:04
11 फर.	सू.उ.	11 फर.	10:53
20 फर.	20:08	21 फर.	सू.उ.

✻ अमृत सिद्धि योग ✻

कुछ विद्वानों के मतानुसार सर्वार्थ सिद्धि योग एवं अमृत सिद्धि योग के संयोग से रविवार से शनिवार तक (क्रमशः) 5,6,7,8,9,10,11 तिथियाँ एवं प्रारम्भ की 6 घड़ियाँ विषाक्त एवं त्याज्य मानी गई है।

ॐ

✻ गण्डमूल के नक्षत्र ✻

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती
पिता को भय	शान्ति से शुभ	माता को नेष्ट	बडे भ्राता को कष्ट	पितृ नाश	राज्य सम्मान
सुख ऐश्वर्य	धन नाश	पितृभय	छोटे भाई को कष्ट	मातृ नाश	मन्त्रित्व प्राप्ति
मन्त्री पद	मातृ नाश	सुख	मातृ नाश	धन नाश	धन सुख प्राप्ति
राज्य सम्मान	पितृ नाश	विद्या	सुख का नाश	शान्ति से शुभ	अनेक कष्ट

ये छः नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं तथा इन नक्षत्रों में जन्मा हुआ बालक माता, पिता कुल या अपने शरीर को नष्ट करता हैं। स्वयं का शरीर नष्ट न हो तो धन वैभव, ऐश्वर्य हाथी, घोड़ों का स्वामी होता है। गण्डमूल में जन्मे हुए बालक का 27 दिन तक पिता मुख न देखें। प्रसूति स्नान के पश्चात् शुभ मुहूर्त में गौ, स्वर्ण दान आदि शान्ति के पश्चात् ही शुभ वेला में बालक का मुख देखें।

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्ति काल
वि.सं. 2082, 9 अप्रैल 2025 से 29 मार्च 2026 ई. तक

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
29 मार्च	19:27	31 मार्च	13:45	25 जुलाई	16:01	27 जुलाई	16:23
7 अप्रैल	6:25	9 अप्रैल	9:57	4 अगस्त	9:13	6 अगस्त	13:00
17 अप्रैल	5:55	19 अप्रैल	10:21	13 अगस्त	10:33	15 अगस्त	7:36
26 अप्रैल	6:27	27 अप्रैल	24:39	21 अगस्त	24:09	23 अगस्त	24:55
4 मई	12:54	6 मई	15:52	31 अगस्त	17:27	2 सित.	21:51
14 मई	11:47	16 मई	16:08	9 सितम्बर	18:07	11 सित.	13:58
23 मई	16:03	25 मई	11:12	18 सितम्बर	6:33	20 सित.	8:06
31 मई	21:08	2 जून	22:56	27 सितम्बर	25:08	30 सित.	6:18
10 जून	18:02	12 जून	21:57	7 अक्टू.	4:02	8 अक्टू.	22:45
19 जून	23:17	21 जून	19:50	15 अक्टू.	12:00	17 अक्टू.	13:58
28 जून	6:36	30 जून	7:21	25 अक्टू.	7:52	27 अक्टू.	13:28
7 जुलाई	25:12	10 जुलाई	4:50	3 नवंबर	15:06	5 नवंबर	9:40
17 जुलाई	4:51	18 जुलाई	26:14				

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्ति काल
वि.सं. 2082, 9 अप्रैल 2025 से 29 मार्च 2026 ई. तक

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
11 नवंबर	18:18	13 नवंबर	19:38
21 नवंबर	13:56	23 नवंबर	19:28
30 नवंबर	25:11	2 दिसंबर	20:52
8 दिसंबर	26:53	10 दिसंबर	26:45
18 दिसंबर	20:07	20 दिसंबर	25:22
28 दिसंबर	8:44	30 दिसंबर	6:05
(सन् 2026 ई.)			
5 जनवरी	13:25	7 जनवरी	11:57

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
15 जनवरी	03:04	17 जनवरी	8:12
24 जनवरी	14:16	26 जनवरी	12:33
1 फरवरी	23:58	3 फरवरी	22:11
11 फरवरी	10:53	13 फरवरी	16:13
20 फरवरी	20:08	22 फरवरी	17:55
1 मार्च	8:35	3 मार्च	7:32
10 मार्च	19:05	12 मार्च	24:44
20 मार्च	4:05	21 मार्च	24:38

शनि की साढ़ेसाती, ढ़ैय्या एवं सुवर्णादि पाया फल विचार वि.सं. 2082

गत विक्रमी सम्वत् 2081 के अन्तिम दिन 29 मार्च, 2025 ई. को शनिदेव ने रात्रि के समय 21:44 **मीन राशि** में प्रवेश किया है।

आगामी वि. संवत् 2082 **(सन् 2025-26 ई.)** की मध्यावधि में शनिदेव मुख्यतः पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र तथा मीन राशि में ही संचार करेंगे। इस अवधि में 13 जुलाई, 2025 ई. को वक्री होकर इसी राशि में 28 नवम्बर, 2025 ई. से मार्गी होकर संचार करेंगे।

ध्यान रहे ! शनि, मंगल आदि क्रूर ग्रह जब किसी राशि में गोचरवश वक्री होकर संचार करते हैं, तो और भी अधिक क्रूर एवं अशुभफलदायक बन जाते हैं, जबकि गुरु, शुक्र आदि सौम्य ग्रह स्व/मित्र राशि में वक्री होने पर और भी अधिक शुभ फल प्रदान करते हैं-

यदा क्रूर ग्रहो वक्री अतिचारी तु सौम्यकः ।
पीडा व्याधि भयं तत्र दुर्भिक्षं राज्यं विग्रहम्।।

फलस्वरूप शनि जब गोचरवश वक्री अवस्था में संचार करेंगे, तो जातक/जातिका को मानसिक व शारीरिक कष्ट, आर्थिक परेशानियाँ व उथल-पुथल, रोगादि प्रकट होने लगते हैं। समाज में भी कहीं राजनीतिक टकराव, अव्यवस्था, अत्यधिक महँगाई,

राजनैतिक उलट-फेर, क्लिष्ट रोग-भय, उपद्रव, हिंसक घटनायें, अस्थिरता, असन्तोष, बाढ़, दुर्भिक्ष, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोपों का भय एवं असुरक्षा का वातावरण बनता हैं।

शनि संचार फल - शनि के राशि परिवर्तन होने पर मेषादि विभिन्न राशियों पर उसका प्रभाव अलग-अलग होता है, जिसका वर्णन नीचे दिया गया है।

❋ कुम्भ राशि में शनि का गोचर फल – सं.2082 ❋

मेष (लौहपाद)-शनि द्वादशस्थ होने से **`शनि-साढ़ेसाती`** अशुभ प्रभाव रहेगा। व्यवसाय सम्बन्धी विघ्न बाधाएँ, निकट बन्धुओं से विरोध व मानसिक अशान्ति रहे। पारिवारिक एवं व्यवसायिक जीवन में बड़ी उथल-पुथल वाली परिस्थितियां बनेंगी। इस राशि को पाया भी लौह रहने से किसी रोग विशेष के कारण शरीर-कष्ट, अचानक खर्चों में वृद्धि आदि अशुभ फल ही रहेंगे।

वृष (सुवर्णपाद)-वृष राशि से शनि एकादश भावस्थ होने से धर्म-कर्म में रूचि बढ़ेगी। सुख के साधन बढ़ेंगे। विद्या में सफलता, घर-परिवार में कोई शुभ कार्य सम्पन्न होगा। पाया सुवर्ण होने से कुछ घरेलू उलझनें, वृथा दौड़-धूप अधिक एवं मानसिक तनाव रहेगा।

मिथुन (ताम्रपाद)-दशमस्थ शनि भी शुभ है। मनोवांछित योजनाओं में सफलता प्राप्त होगी। उच्च प्रतिष्ठित लोगों तथा पुराने सम्बन्धियों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। सुख-साधन एवं आय के स्त्रोतों में वृद्धि होगी। शनि का पाया भी `ताम्र` होने से गत बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार, शुभ कार्यों की ओर रूचि तथा पदोन्नति के भी योग बनेंगे। व्यवसाय/कारोबार में भी वृद्धि होगी।

कर्क (रजतपाद)-शनि नवमस्थ होने से भाग्योन्नति में विघ्न एवं विलम्ब पैदा होंगे। व्यर्थ की भागदौड़ अधिक रहेगी। अत्यन्त संघर्ष के पश्चात् कार्यों में आंशिक सफलता प्राप्त होगी। मानसिक तनाव व अशान्ति अधिक रहे। परन्तु शनि का पाया `रजत` होने से अकस्मात् धन लाभ व उन्नति के अवसर बनेंगे।

सिंह (लौहपाद)- शनि की ढैय्या तथा पाया लौह होने से आय के साधन सीमित तथा खर्च अधिक रहेंगे। आर्थिक परेशानियां, घरेलू कलह-क्लेश तथा दौड़-धूप अधिक रहे। वर्ष के उत्तरार्द्ध भाग में स्वास्थ्य सम्बन्धी सावधानी बरतें। हड्डीयों, मांसपेशियों तथा त्वचा सम्बन्धी रोगों का भय रहेगा।

कन्या (ताम्रपाद)-शनि की सप्तम दृष्टि रहेगी। ता. 18 मई तक केतु का भी संचार रहने से वर्ष के पूर्वार्द्ध (पहले) भाग में अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे।

आय कम व खर्च अधिक रहे, दिमागी तनाव व उलझनें अधिक रहें। शनि का पाया ताम्र होने से उत्तरार्द्ध भाग में कुछ बिगड़े काम बनेंगे।

तुला (सुवर्णपाद)-षष्ठभावस्थ शनि शुभ रहेगा। अचानक धन लाभ व पदोन्नति के अवसर मिलेंगे। अथवा विदेश यात्रा की योजना बनेगी। सुख-साधनों में वृद्धि होगी। शनि का पाया सुवर्ण होने से उत्तरार्द्ध भाग में बनते कार्यों में विघ्न-बाधाएं उत्पन्न होंगी। घरेलु उलझनों के कारण मन चिन्तित रहे। खर्च अधिक रहे।

वृश्चिक (रजतपाद)-शनि पंचमस्थ पूज्य रहेगा। सोची हुई योजनाओं में विघ्न-बाधाएं होंगी। परन्तु शनि का पाया रजत (चाँदी) होने से संघर्ष एवं कठिनाईयों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। उच्चाधिकारियों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे।

धनु (लौहपाद)-शनि चतुर्थ होने से शनि की ढैय्या का दुष्प्रभाव रहेगा। जिससे धन हानि, वृथा कलह क्लेश, खर्च आदि रहेंगे। शनि का पाया भी 'लौह' होने से गुप्त चिन्ताएँ, अकारण क्रोध, शरीर कष्ट तथा निकट सम्बन्धियों से तनाव एवं अचानक खर्च होने के संकेत हैं।

मकर (ताम्रपाद)-तृतीयस्थ शनि शुभ है। धन लाभ एवं अन्य सुख-साधनों में विस्तार होगा। गृह में कोई मंगल कार्य सम्पन्न होगा। शुभ यात्रा के योग हैं। शनि का पाया भी ताम्र होने से भी नौकरी में पदोन्नति व कार्य-व्यवसाय में लाभ के अवसर बनते रहेंगे। शुभ कार्यों पर व्यय भी होंगे।

कुम्भ (रजतपाद)-द्वितीयस्थ शनि पूज्य रहेगा। **शनि-साढ़ेसाती** उतरती हुई अवस्था में अर्थात् अन्तिम चरण में होगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक एवं पारिवारिक समस्याओं के कारण कठिन एवं संघर्षपूर्ण हालात बनेंगे। शनि का पाया रजत (चाँदी) होने से रुकावटों के बावजूद कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा तथा निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे।

मीन (सुवर्णपाद)-मीन राशि को लग्न भाव पर ही **शनि-साढ़ेसाती** तथा शनि का पाया सुवर्ण होने से घरेलु एवं आर्थिक उलझनें, धन का खर्च अधिक रहे। अत्यधिक संघर्ष के बावजूद बीच-बीच में धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। परन्तु ता. 18 मई तक इस राशि पर राहु का संचार रहने से कुछ पेचीदा समस्याएं अचानक उभरेंगी।

✻ शनि के पाद (पाया) फल विचार एवं शनि शान्त्यर्थ शास्त्रीय उपाय अगले पृष्ठ पर दिया गया है। ✻

शनि के पाद (पाया) फल विचार

लौहे धनविनाशः स्यात् सर्वं दुःखं च काञ्चने।
ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं च राजते भवेत्॥

सुवर्ण पाया हो तो जातक को उस अवधि में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ता हैं। पारिवारिक एवं व्यवसायिक उलझनें अधिक रहेंगी। शत्रु एवं रोग भय होता हैं।
रजत पाया हो तो जातक को गत किये गये प्रयासों में धीरे धीरे सफलता मिलती है। आकस्मिक धन-लाभ, उच्च-प्रतिष्ठा, पदोन्नति, स्त्री-सन्तान व भूमि वाहनादि सुख होता है।
ताम्र का पाया हो तो जातक को कार्य व्यवसाय में लाभ व उन्नति। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों का सम्पर्क होता है। उच्च-विद्या में सफलता मिलती है। विवाह एवं पारिवारिक सुख मिलता है।
लौह का पाया हो तो जातक को आर्थिक व पारिवारिक परेशानियाँ अधिक होती है। स्वास्थ्य में गड़बड़, तनाव एवं उलझनें बढ़ती हैं। दुर्घटना से चोटादि का भय रहता हैं।

❋ शनि शान्त्यर्थ शास्त्रीय उपाय ❋

शनि कि साढ़ेसाती ढैय्या के नेष्टफल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र का 23000 की संख्या में विधिपूर्वक जाप करें। तदुपरान्त दशांश हवनादि करें। शनिवार के दिन सतनाजादान, लौहपात्र में तैल दान, शनि स्तोत्र का पाठ करना भी श्रेयस्कर है।

शनि का बीज मन्त्र - "ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः"।

वैदिक मन्त्र - "ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये,
शंय्योरभिस्रवन्तु नः ॐ"।

शनैश्चर स्तोत्र

पिप्पलाद उवाच

ॐ नमस्ते कोण-संस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तुते।
नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोस्तुते॥1॥
नमस्ते रौद्र-देहाय, नमस्ते चान्तकाय च।
नमस्ते यम-संज्ञाय, नमस्ते सौरये विभो॥2॥
नमस्ते मन्द-संज्ञाय शनैश्चर नमोस्तु ते।
प्रसादं कुरु देवेश, दीनाय प्रणताय च॥3॥

इस स्तोत्र को प्रातः पढ़ने से साढ़ेसाती व ढैय्या की दुःखद पीड़ा नहीं होती।

✻ नामाक्षरानुसार नक्षत्र राशिज्ञान चक्र ✻

मेष	**अश्विनी** चू-चे-चो-ला	**भरणी** ली-लू-ले-लो	**कृत्तिका 1 पाद** अ-0-0-0
वृष	**कृत्तिका 3 पाद** 0-ई-उ-ए	**रोहिणी** ओ-वा-वी-वू	**मृगशिरा आधा** वे-वो-0-0
मिथुन	**मृगशिरा आधा** 0-0-क-की	**आर्द्रा** कु-घ-ङ-छ	**पुनर्वसु 3 पाद** के-को-ह-0
कर्क	**पुनर्वसु** 0-0-0-ही	**पुष्य** हू-हे-हो-डा	**आश्लेषा** डी-डू-डे-डो
सिंह	**मघा** मा-मी-मू-मे	**पूर्वफाल्गुनी** मो-टा-टी-टू	**उत्तरफाल्गुनी** टे-0-0-0
कन्या	**उत्तरफाल्गुनी** 0-टो-पा-पी	**हस्त** पू-ष-ण-ठ	**चित्रा** पे-पो-0-0
तुला	**चित्रा** 0-0-रा-री	**स्वाति** रू-रे-रो-ता	**विशाखा** ती-तू-ते-0
वृश्चिक	**विशाखा** 0-0-0-तो	**अनुराधा** ना-नी-नू-ने	**ज्येष्ठा** नो-या-यी-यू
धनु	**मूल** ये-यो-भा-भी	**पूर्वाषाढ़ा** भू-धा-फ-ढ	**उत्तराषाढ़ा** भे-0-0-0
मकर	**उत्तराषाढ़ा** 0-भो-जा-जी	**श्रवण** खी-खू-खे-खो	**धनिष्ठा** गा-गी-0-0
कुम्भ	**धनिष्ठा** 0-0-गू-गे	**शतभिषा** गो-सा-सी-सू	**पूर्वभाद्रपदा** से-सो-दा-0
मीन	**पूर्वभाद्रपदा** 0-0-0-दी	**उत्तरभाद्रपदा** दू-थ-झ-ञ	**रेवती** दो-दो-चा-ची

✻ यात्रा विचार प्रकरण ✻

दिक्शूल								
दिशा	पूर्व	उत्तर	पश्चिम	दक्षिण	ईशान	वायव्य	नैऋत्य	आग्नेय
निषिद्ध तिथि	1, 9	2, 10	6, 14	5, 13	8,30	7, 15	4, 3	3, 11
निषिद्ध वार	सोम शनि	मङ्गल गुरु	रवि शुक्र	गुरु	गुरु शनि	मङ्गल	शनि शुक्र	गुरु सोम
निषिद्ध नक्षत्र	श्रवण ज्येष्ठा	हस्त उत्तरा फाल्गुनी	रोहिणी पुण्य	धनि. शत. रेवती पू. भा. उ. भा. अश्विनी	-	-	-	-
निषिद्ध समय	उषा काल	अर्ध रात्रि	गोधूलि (संध्या-काल)	मध्याह्न	-	-	-	-

✻ राहु वास चक्र ✻

सूर्य संक्रान्ति मास	वृश्चिक धनु मकर	मेष कुम्भ मीन	वृष मिथुन कर्क	सिंह कन्या तुला
राहु की वास दिशा	पूर्व दिशा	दक्षिण दिशा	पश्चिम दिशा	उत्तर दिशा

✻ दिक्शूल परिहार ✻

1. यदि यात्रा मुहूर्त में विलम्ब अथवा समय का उलङ्घन हो तो ब्राह्मण-प्रस्थान समय में जनेऊ, माला; क्षत्रिय-अस्त्र, शस्त्र; वैश्य-मधु, घी, रुपया, पैसा; शूद्र-फल को अपने वस्त्र में बाँध किसी के घर या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान के समय रख दें, अथवा अपनी किसी प्रिय वस्तु को रख दें।
2. आवश्यकता पड़ने पर रविवार को दलिया, घी खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर व दूध पीकर, मङ्गलवार को गुड खाकर, बुधवार को धनिया या तिल खाकर, गुरुवार को दही खाकर, शुक्रवार को जौ खाकर व दूध पीकर, शनिवार को अदरक या उडद खाकर प्रस्थान किया जा सकता है।

✻ यात्रा में चन्द्रमा विचार ✻

दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
राशि (चन्द्रमा की)	मेष सिंह धनु	वृष कन्या मकर	मिथुन तुला कुम्भ	कर्क वृश्चिक मीन

✻ सूर्योदय से चौघड़िया दिन के प्रति अंश में यात्रा का फल ✻

घड़ी:वार	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
03:45	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
07:30	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
11:15	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
15:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
18:45	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
22:30	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
26:15	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
30:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

❋ सूर्यास्त से चौघड़िया रात्रि के प्रति अंश में यात्रा का फल ❋

घड़ी:वार	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
03:45	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
11:15	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
15:00	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
18:45	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
22:30	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
26:15	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
30:00	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

नियम - चौघड़िया ज्ञात करने के लिये उस दिन के सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय को 8 भागों में विभाजित करें तथा प्रथम अंश को सूर्योदय के समय के साथ जोड़ने से पहले चौघड़िये का समय प्राप्त होगा। उसके बाद उस समय में दो अंश जोड़ने से दूसरे चौघड़िये का काल प्राप्त होगा।

उदाहरण - यदि रविवार को सूर्योदय से सूर्यास्त का समय 12 घण्टे का हैं। तो उसका 8वाँ अंश 1.5 घण्टे का होगा और सर्योदय प्रातः 6 बजे हो रहा हो तो प्रथम चौघड़िया "उद्वेग" प्रातः 6 बजे से 7.30 बजे तक होगा। उसी में दूसरा अंश जोडने से 7.30 बजे से 9 बजे तक का दूसरा चौघड़िया "चर" होगा। ऐसे ही रात के चौघड़िये के लिये सूर्यास्त के गणना समझनी चाहिये।

पाठकों की सुविधार्थ यहाँ प्रत्येक चौघड़िये की घड़ी में भी गणना दी गयी हैं।

4 श्वास (24 सेकण्ड)	-	1 पल
60 पल (24 मिनट)	-	1 घड़ी
2.5 घड़ी	-	1 घण्टा
60 घड़ी (24 घण्टे)	-	1 दिवस

इस तरह प्रत्येक दिन और रात मिलाकर 60 घड़ी के होते हैं।

✻ भद्रा लोक वास ✻

मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक का चन्द्रमा होने से भद्रा स्वर्ग लोक में; कन्या, तुला, धनु, मकर का चन्द्रमा होने से पाताल में; कर्क, सिंह, कुम्भ व मीन का चन्द्रमा होने से मृत्युलोक में निवास करती है।

"स्वर्गे भद्रा धनं धान्यं, पाताले च धनागमः
मृत्युलोके यदा भद्रा, कार्यसिद्धिस्तदा नहि॥"

अतः मृत्युलोक की भद्रा ही अशुभ होती है।

शुक्लपक्षे वृश्चिकाभद्रा, कृष्णपक्षे भुजङ्गमा।

शुक्लपक्ष की भद्रा का नाम वृश्चिकी है, कृष्णपक्ष की भद्रा का नाम सर्पिणी है। मतान्तर से दिन की भद्रा सर्पिणी, रात्रि की भद्रा वृश्चिकी है। वृश्चिकी भद्रा का पुच्छ भाग, सर्पिणी भद्रा का मुख भाग नहीं लेना चाहिए।

दिवा भद्रा रात्रौ, रात्रिभद्रा यदा दिवा। तदाऽविष्टिकृतो दोषो न भवेत्सर्व सौख्यदः॥

यदि दिन की भद्रा रात्रि में समाप्त हो, रात्रि की भद्रा दिन में समाप्त हो, तो भद्रा दोषकारक न होकर सौख्यकारक होती है।

✻ भद्रा का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल (2025) ✻

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.
1 अप्रैल	16:08	1 अप्रैल	26:33	7 मई	23:25	8 मई	12:30
4 अप्रैल	20:13	5 अप्रैल	7:50	11 मई	20:02	12 मई	9:14
8 अप्रैल	8:38	8 अप्रैल	21:14	15 मई	15:17	15 मई	28:03
11 अप्रैल	27:22	12 अप्रैल	16:37	19 मई	6:12	19 मई	18:02
15 अप्रैल	24:07	16 अप्रैल	13:18	22 मई	14:18	22 मई	25:13
19 अप्रैल	18:23	20 अप्रैल	6:42	25 मई	15:52	25 मई	26:02
22 अप्रैल	29:29	23 अप्रैल	16:44	30 मई	10:21	30 मई	21:23
26 अप्रैल	8:28	26 अप्रैल	18:39	2 जून	20:36	3 जून	9:17
30 अप्रैल	24:49	1 मई	11:24	6 जून	15:33	6 जून	28:49
4 मई	7:20	4 मई	19:28	10 जून	11:36	10 जून	24:25

✻ भद्रा का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल (2025) ✻

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.
13 जून	27:33	14 जून	15:47	16 सितंबर	12:58	16 सितंबर	24:23
17 जून	14:47	17 जून	26:11	19 सितंबर	23:38	20 सितंबर	11:58
20 जून	20:35	21 जून	7:19	25 सितंबर	20:21	26 सितंबर	9:34
23 जून	22:10	24 जून	8:35	29 सितंबर	16:32	29 सितंबर	29:20
28 जून	21:35	29 जून	9:15	3 अक्टूबर	6:53	3 अक्टूबर	18:34
2 जुलाई	11:59	2 जुलाई	25:03	6 अक्टूबर	12:24	6 अक्टूबर	22:51
6 जुलाई	8:08	6 जुलाई	21:16	9 अक्टूबर	12:39	9 अक्टूबर	22:55
9 जुलाई	25:37	10 जुलाई	13:52	12 अक्टूबर	14:18	12 अक्टूबर	25:22
13 जुलाई	13:25	13 जुलाई	25:03	15 अक्टूबर	22:35	16 अक्टूबर	10:36
16 जुलाई	21:02	17 जुलाई	8:06	19 अक्टूबर	13:52	19 अक्टूबर	26:49
19 जुलाई	25:29	20 जुलाई	12:14	25 अक्टूबर	14:35	25 अक्टूबर	27:49
22 जुलाई	28:40	23 जुलाई	15:35	29 अक्टूबर	9:24	29 अक्टूबर	21:46
28 जुलाई	11:04	28 जुलाई	23:25	1 नवंबर	20:22	2 नवंबर	7:32
31 जुलाई	28:59	1 अगस्त	18:12	4 नवंबर	22:37	5 नवंबर	8:43
4 अगस्त	24:28	5 अगस्त	13:13	7 नवंबर	21:20	8 नवंबर	7:33
8 अगस्त	14:13	8 अगस्त	25:49	10 नवंबर	24:09	11 नवंबर	11:40
11 अगस्त	21:38	12 अगस्त	8:41	14 नवंबर	12:13	14 नवंबर	24:50
14 अगस्त	26:08	15 अगस्त	12:59	18 नवंबर	7:13	18 नवंबर	20:29
18 अगस्त	6:24	18 अगस्त	17:23	24 नवंबर	8:24	24 नवंबर	21:23
21 अगस्त	12:45	21 अगस्त	24:21	27 नवंबर	24:31	28 नवंबर	12:24
26 अगस्त	26:50	27 अगस्त	15:45	1 दिसंबर	8:16	1 दिसंबर	19:02
30 अगस्त	22:47	31 अगस्त	11:53	4 दिसंबर	8:38	4 दिसंबर	18:41
3 सितंबर	16:08	3 सितंबर	28:22	7 दिसंबर	7:56	7 दिसंबर	18:26
6 सितंबर	25:42	7 सितंबर	12:41	10 दिसंबर	13:47	10 दिसंबर	25:53
9 सितंबर	29:05	10 सितंबर	15:39	13 दिसंबर	29:45	14 दिसंबर	18:50
13 सितंबर	7:24	13 सितंबर	18:15	17 दिसंबर	26:33	18 दिसंबर	15:47

✻ भद्रा का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल (2025–2026) ✻

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.
23 दिसंबर	24:43	24 दिसंबर	13:12
27 दिसंबर	13:10	27 दिसंबर	24:35
30 दिसंबर	18:27	30 दिसंबर	29:01
सन् 2026 ई०			
2 जनवरी	18:54	2 जनवरी	29:14
5 जनवरी	21:00	6 जनवरी	8:02
8 जनवरी	31:06	9 जनवरी	19:45
12 जनवरी	26:01	13 जनवरी	15:18
16 जनवरी	22:22	17 जनवरी	11:13
22 जनवरी	14:39	22 जनवरी	26:29
25 जनवरी	23:11	26 जनवरी	10:15
28 जनवरी	27:17	29 जनवरी	13:56
31 जनवरी	29:53	1 फरवरी	16:46
4 फरवरी	12:26	4 फरवरी	24:10

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.
7 फरवरी	26:55	8 फरवरी	15:59
11 फरवरी	23:11	12 फरवरी	12:23
15 फरवरी	17:05	15 फरवरी	29:20
20 फरवरी	25:50	21 फरवरी	13:01
23 फरवरी	31:03	24 फरवरी	17:58
27 फरवरी	11:34	27 फरवरी	22:33
2 मार्च	17:56	2 मार्च	29:32
5 मार्च	29:29	6 मार्च	17:54
9 मार्च	23:28	10 मार्च	12:42
13 मार्च	19:21	14 मार्च	8:11
17 मार्च	9:23	17 मार्च	20:55
22 मार्च	10:36	22 मार्च	21:16
25 मार्च	13:50	25 मार्च	24:47
28 मार्च	20:13	29 मार्च	7:46

✻ यज्ञोपवीत धारण करने एवं त्यागने का मन्त्र ✻

✻ यज्ञोपवीत धारण करने का मन्त्र ✻

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं परस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवितं बलमस्तु तेजः॥

✻ जीर्ण यज्ञोपवीत त्यागने का मन्त्र ✻

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात्त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम्॥

ॐ

❇ पञ्चक नक्षत्र विचार ❇

वासवोत्तर-दलादि पंचके याम्यदिग्गमनं गृहगोपनम्।
प्रेतदाह-तृण-काष-संचयं शय्यका-वितरणं च वर्जयेत्॥

पञ्चक नक्षत्रों में काष्ठ छेदन (लकड़ी तोड़ना), तिनके तोड़ना, दक्षिण दिशा की यात्रा, प्रेतादि दाहसंस्कार, स्तम्भारोपन, तृण, ताम्बा, पीतल, लकड़ी आदि का संचय, दुकान, मकान या झोपड़ी आदि की छत डालना, चारपाई, खाट, चटाई आदि बुनना, बैठक की गद्दियों का निर्माण करना त्याज्य माना गया है। पञ्चकों मे हानि, लाभ एवं व्याधि आदि पाँच गुणा, त्रिपुष्कर में त्रिगुणा तथा द्विपुष्कर में दुगुना लाभ या हानि की सम्भावना होती है। विधिवत् नक्षत्र पूजा, दान एवं ब्राह्मण भोजन करवाना शुभप्रद होता है। प्रेतदाह अथवा किसी अन्य कारण से हानि की आशंका हो तो उस स्थिति में किसी विद्वान् ब्राह्मण से पञ्चक शान्ति करवाने का विधान है।

ध्यान रहे, मुहूर्त ग्रन्थों में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश, वधू प्रवेश, उपनयन आदि तथा रक्षाबन्धन, भैय्यादूज आदि पर्वों में पञ्चक नक्षत्रों के निषेध के बारे में कहीं भी विचार नहीं किया जाता।

बृहद ज्योतिषानुसार तो धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपदा व रेवती नक्षत्र सभी कार्यों में सिद्धि प्रदायक एवं शुभ माने जाते हैं, जबकि पूर्वभाद्रपदा एवं शतभिषा नक्षत्र साधारण रूप से कार्य सिद्धिकारक माने गये हैं।

❇ पञ्चकारम्भ एवं समाप्तिकाल–संवत् 2082 ❇

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 ई. तक)

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
26 मार्च	15:15	30 मार्च	16:35
22 अप्रैल	24:31	27 अप्रैल	3:39
20 मई	7:36	24 मई	13:48
16 जून	13:10	20 जून	21:45
13 जुलाई	18:54	18 जुलाई	3:39
9 अग.	26:11	14 अग.	9:06
6 सितं.	11:22	10 सितं.	16:03
3 अक्टू.	21:28	7 अक्टू.	25:28

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
31 अक्टू.	6:49	4 नवं.	12:35
27 नवंबर	14:07	1 दिसं.	23:18
24 दिसं.	19:47	29 दिसं.	7:41
(सन् 2026 ई.)			
20 जन.	25:36	25 जन.	13:36
17 फर.	9:06	21 फर.	19:07
16 मार्च	18:14	20 मार्च	26:28

✻ दीपावली (श्री महालक्ष्मी पूजन) 20 अक्टूबर 2025 ई. ✻

श्री महालक्ष्मी पूजन एवं दीपावली का महापर्व कार्तिक कृष्ण अमावस्या में प्रदोषकाल एवं अर्द्धरात्रि-व्यापिनी हो तो विशेष रूप से शुभ होती है।

कार्तिकस्यासिते पक्षे लक्ष्मीर्निदां विमुञ्चति।
स च दीपावली प्रोक्ताः सर्वकल्याणरूपिणी॥

भविष्यपुराण में भी लक्ष्मीपूजन, के लिये प्रदोषकाल विशेषतया प्रशस्त माना गया है -

कार्तिके प्रदोषे तु विशेषेण अमावस्या निशावर्धके।
तस्यां सम्पूज्येत् देवी भोगमोक्ष प्रदायिनीम्॥

इस वर्ष कार्तिक अमावस्या का प्रदोषकाल के साथ संयोग दो दिन हो रहा है। ता. 20 अक्टूबर, 2025 ई. को अमावस्या तिथि अपराह्नकाले 3:45 (15:45) से प्रारम्भ होकर 21 अक्टूबर, 2025 ई. को सायं 5:55 (17:55) तक व्याप्त रहेगी। इस प्रकार 20 अक्टूबर, 2025 ई. को अमावस्या प्रदोष एवं अर्द्धरात्रि-व्यापिनी होगी तथा 21 अक्टूबर, 2025 ई. को केवल प्रदोष-व्यापिनी रहेगी। अतः **'दीपावली पर्व' 20 अक्टूबर, सोमवार, 2025 ई. के दिन ही होगा।**

विशेष कृत्य - इस दिन प्रातः ब्राह्ममुहूर्त्त में उठकर दैनिक कृत्यों से निवृत हो पितृगण तथा देवताओं का पूजन करना चाहिये। सम्भव हो तो दूध, दही और घृत से पितरों का पार्वण-श्राद्ध करना चाहिये। यदि सम्भव हो तो दिन भर उपवास कर गोधूलि वेला में अथवा कुम्भ, वृष, सिंह, आदि स्थिर लग्न में श्रीगणेश, कलश, षोडशमातृका एवं ग्रहपूजनपूर्वक भगवती लक्ष्मी का षोडशोपचार-पूजन करना चाहिये। इसके अनन्तर **महाकाली** का दवात के रूप में, **महासरस्वती** का कलम, बही आदि के रूप में तथा **कुबेर** का तुला के रूप में सविधि पूजन करना चाहिये। इसी समय दीपपूजन कर यमराज तथा पितृगणों के निमित्त ससंकल्प दीपदान करना चाहिये। तदोपरान्त यथोलब्ध निशीथादि शुभ मुहूर्त्तों में मन्त्र-जप, यन्त्र-सिद्धि आदि अनुष्ठान सम्पादित करने चाहिये।

दीपावली वास्तव में पाँच पर्वों का महोत्सव माना जाता है, जिसकी व्याप्ति कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी (धनतेरस) से लेकर कार्तिक शुक्ल द्वितीया (भाई-दूज) तक रहती है। निर्दिष्ट शुभ कालों में किसी स्वच्छ एवं पवित्र स्थान पर आटा, हल्दी, अक्षत एवं पुष्पादि से अष्टदल कमल बनाकर श्रीलक्ष्मी का आवाहन एवं स्थापना करके देवी की विधिवत् पूजार्चना करनी चाहिए।

आवाहन मन्त्र-

'कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्। (श्रीसूक्तम्)

पूजा मन्त्र-ॐ गं गणपतये नमः।। लक्ष्म्यै नमः।। नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरेः प्रिया। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात्।।' से लक्ष्मी की, **'एरावतसमारूढो वज्रहस्तो महाबलः। शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मा इन्द्राय ते नमः।'** मन्त्र से इन्द्र की और कुबेर की निम्न मन्त्र से पूजा करें-

कुबेराय नमः, 'धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माधिपाय च। भवन्तु त्वत्प्रसादान्मे धनधान्यादि सम्पदः।।' पूजन सामग्री में विभिन्न प्रकार की मिठाई, फल-पुष्पाक्षत, धूप, दीपादि सुगन्धित वस्तुएँ सम्मिलित करनी चाहिए। दीपावली पूजन में प्रदोष, निशीथ एवं महानिशीथ काल के अतिरिक्त चौघड़ियाँ मुहूर्त्त भी पूजन, बही-खाता पूजन, कुबेर पूजा, जपादि अनुष्ठान की दृष्टि से विशेष प्रशस्त एवं शुभ माने जाते हैं-

प्रदोष काल-20 अक्टूबर, 2025 ई. को सूर्यास्त ($17^{घं.}$-$37^{मिं.}$) से लेकर $20^{घं.}$-$18^{मिं.}$ तक **प्रदोष-काल** व्याप्त रहेगा।

अमावस्या तिथि भी दोपहर $15^{घं.}$-$44^{मिं.}$ से प्रारम्भ हो रही है। सायं $19^{घं.}$-$08^{मिं.}$ तक **मेष** लग्न है। प्रदोषकाल आरम्भ से ही $17^{घं.}$-$37^{मिं.}$ से ही **चर** की चौघड़िया $19^{घं.}$-$21^{मिं.}$ तक रहेगी। तदुपरान्त रोग की चौघड़िया अशुभ है। **अतएव $19^{घं.}$-$21^{मिं.}$ (मेष/वृष लग्न में) से पहले ही** दीपदान, महालक्ष्मी, गणेश-कुबेर पूजन, बही-खाता पूजन आदि सम्पूर्ण दीपावली पूजन आरम्भ कर लेना चाहिये। इसी काल धर्म एवं गृहस्थलों पर दीप प्रज्वलित करना, ब्राह्मणों तथा आश्रितों को भेंट, मिष्ठान्नादि बाँटना शुभ होगा।

निशीथ काल-20 अक्टूबर, 2025 ई. को निशीथकाल रात्रि $17^{घं.}$-$46^{मिं.}$ से $20^{घं.}$-$18^{मिं.}$ तक रहेगा। निशीथकाल में **'वृष'** लग्न $19^{घं.}$-$08^{मिं.}$ से $21^{घं.}$-$03^{मिं.}$ तक तथा $22^{घं.}$-$33^{मिं.}$ से $24^{घं.}$-$09^{मिं.}$ से तक लाभ की चौघड़िया रहेंगी।

अतः जिन्होंने प्रदोषकाल में महालक्ष्मी पूजन आरम्भ कर लिया हो उन्हें इस अवधि में समाप्त कर तथा जिन्होंने न प्रारम्भ किया हो, उन्हें **'निशीथ'** तथा **'वृष'** लग्न के संयोग में पूजन प्रारम्भ कर लेना चाहिये। इस अवधि में महालक्ष्मी पूजन समाप्त कर श्रीसूक्त, कनकधारा स्तोत्र तथा लक्ष्मी स्तोत्रादि मन्त्रों का जपानुष्ठान करना चाहिये।

महानिशीथ काल-रात्रि $23^{घं.}$-$41^{मिं.}$ से अर्धरात्रि $24^{घं.}$-$31^{मिं.}$ तक महानिशीथ काल रहेगा। इस समयावधि में **'लाभ'** की चौघडियां तथा **'कर्क'** लग्न भी अत्यन्त शुभ है। इस अवधि में काली-उपासना, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि की क्रियाएं, विशेष काम्य प्रयोग, तन्त्र-अनुष्ठान, साधनायें एवं यज्ञादि किए जाते हैं। $25^{घं.}$-$38^{मिं.}$ से सिंह लग्न भी विशेष प्रशस्त रहेगा।

अथ संक्षिप्त–सन्ध्योपासना–विधिः

आचमन मन्त्र

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।
ॐ हृषीकेशाय नमः कहकर हस्त प्रक्षालन कर लेवें।

शरीरशुद्धि मन्त्र

ॐ अपवित्रःपवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

आसनशुद्धि का विनियोग

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता आसनपवित्रकरणे विनियोगः।

मन्त्र

ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका देवि! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्॥

सन्ध्या का संकल्प

ॐ श्री विष्णुर्विष्णुर्विष्णुर्नमः परमात्मने तत्सत् श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वतन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते अमुकक्षेत्रे कलियुगे कलिप्रथमचरणे अमुकसंवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्माऽहं ममोपात्तदुरितक्षयपूर्वक श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं सन्ध्योपासनं करिष्ये।

अघमर्षणमन्त्रः

ॐ ऋतञ्च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।

प्राणायाममन्त्रः

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्॥

पापक्षयार्थमन्त्रः

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्यां पापमकर्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना। रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद् दुरितं मयि इदमहममृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।

मार्जनमन्त्रः

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवः, ॐ ता न ऊर्जे दधातन, ॐ महेरणाय चक्षसे, ॐ यो वः शिवतमो रसः, ॐ तस्य भाजते ह नः, ॐ उशतीरिव मातरः, ॐ तस्मा अरङ्गमाम वः, ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ, ॐ आपो जनयथा च नः।

सूर्योपस्थानमन्त्रः

ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।

ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्। ॐ चित्रन्देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आ प्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च। ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतं भूयश्च शतात्॥

गायत्रीमन्त्रः

ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

दैनिकतर्पणम्

देवतर्पणम्

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्	ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम्
ॐ विष्णुस्तृप्यताम्	ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्
ॐ रूद्रस्तृप्यताम्	ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्
ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्	ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम्
ॐ देवास्तृप्यन्ताम्	ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्

ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम्	ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्
ॐ संवत्सराः सावयवास्तृप्यन्ताम्	ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्
ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्	ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्
ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्	ॐ भूतानि तृप्यन्ताम्
ॐ नागास्तृप्यन्ताम्	ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्
ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्	ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्
ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्	ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्
ॐ सरितास्तृप्यन्ताम्	ॐ भूतग्रामाश्चतुर्विधास्तृप्यन्ताम्
ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्	
ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्	

दिव्यमनुष्यतर्पणम्

ॐ सनकस्तृप्यताम्	ॐ सनन्दनस्तृप्यताम्
ॐ सनातनस्तृप्यताम्	ॐ कपिलस्तृप्यताम्
ॐ आसुरिस्तृप्यताम्	ॐ बोढुस्तृप्यताम्
ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम्	

मरीच्यादितर्पणम्

ॐ मरीचिस्तृप्यताम्	ॐ अत्रिस्तृप्यताम्
ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम्	ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम्
ॐ पुलहस्तृप्यताम्	ॐ क्रतुस्तृप्यताम्
ॐ प्रचेतास्तृप्यताम्	ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम्
ॐ भृगुस्तृप्यताम्	ॐ नारदस्तृप्यताम्

पितृतर्पणम्

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यताम् ॐ सोमस्तृप्यताम् ॐ यमस्तृप्यताम् ॐ अर्यमातृप्यताम्	ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम् ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम्
ॐ वसुरूषः पिता तृप्यताम् ॐ रुद्ररूपः पितामहस्तृप्यताम् ॐ आदित्यरूपः प्रपितामहस्तृप्यताम्	ॐ गायत्रीरूपा माता तृप्यताम् ॐ सावित्रीरूपा पितामही तृप्यताम् ॐ सरस्वतीरूपा प्रपितामही तृप्यताम्
ॐ मातामहस्तृप्यताम् ॐ प्रमातामहस्तृप्यताम् ॐ वृद्धप्रमातामहस्तृप्यताम्	

ॐ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः।

सूर्यार्घ्यमन्त्रः

ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥
अनेन तर्पणाख्येन कर्मणा श्रीशङ्करः प्रीयतां न मम॥

❋ देवपूजा सम्बन्ध में कुछ शास्त्रोक्त बातें ❋

एका मूर्तिर्न सम्पूज्या गृहिणा स्वेष्टमिच्छता।
अनेकमूर्तिसम्पन्नः सर्वान् कामानवाप्नुयात्॥

कल्याण चाहने वाले गृहस्थी एक मूर्ति की पूजा न करें, अपितु अनेक देवमूर्ति की पूजा करें, इससे कामना पूर्ण होती है।

किन्तु -

गृहे लिङ्गद्वयं नार्च्यं गणेशत्रितयं तथा।
शङ्खद्वयं तथा सूर्यो नार्च्यं शक्तित्रयं तथा॥
द्वे चक्रे द्वारकायास्तु शालग्रामशिलाद्वयम्।
तेषां तु पूजनेनैव उद्वेगं प्राप्नुयाद् गृहि॥ (पद्मपुराण)

घर में दो शिवलिङ्ग, तीन गणेश, दो शङ्ख, दो सूर्य, तीन दुर्गामूर्ति, दो गोमती चक्र और दो शालिग्राम की पूजा करने से गृहस्थ को अशान्ति मिलती हैं।

सम शालिग्राम (4,6,8 आदि) का पूजन करें, किन्तु सम में 2 शालिग्राम का पूजन तथा विषम शालिग्राम का पूजन निषिद्ध हैं। विषम में 1 शालिग्राम का पूजन कर सकते है।

प्रतिमा के प्रकार

शैली दारुमयी लौही लेप्या लेख्या च सैकती।
मनोमयी मणिमयी प्रतिमाष्टाविधा स्मृता॥ (श्रीमद्भागवत्)

शिला, लकड़ी, लोहा, लेप्य (पुती हुई), लेख्य (चित्रित) सिकता (रेती) मनोमयी (मानसिक कल्पित प्रतिमा) तथा माणिकी ये आठ प्रतिमाओं का प्रकार कहा है। निर्णय सिन्धुकार ने सुवर्ण, रजत, ताम्र, मृत्तिका, पाषाण, धातुयुक्त पीतल, कांसा और शुद्ध काष्ठ की प्रतिमा पूजा में उत्तम कही गयी है।

अङ्गुष्ठपर्वादाराभ्य वितस्तिं यावदेव तु।
गृहेषु प्रतिमा कार्या नाधिका शास्यते बुधैः॥ (निर्णयसिन्धु)

अंगुठे के पर्व से आरम्भ कर वितस्ति (प्रादेशमात्र - 12 अंगुल) परिमाण तक घर में प्रतिमा करें। उससे अधिक न करें, ऐसा शास्त्रकारों ने कहा है।

देवीपुराण में सात अंगुल से प्रारम्भ कर बारह अंगुल तक घरों में पूजा करने को कहा है।

प्रयोग पारिजात में व्यास जी ने कहा है कि प्रतिमा और रेशमी वस्त्रादि में लिखित यन्त्रों

को नित्य स्नान न करावें।

नाक्षतैरर्चयेत् विष्णुं न तुलस्या गणाधिपम्।
न दुर्वया यजेद्देवीं बिल्वपत्रैश्च भास्करम्॥

अक्षत (चावल) से विष्णु का पूजन तथा तुलसी से गणेश, दुर्वा से दुर्गा तथा बिल्वपत्र से सूर्य का पूजन करना निषिद्ध है।

एकं गणाधिपे दद्याद्द्वे सूर्ये त्रीणि शङ्करे।
चत्वारि केशवे दद्यात्सप्ताश्वत्थे प्रदक्षिणाः॥

गणेश की एक, सूर्य की दो, शिव की तीन, विष्णु की चार, पीपल वृक्ष की सात प्रदक्षिणा करनी चाहिए। शिव प्रदक्षिणा में सोमसूत्र (जलहरी) को नहीं लांघना चाहिए।

तृणैः काष्ठैस्तथा पर्णैः पाषाणैर्लोष्ठकादिभिः।
अन्तर्धानं पुनः कृत्वा सोमसूत्रं तु लङ्घयेत्॥

तृण, काष्ठ, घास, पत्थरों तथा किसी भी तरह से ढका हो तो सोम सूत्र को लांघ सकते हैं।

गणेश तथा दुर्गा को छोड़कर, अन्य देवी देवताओं की एक प्रदक्षिणा नहीं करनी चाहिए।

नाङ्गुष्ठैर्मर्दयेद्देवं नाधः पुष्पैः समर्चयेत्।
कुशाग्रैर्न क्षिपेत्तोयं वज्रपातसमं भवेत्॥

अङ्गुठे से देव प्रतिमा का मर्दन नही करना चाहिये। नीचे भूमि पर गिरे हुये पुष्प से देव पूजा नही करनी चाहिये। कुश के अग्रभाग से पानी नही छिड़कना चाहिये। यह सारे कार्य वज्रपात दोष के समान हैं।

देवताओं को तीन बार एवं पितरों को एकबार धोकर अक्षत चढ़ायें।

प्रदक्षिणा करने के नियम-

पदान्तरे पदं न्यस्य करौ चलनवर्जितौ।
स्तुतिर्वाचि हृदि ध्यानं चतुरङ्गं प्रदक्षिणम्॥

धीरे-धीरे पांव रखते हुए हाथ को चलन रहित कर, वाचिक स्तुति करते हुए हृदय में ध्यान से युक्त होकर चतुरङ्ग प्रदक्षिणा करनी चाहिए।

स्थानभेद में जप की श्रेष्ठता -

गृहे चैकगुणः प्रोक्तो गोष्ठे शतगुणः स्मृतः।

पुण्यारण्ये तथा तीर्थे सहस्रगुणमुच्यते।
अयुतः पर्वते पुण्यं नद्यां लक्षगुणो जपे।
कोटिर्देवालये प्राप्ते चानन्तः शिवसन्निधौ॥

घर में जप करने से एक गुना, गौशाला में सौ गुना, पुण्यमय वन में तथा तीर्थस्थल में हजार गुना, पर्वत पर दस हजार, नदी तट पर लाख गुना, देवालय में करोड़ गुना तथा शिवालय मे अनन्त गुना पुण्य प्राप्त होता है।

घर में स्नान करते समय इस मन्त्र का प्रयोग करें

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥
कुरुक्षेत्र गया गङ्गा प्रभास पुष्कराणि च।
एतानि पुण्यतीर्थानि स्नानकाले भवन्त्विह॥

गङ्गा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु, कावेरी सारी नदियाँ इस जल में समाहित हुई है, कुरुक्षेत्र, गया, गङ्गा, प्रभास, पुष्करादि तीर्थ यहाँ उपस्थित है। ऐसी भावना करते हुये स्नान करना चाहिये।

स्नान काल में गङ्गाजी की प्रार्थना-

विष्णु पादाब्द सम्भूते! गङ्गे त्रिपथगामिनि।
धर्म्मद्रवेति विख्याते! पापं मे हर जाह्नवि॥

तुलसी स्तुति-

देवैस्त्वं निर्मिता पूर्वमर्चितासि मुनिश्वरैः।
नमो नमस्ते तुलसि पापं हर हरिप्रिये॥

हे माँ तुलसी! देवताओं के द्वारा आपका निर्माण किया गया हैं। पूर्व में ऋषि-मुनियों द्वारा आपकी पूजा-अर्चना हुई है। आपको बार बार नमन हैं तथा हे हरिप्रिया आप हमारे सारे पाप हर लो।

तुलसी तोड़ने का मन्त्र-

तुलस्यमृतजन्मासि सदा त्वं केशवप्रिया।
केशवार्थे चिनोमि त्वां वरदा भव शोभने॥

हे माँ तुलसी! आप अमृतजन्मा हो और सदा श्री हरि की प्रिया हो। मैं आपको श्री केशव वासुदेव के लिये तोड़ रहा हूँ, आप सदा मुझ पर प्रसन्न रहें।

तुलसी को जल देने का मन्त्र-

(1) **त्वदङ्गसंभवेन त्वां पूजयामि यथा हरिम्।**
तथा नाशय विघ्नं मे ततोयान्ति परां गतिम्।।

आपके बिना श्री हरि की पूजा संभव नही हैं अतः आपकी पूजा भी श्री हरि की पूजा के समान ही श्रेय प्रदान करने वाली हैं इसलिये हे मातः! आप हमारे सारे पापों का नाश कीजिये जिससे हमें परा गति की प्राप्ति हो।

(2) **महाप्रसाद जननी सर्वसौभाग्यवर्धिनी।**
आधि व्याधि जरा मुक्तं तुलसी त्वां नमोस्तुते।।

हे भक्ति का प्रसाद देने वाली माँ! सौभाग्य बढ़ाने वाली, मन के दुःख, और शरीर के रोग दूर करने वाली तुलसी माता को हम प्रणाम करते हैं।

अष्टनाम स्तव (पद्मपुराण से तुलसी के आठ नाम)-

वृन्दावनी, वृन्दा, विश्वपूजिता, पुष्पसारा, नन्दिनी, कृष्णजीवनी, विश्वपावनी, तुलसी।

पीपल पूजन का मन्त्र-

अश्वत्थ हुत भुग्वाम गोविन्दस्य सदाप्रिय।
अशेषं हर मे पापं वृक्षराज नमोऽस्तुते।।

हे गोविन्द के सदा प्रिय अश्वत्थ! हमारे सारे पापों को आप हर लो। हे वृक्षराज आपको हमारा नमन हो।

(पूजा में उपयोगी ऐसे दीपक, घण्टा एवं शङ्ख पूजन के मन्त्र)

दीपक पूजन का मन्त्र-

भो दीप! देव अपरस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्कर्म समाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव।।

घण्टा पूजन-

आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु राक्षसाम्।
घण्टानादं प्रकुर्वीत पश्चात् घण्टां प्रपूजयते्।।

शङ्ख पूजन-

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे।
निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य! नमोस्तुते।।

✻ ॥ विविध द्रव्यों द्वारा शिवपूजन से अभीष्ट प्राप्ति ॥ ✻

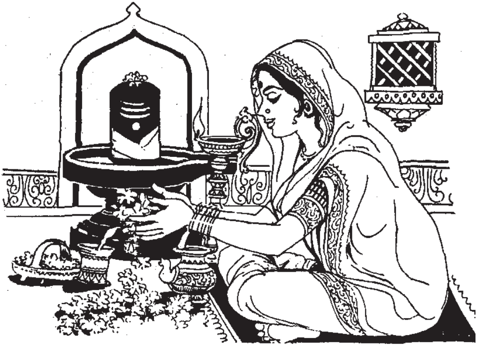

(1) **लक्ष्मी वृद्धि के लिए** – महादेव जी का चावलों से पूजन (चढ़ाने से) करने से लक्ष्मी की वृद्धि होती है। **तंडुलारोपणे नृणां लक्ष्मी वृद्धिः प्रजायते॥**

विशेष रूप से चावल चढ़ाने की विधि इस प्रकार है – चावल अखण्डित (अक्षत) होने चाहिए। इन्हें उत्तम भक्तिभाव से चढ़ाना चाहिए। रुद्रपूजा के विधान अनुसार **रुद्र प्रधान मन्त्र** से पूजा करके भगवान् शिव के ऊपर बहुत सुन्दर वस्त्र चढ़ायें और उसी पर चावल रखकर समर्पित करें। भगवान् शिव के ऊपर एक श्रीफल, गंध, पुष्प, धूप, दीप आदि निवेदन करने से पूजा का पूरा-पूरा फल प्राप्त होता है। वहाँ शिव के समीप बारह ब्राह्मणों को भोजन कराने से मन्त्रपूर्वक साङ्गोपाङ्ग पूजा सम्पन्न होती है। जहाँ सौ मन्त्र जपने की विधि हो, वहाँ पर 108 मन्त्र जपने का विधान है। लक्ष्मी की वृद्धि होती है।

(2) **संतान प्राप्ति** – गेहूँ के बने हुए पकवान से भगवान् शंकर की पूजा निश्चय ही बहुत उत्तम मानी गई है। एक लाख बार पूजन करने से संतान सुख में वृद्धि होती है।

(3) **धर्म-अर्थ-काम-भोग की वृद्धि** – इसके लिए प्रियंगु (कंगनी) द्वारा सर्वाध्यक्ष परमात्मा शिव का पूजन करने से सिद्धि होती है। उपासक को समस्त सुखों को देने वाली होती है।

(4) **रोग शान्ति के लिए** – उड़द से रोग शान्ति के लिए कही गई है। इसके साथ ही विधिपूर्वक पूजन करना भी शुभ होता है। इसके अतिरिक्त भक्तिभाव से विधिपूर्वक श्री शिवपूजन करके जलधारा समर्पित करनी चाहिए। ज्वर के कोप की शान्ति के लिए भी जलधारा विशेष शुभ होती है।

(5) **सन्तान सुख एवं वंशवृद्धि के लिए** – शतरुद्रिय मन्त्र से, रुद्री के ग्यारह पाठों से, रुद्रमन्त्रों के जप से, पुरुष सूक्त से, छः ऋचावाले रुद्रसूक्त से, महामृत्युञ्जय मन्त्र से, गायत्री मन्त्र से अथवा शिव के शास्त्रोक्त नामों के आदि में प्रणव और अन्त में **नमः** पद

जोड़कर बने हुए मन्त्रों द्वारा जलधारा अर्पित करनी चाहिए। जैसे – **ॐ नमः शिवाय**। उत्तम भस्म धारण करके उपासक को प्रेमपूर्वक नाना प्रकार के शुभ एवं दिव्य द्रव्यों द्वारा शिवलिङ्ग की पूजा करनी चाहिए और शिव पर उनके सहस्रनाम मन्त्रों से घी की धारा चढ़ानी चाहिए। ऐसा करने से **वंश का विस्तार** होता है, इसमें संशय नहीं है।

(6) **प्रमेह आदि रोग की शान्ति के लिये** केवल दुग्ध की धारा शिवजी पर विशेषतः करनी चाहिए।

(7) **बुद्धि-उज्ज्वल करने के लिए** – भगवान् शंकर को शक्कर मिश्रित दुग्ध की धारा चढ़ाने से तथा दस हज़ार मन्त्रों का जप (पंचाक्षरी मन्त्र) करने से बृहस्पति के समान उत्तम बुद्धि प्राप्त हो जाती है।

विशेष रूप से गङ्गाजल की धारा तो भोग और मोक्ष दोनों फलों को देने वाली है। सभी प्रकार की धारा चढ़ाने के समय मृत्युञ्जय मन्त्र पढ़ते हुए चढ़ानी चाहिए। दस हज़ार जप का विधान है और ग्यारह ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए।

उपरोक्त विधि से शिवपूजन एवं पार्थिव लिङ्ग की पूजा करने से उपासक को तीन मास में सिद्धि हो जाती है।

नव ग्रहों के जपार्थ वैदिक मन्त्र

सूर्यः ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।
हिरण्ययेन सविता रथेनादेवोयानि भुवनानि पश्यन्॥

चन्द्रः ॐ इमं देवा असपत्नं सुवद्धं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जान राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा॥

मंगलः ॐ अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽयम्।
अपां रेतां सिजिन्वति॥

बुधः ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्तेसं सृजेथामयञ्च।
अस्मिनत्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्चसीदत॥

गुरुः ॐ बृहस्पतेऽतियदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

शुक्रः ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणाव्यपिवत्क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापतिः।
ऋतेनसत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु॥

शनिः ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपोभवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तु नः॥

राहुः ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा।
कया शचिष्ठयावृता॥

केतुः ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्याऽपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥

❋ ॥ 51 शक्तिपीठ ॥ ❋

शक्तिपीठों की संख्या इक्यावन कही गई है। ये भारतीय उपमहाद्वीप में विस्तृत हैं। "शक्ति" अर्थात देवी दुर्गा, जिन्हें दाक्षायनी या पार्वती रूप में भी पूजा जाता है। "भैरव" अर्थात शिव के अवतार, जो देवी के स्वांगी हैं। "अंग या आभूषण" अर्थात, सती के शरीर का कोई अंग या आभूषण, जो श्री विष्णु द्वारा सुदर्शन चक्र से काटे जाने पर पृथ्वी के विभिन्न स्थानों पर गिरा, आज वह स्थान पूज्य है, और शक्तिपीठ कहलाता है।

क्रम	शक्ति	अंग या आभूषण	भैरव	स्थान
1	कोट्टरी	ब्रह्मरंध्र (सिर का ऊपरी भाग)	भीमलोचन	हिंगुल या हिंगलाज, कराँची, पाकिस्तान से लगभग 125 कि.मी. उत्तर-पूर्व में
2	महिषमर्दिनी	आँख	क्रोधीश	शर्करे, कराची पाकिस्तान के सुक्कर स्टेशन के निकट, इसके अलावा नैनादेवी मंदिर, बिलासपुर, हि.प्र. भी बताया जाता है।
3	सुनंदा	नासिका	त्र्यंबक	सुगंध, बांग्लादेश में शिकारपुर, बरिसल से 20 कि.मी. दूर सोंध नदी तीरे
4	महामाया	गला	त्रिसंध्येश्वर	अमरनाथ, पहलगाँव, काश्मीर
5	सिद्धिदा (अंबिका)	जीभ	उन्मत्त भैरव	ज्वाला जी, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश
6	त्रिपुरमालिनी	बांया वक्ष	भीषण	जालंधर, पंजाब में छावनी स्टेशन निकट देवी तलाब
7	जय दुर्गा	हृदय	बैद्यनाथ	बैद्यनाथधाम, देवघर, झारखंड

8	महाशिरा	दोनों घुटने	कपाली	गुजयेश्वरी मंदिर, नेपाल, निकट पशुपतिनाथ मंदिर
9	दाक्षायनी	दायां हाथ	अमर	मानस, कैलास पर्वत, मानसरोवर, तिब्बत के निकट एक पाषाण शिला
10	विमला	नाभि	जगन्नाथ	बिराज, उत्कल, उड़ीसा
11	गंडकी चंडी	मस्तक	चक्रपाणि	गंडकी नदी के तट पर, पोखरा, नेपाल में मुक्तिनाथ मंदिर
12	देवी बाहुला	बायां हाथ	भीरुक	बाहुल, अजेय नदी तट, केतुग्राम, कटुआ, वर्धमान जिला, पश्चिम बंगाल से 8 कि.मी.
13	मंगलचंद्रिका	दायीं कलाई	कपिलांबर	उज्जनि, गुस्कुर स्टेशन से वर्धमान जिला, पश्चिम बंगाल 16 कि.मी.
14	त्रिपुरसुंदरी	दायां पैर	त्रिपुरेश	माताबाढ़ी पर्वत शिखर, निकट राधाकिशोरपुर गाँव, उदरपुर, त्रिपुरा
15	भवानी	दांयी भुजा	चंद्रशेखर	छत्राल, चंद्रनाथ पर्वत शिखर, निकट सीताकुण्ड स्टेशन, चिट्टागौंग जिला, बांग्लादेश
16	भ्रामरी	बायां पैर	अंबर	त्रिस्रोत, सालबाढ़ी गाँव, बोडा मंडल, जलपाइगुड़ी जिला, पश्चिम बंगाल
17	कामाख्या	योनि	उमानंद	कामगिरि, कामाख्या, नीलांचल पर्वत, गुवाहाटी, असम
18	जुगाड्या	दायें पैर का बड़ा अंगूठा	क्षीर खंडक	जुगाड्या, खीरग्राम, वर्धमान जिला, पश्चिम बंगाल

19	कालिका	दायें पैर का अंगूठा	नकुलीश	कालीपीठ, कालीघाट, कोलकाता
20	ललिता	हाथ की अंगुली	भव	प्रयाग, संगम, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
21	जयंती	बायीं जंघा	क्रमादीश्वर	जयंती, कालाजोर भोरभोग गांव, खासी पर्वत, जयंतिया परगना, सिल्हैट जिला, बांग्लादेश
22	विमला	मुकुट	सांवर्त	किरीट, किरीटकोण ग्राम, लालबाग कोर्ट रोड स्टेशन, मुर्शीदाबाद जिला, पश्चिम बंगाल से 3 कि.मी. दूर
23	विशालाक्षी एवं मणिकर्णी	मणिकर्णिका	कालभैरव	मणिकर्णिका घाट, काशी, वाराणसी, उत्तर प्रदेश
24	श्रवणी	पीठ	निमिष	कन्याश्रम, भद्रकाली मंदिर, कुमारी मंदिर, तमिल नाडु
25	सावित्री	एड़ी	स्थनु	कुरुक्षेत्र, हरियाणा
26	गायत्री	दो पहुंचियां	सर्वानंद	मणिबंध, गायत्री पर्वत, निकट पुष्कर, अजमेर, राजस्थान
27	महालक्ष्मी	गला	शंभरानंद	श्री शैल, जैनपुर गाँव, 3 कि.मी. उत्तर-पूर्व सिल्हैट टाउन, बांग्लादेश
28	देवगर्भ	अस्थि	रुरु	कांची, कोपई नदी तट पर, 4 कि.मी. उत्तर-पूर्व बोलापुर स्टेशन, बीरभुम जिला, पश्चिम बंगाल
29	काली	बायां नितंब	असितांग	कमलाधव, शोन नदी तट पर एक गुफा में, अमरकंटक, मध्य प्रदेश
30	नर्मदा	दायां नितंब	भद्रसेन	शोन्देश, अमरकंटक, नर्मदा के उद्गम पर, मध्य प्रदेश

31	शिवानी	दायां वक्ष	चंदा	रामगिरि, चित्रकूट, झांसी-माणिकपुर रेलवे लाइन पर, उत्तर प्रदेश
32	उमा	केश गुच्छ: चूड़ामणि	भूतेश	वृंदावन, भूतेश्वर महादेव मंदिर, निकट मथुरा, उत्तर प्रदेश
33	नारायणी	ऊपरी दाड़	संहार	शुचि, शुचितीर्थम शिव मंदिर, 11 कि.मी. कन्याकुमारी-तिरुवनंतपुरम मार्ग, तमिल नाडु
34	वाराही	निचला दाड़	महारुद्र	पंचसागर, धरान, विजयपुर, नेपाल
35	अर्पण	बायां पायल	वामन	करतोयतत, भवानीपुर गांव, 28 कि.मी. शेरपुर से, बागुरा स्टेशन, बांग्लादेश
36	श्री सुंदरी	दायां पायल	सुंदरानंद	श्री पर्वत, लद्दाख, कश्मीर, अन्य मान्यता: श्रीशैलम, कुर्नूल जिला आंध्र प्रदेश
37	कपालिनी (भीमरूप)	बायीं एड़ी	शर्वानंद	विभाष, तामलुक, पूर्व मेदिनीपुर जिला, पश्चिम बंगाल
38	चंद्रभागा	आमाशय	वक्रतुंड	प्रभास, 4 कि.मी. वेरावल स्टेशन, निकट सोमनाथ मंदिर, जूनागढ़ जिला, गुजरात
39	अवंति	ऊपरी ओष्ठ	लंबकर्ण	भैरवपर्वत, भैरव पर्वत, क्षिप्रा नदी तट, उज्जयिनी, मध्य प्रदेश
40	भ्रामरी	ठोड़ी	विकृताक्ष	जनस्थान, गोदावरी नदी घाटी, नासिक, महाराष्ट्र
41	राकिनी: विश्वेश्वरी	गाल	वत्सनाभ: दंडपाणि	सर्वशैल:गोदावरीतीर, कोटिलिंगेश्वर मंदिर, गोदावरी नदी तीरे, राजमहेंद्री, आंध्र प्रदेश

42	अंबिका	बायें पैर की अंगुली	अमृतेश्वर	बनासकाँठा, गुजरात।
43	कुमारी	दायां स्कंध	शिवा	रत्नावली, रत्नाकर नदी तीरे, खानाकुल-कृष्णानगर, हुगली जिला पश्चिम बंगाल
44	उमा	बायां स्कंध	महोदर	मिथिला, जनकपुर रेलवे स्टेशन के निकट, भारत-नेपाल सीमा पर
45	कलिका देवी	पैर की हड्डी	योगेश	नलहाटी, नलहाटि स्टेशन के निकट, बीरभूम जिला, पश्चिम बंगाल
46	जयदुर्गा	दोनों कान	अभिरु	कर्नाट, अज्ञात
47	महिषमर्दिनी	भ्रूमध्य	वक्रनाथ	वक्रेश्वर, पापहर नदी तीरे, 7 कि.मी. दुबराजपुर स्टेशन, बीरभूम जिला, पश्चिम बंगाल
48	यशोरेश्वरी	हाथ एवं पैर	चंदा	यशोर, ईश्वरीपुर, खुलना जिला, बांग्लादेश
49	फुल्लरा	ओष्ठ	विश्वेश	अट्टहास, 2 कि.मी. लाभपुर स्टेशन, बीरभूम जिला, पश्चिम बंगाल
50	नंदिनी	गले का हार	नंदिकेश्वर	नंदीपुर, चारदीवारी में बरगद वृक्ष, सैंथिया रेलवे स्टेशन, बीरभूम जिला, पश्चिम बंगाल
51	इंद्रक्षी	पायल	राक्षसेश्वर	लंका, स्थान अज्ञात, (एक मतानुसार, मंदिर ट्रिंकोमाली में है, पर पुर्तगली बमबारी में ध्वस्त हो चुका है। एक स्तंभ शेष है। यह प्रसिद्ध त्रिकोणेश्वर मंदिर के निकट है)

✻ ॥ 18 पुराण (एक परिचय) ॥ ✻

क्रम	नाम	क्रम	नाम
1	ब्रह्म पुराण	10	ब्रह्मवैवर्त पुराण
2	पद्म पुराण	11	लिङ्ग पुराण
3	विष्णु पुराण	12	मत्स्य पुराण
4	शिव पुराण	13	कर्म पुराण
5	भागवत पुराण	14	स्कन्द पुराण
6	नारद पुराण	15	गरुड पुराण
7	मार्कण्डेय पुराण	16	नृसिंह पुराण
8	अग्नि पुराण	17	वराह पुराण
9	भविष्य पुराण	18	विष्णु-धर्मोत्तर पुराण

॥ 84 लाख योनियाँ ॥

क्रम	विवरण
1	20 लाख वृक्षादि
2	9 लाख जलचर
3	11 लाख कृमि
4	10 लाख पक्षी
5	30 लाख पशु
6	4 लाख वानर
7	1 मानव योनि

॥ भारत के चार धाम ॥

1	बद्रिकाश्रम (सतयुग)
2	रामेश्वर (त्रेतायुग)
3	द्वारिका (द्वापरयुग)
4	जगन्नाथ पुरी (कलयुग)

॥ उत्तराखण्ड के चार धाम ॥

1	यमुनोत्री	3	केदारनाथ
2	गङ्गोत्री	4	बदरीनाथ

✻ ॥ 14 लोक ॥ ✻

क्रम	नाम
ऊपर	
1	भूः
2	भुवः
3	स्वः
4	महः
5	जनः
6	तपः
7	सत्यम् (ब्रह्मलोक)

क्रम	नाम
नीचे	
1	अतल
2	वितल
3	सुतल
4	तलातल
5	महातल
6	रसातल
7	पाताल

✻ ॥ सप्तर्षि ॥ ✻

क्रम	ऋषियों के नाम
1	गौतम
2	भारद्वाज
3	विश्वामित्र
4	कश्यप
5	जमदग्नि
6	वशिष्ठ
7	अत्रि

✻✻✻✻✻

✻ ॥ दशावतार ॥ ✻

क्रम	अवतारों के नाम
1	श्री मत्स्य अवतार
2	श्री कूर्म अवतार
3	श्री वाराह अवतार
4	श्री नरसिंह अवतार
5	श्री वामन अवतार
6	श्री परशुराम अवतार
7	श्री राम अवतार
8	श्री बलदेव अवतार
9	श्री कृष्ण अवतार
10	श्री कल्कि अवतार

❋ षोडश संस्कार (एक संक्षिप्त परिचय)❋

वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैर्निषेकादि द्विजन्मनाम्।
कार्यः शरीरसंस्कारः पावनः प्रत्ये चेह च॥

सब मनुष्यों को उचित है कि वेदात्म पुण्यरूप कर्मों से ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य अपने सन्तानों का षोडश संस्कार करें जिससे शरीर एवं मन की शुद्धि होती है तथा धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष रूपी चारों पुरुषार्थ की प्राप्ति के योग्य बनें। मनुस्मृति के अनुसार यह 16 संस्कार इस प्रकार हैं-

1. **गर्भाधान संस्कार-**गृहाश्रमी होने पर संतान प्राप्ति के लिये वीर्य निषेचन द्वारा गर्भस्थापन करना।
2. **पुंसवन-**स्त्री के गर्भाधान के चिह्न प्रकट होने पर दूसरे या तीसरे मास में पुत्रोत्पत्ति के उद्देश्य से यज्ञपूर्वक की जानेवाली विधि।
3. **सीमन्तोन्नयन-**गर्भ के चतुर्थमास में गर्भ स्थिरता पुष्टि एवं स्त्री के आरोग्य हेतु विधि।
4. **जातकर्म-**शिशु जन्म के समय किया जाने वाला संस्कार जिसमें सोने की शलाका से नवजात को थोड़ा सा मधु एवं घृत चटाया जाता हैं।
5. **नामकरण-**जन्म से 11, 12वें या किसी भी सुखमय दिन में बालक का नाम रखना।
6. **निष्क्रमण-**बालक को चतुर्थमास में घर से बाहर भ्रमण कराने ले जाना।
7. **अन्नप्राशन-**लगभग छठे मास में बालक को अन्न आदि सुपाच्य पौष्टिक भोजन देना।
8. **मुण्डन(चूड़ाकर्म)-**1 या 3 वर्ष बाद बालक का प्रथम बार मुण्डन कराना।
9. **उपनयन-**बालक का यज्ञोपवीत करना एवं वेदाध्ययन के लिये गुरु समीप निवास।
10. **वेदारम्भ-**गुरु के समीप रहकर वेदाध्ययन करना।
11. **केशांत-**युवावस्था के प्रारम्भ में केशकर्तन करना।
12. **समावर्तन-**स्नातक होकर शिक्षा समाप्त कर गुरुकुल छोड़ना।
13. **विवाह-**गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना एवं धर्मपूर्वक सन्तानोत्पत्ति में प्रवृत्त होना।
14. **वानप्रस्थ-**सन्तानों के स्वावलम्बी होने पर 50 वर्ष की आयु पश्चात् घर को त्याग, वन में तपस्या एवं ईश्वर चिन्तन करना।
15. **संन्यास-**सांसारिक भोग आदि की भावनाओं का त्याग कर परोपकारार्थ विचरण की दीक्षा लेना तथा ब्रह्म में लीन रहकर आत्मज्ञान व मोक्ष प्राप्ति हेतु प्रयत्न करना।
16. **अन्त्येष्टि-**प्राणवियोग होने पर शरीर का दाहकर्म करना।

✻ आध्यात्मिक जीवन में गुरु का महत्त्व ✻

वैसे तो कोई भी शिक्षा गुरु के बिना अधूरी है किन्तु आध्यात्मिक जीवन में गुरु के बिना तो एक भी डग चलना अति दुष्कर है। गुरु साक्षात् इष्ट का स्वरूप होता हैं तथा गुरु को शिव तथा शिव को गुरु कहा गया हैं। विद्या के आकार में "योगेश्वर" शिव ही गुरु बनकर विराजमान है। जैसे शिव, वैसी विद्या तथा जैसी विद्या वैसे गुरु, इन सभी में अभेद दृष्टि रखनी चाहिये तथा शिव, विद्या तथा गुरु के पूजन से समान फल मिलता हैं।

जो गुरु तत्त्ववेत्ता, गुणवान्, विद्वान, परमानन्द प्रकाशक तथा ईश्वरभक्त हैं वही आनन्द का साक्षात्कार करा सकता है तथा ज्ञानरहित नाममात्रका गुरु ऐसा नही कर सकता।

जन्मानेकशतैः सदादरयुजा भक्त्या समाराधितो
भक्तैर्वैदिकलक्षणेन विधिना सन्तुष्ट ईशः स्वयम्।
साक्षात् श्रीगुरुरूपमेत्य कृपया दृग्गोचरः सन् प्रभुः
तत्त्वं साधु विबोध्य तारयति तान् संसारदुःखार्णवात्॥

✻ गुरु से मन्त्र ग्रहण तथा जप विधि (संक्षिप्त) ✻

आज्ञाहीन, क्रियाहीन, श्रद्धाहीन तथा विधिहीन जप निष्फल होता हैं अतः तदर्थ जिज्ञासु के लिये योग्य गुरु से मन्त्र की दीक्षा लेकर ही उसका जप करना श्रेयस्कर तथा महान फलदायी होता है।

जिज्ञासु को चाहिये कि वह पहले तत्त्ववेत्ता, जपशील, सद्गुणसम्पन्न, ध्यानयोगपरायण गुरु की शरण में जाकर शुद्ध मन से प्रयत्नपूर्वक उन्हें संतुष्ट करें। निश्छल भाव से गुरु की विधिवत् पूजा करके मन्त्र एवं ज्ञान का उपदेश क्रमशः प्राप्त करें।

शुभ तिथि, शुभ नक्षत्र एवं सर्वदोष रहित शुभ योग में एकान्त स्थान में अत्यन्त प्रसन्नचित्त से उच्चस्वर में भलीभाँति उच्चारण कराकर गुरु शिष्य को सभी प्रकार से आशीर्वादपूर्वक मन्त्र प्रदान करें। इस प्रकार गुरुसे प्राप्त मन्त्र का नित्य प्रति अनन्यचित्त होकर यथाशक्ति जप करना चाहिये।

जिज्ञासु को स्नान करके शुद्ध स्थान में स्वच्छ आसन बिछाकर पूर्वाभिमुख बैठकर हृदय स्थान में गुरु तथा शिव का ध्यान करके जप में प्रवृत्त होना चाहिये। जप से पहले न्यासादि कर, तदनन्तर जप में प्रवृत्त होना चाहिये। **सभी जपों में मानस जप श्रेष्ठ है।**

❋ होमादि में अग्निवास ❋

किसी भी अनुष्ठान के पश्चात् हवन करने का शास्त्रीय विधान है और हवन करने हेतु भी कुछ नियम बताये गए हैं जिसका अनुसरण करना अति आवश्यक है, अन्यथा अनुष्ठान का दुष्परिणाम भी आपको झेलना पड़ सकता है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण बात है हवन के दिन 'अग्नि के वास' का पता करना ताकि हवन का शुभ फल आपको प्राप्त हो सके।

तिथि की संख्या में 1 जोडें तथा वार की संख्या जोड़कर उसे 4 से भाग दें।

वार की गणना रविवार से तथा तिथि की गणना शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से करनी चाहिए।

उदाहरणार्थ-कृष्ण पक्ष की द्वितीया को मङ्गलवार को अग्निवास देखना हो तो हमें (कृष्ण पक्ष द्वितीया->17+1+3<-मङ्गलवार)=21:4, इस उदाहरण में जवाब को 4 से विभाजित करने पर 1 बचा जिससे हमें जानना चाहिये कि उस दिन अग्नि का वास आकाश में है तथा यज्ञ हानिकारक हो सकता है।

यदि शेष शून्य (0) अथवा 3 बचे, तो अग्नि का वास पृथ्वी पर होगा और इस दिन होम करना कल्याणकारक होता है।

यदि शेष 2 बचे तो अग्नि का वास पाताल में होता है और इस दिन होम करने से धन का नुक्सान होता है।

यदि शेष 1 बचे तो आकाश में अग्नि का वास होगा, इसमें होम करने से आयु का क्षय होता है।

अतः यह आवश्यक है की होम में अग्नि के वास का पता करने के बाद ही हवन करें।

तदुपरांत गृह के 'मुख-आहुति-चक्र' का विचार करना चाहिए इसके लिए अपने परिचित ज्योतिषी से परामर्श कर लें।

नोट-नित्य प्रतिदिन हवन करने वालों के लिये यह नियम लागू नहीं होता।

अग्निवास का परिहार -

विवाहयात्रा-व्रत-गोचरेषु चूड़ोपनीति ग्रहणे युगादौ।
दुर्गाविधाने सुतप्रसूते नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्॥

अर्थात् नित्य नैमित्तिक कार्य, जन्म व मृत्यु के समय, विवाह में, यात्रा आरम्भ या यात्राकाल में, व्रतोद्यापन में ग्रहों की अनिष्ट गोचर स्थिति में मुण्डन, उपनयनादि संस्कार में, ग्रहण शान्ति, रोग-पीड़ा की शान्ति, नवरात्र-दुर्गा-पूजा, पुत्रादि सन्तान जन्मकाल में अग्निवास का विचार नही किया जाता।

✻ होमादि में शिववास ✻

शिव से सम्बन्धित होमादि अनुष्ठान यज्ञ करने के लिये शिव वास का विचार करना चाहिये। इसकी विधि निम्न प्रकार से है-

तिथि की संख्या को दोगुना करके उसमें 5 जोडें तथा उसे 7 से भाग दें।

तिथि की गणना शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से करनी चाहिए।

उदाहरणार्थ-कृष्ण पक्ष की द्वितीया को मङ्गलवार को शिववास देखना हो तो हमें कृष्ण पक्ष द्वितीया->(17x2)+5=39:7, इस उदाहरण में जवाब को 7 से विभाजित करने पर 4 बचा जिससे हमें जानना चाहिये कि उस दिन शिव का वास सभा में है तथा यज्ञ सन्तापकारक हो सकता है।

कैलासे लभते सौख्या, गौर्या सह सुखसम्पदा, वृषभे अभीष्ट सिद्धि स्यात्। सभासन्तापकारिणी, भोजने च भवेत्पीडा, क्रीडायां कष्टमेव च, श्मशाने मरणं ज्ञेयं फलमेव विचिन्तयेत्॥

शिव का वास एवं शेष बचे हुये अंको का फल -

बचे हुये अंक	शिव का वास	फल
1	कैलास	सुखदायी
2	गौरी के साथ	सुखसम्पदा
3	नन्दी पर सवार	कार्यसिद्धि
4	सभा में	सन्तापकारी
5	भोजन में	पीड़ादायी
6	क्रीड़ा करते हुये	कष्टदायी
0	श्मशान में	अनिष्ट (मृत्यु)

❋ चतुर्युगों की व्यवस्था का वर्णन वि.सं. 2082 ❋

सतयुग – इसकी उत्पत्ति कार्तिक शुक्ल नवमी (अक्षय-नवमी) बुधवार को हुई। इसकी आयु 1728000 वर्ष की है। इसमें मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह – ये चार अवतार हुए, मत्स्य जी ने वेदों का उद्धार किया, वराह जी ने जलोद्वार किया, कूर्म जी ने पृथ्वी की रक्षा की और उद्धार किया, नृसिंह जी ने हिरण्यकश्यप का वध किया। इस युग में हर जाति अपने-अपने धर्म पर स्थिर थी। समय पर वर्षा थी, फसलें अच्छी होती थी। स्त्रियां पद्मिनी थीं, गौवें दूध अधिक देती थीं। पुण्य 20 विश्वे पाप का नाम तक भी न था। सुवर्ण और रत्नादि का व्यवहार था और पुष्कर तीर्थ प्रधान था। सूर्य ग्रहण 20000 चन्द्र ग्रहण 2000 थे।

त्रेतायुग – वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय-तृतीया), सोमवार को त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु 1296000 वर्ष थी। इस युग से तीन अवतार वामन, परशुराम, श्री रामचन्द्र हुए। श्री वामन जी ने राजा बली से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर बाद में समग्र पृथ्वी को 3 पैर में नाप कर राजा बली को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी ने अभिमानी क्षत्रियों का 21 बार नाश करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्र जी ने रावणादि राक्षसों का वध किया। पुण्य 15 विश्वे, पाप 5 विश्वे था। ब्राह्मण वेदों के ज्ञाता थे और किञ्चिन्न्यून तपोनिष्ट त्यागी थे। वे शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां चित्रणी पतिव्रता थीं। सुवर्ण का सिक्का था। सूर्य ग्रहण 20000 और चन्द्र ग्रहण 30000 थे। तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर युग – माघ कृष्ण 30 (मौनी अमावस्या) शुक्रवार को द्वापर युग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु 7,64,000 वर्ष थी। इसमें 2 अवतार श्री कृष्ण जी ने कंस शिशुपालादि का वध किया और बलराम ने धर्म का उद्धार किया। ब्राह्मण कुछ धर्म में तत्पर कुछ सत्यवक्ता, कुछ झूठ भी बोलते थे। अपने धर्म कर्म पर स्थित परन्तु लोभयुक्त थे। चांदी के सिक्के का व्यवहार अधिक था। कुरुक्षेत्र तीर्थ प्रधान था। पुण्य 10 विश्वे था। सूर्य ग्रहण 24000, चन्द्र ग्रहण 36000 थे। स्त्रियां शांखिनी एवं शीलयुक्ता होती थी।

कलियुग – भाद्रपद कृष्ण 13, रविवार आधी रात को कलियुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु 432000 वर्ष है, इसमें बुद्ध व कल्कि अवतार है, उनका काम धर्म का उद्धार करना है। पुण्य 5 विश्वे, पाप 15 विश्वे हैं, गंगा तीर्थ प्रधान है। इस युग में मिट्टी के पात्र और पत्र व ताम्र का सिक्का व्यवहार में लाया जाएगा। सब जाति के लोग अपने धर्म से गिर जायेंगे। धूर्त विद्या की पूजा होगी। सूर्य और चन्द्र ग्रहण 46000 होंगे। कलियुग के अन्त में सम्भल ग्राम में विष्णुयश नामक ब्राह्मण के घर में कल्कि अवतार होगा। कलियुग में नीच लोगों की पूजा होगी। अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। व्यभिचारिणी स्त्रियां अपने को सति कहेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में चलेंगे। पिता कन्या को बेचेंगे। स्त्रियों को छोटी आयु में गर्भ होने लगेंगे। लोग गौ ब्राह्मण की हत्या से भी भय नहीं करेंगे। सन्तान का माता-पिता के साथ स्वार्थ के कारण ही प्रेम रहेगा। धर्म गौण व अर्थ प्रधान रहेगा। श्रीगंगा मुख्य तीर्थ होगी। शासन प्रबन्ध में धर्म का स्थान नगण्य होगा। स्त्रियां शांखिनी होंगी।

आपको किस दिन क्या करना शुभ है

	रविवार	सोमवार	मङ्गलवार	बुधवार	बृहस्पतिवार	शुक्रवार	शनिवार
विद्या एवं शिक्षा सम्बन्धी	विज्ञान, इंजीनियरिंग सेना, उद्योग, बिजली, मैडिकल एवं प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी	लेखनादि कार्य, मेडिकल शिक्षा सौन्दर्य प्रसाधन औषधि निर्माण व योजना सम्बन्धी	बिजली (इलैक्ट्रॉनिक), सर्जरी, शिक्षा, शास्त्र विद्या, अग्नि स्पोर्टस, भूगर्भ विज्ञान, दन्त चिकित्सा	गणित, लेखनादि बौद्धिक कार्य, बैंक, वकालत, तकनीकी, ज्योतिष, वाहनादि चलाना, सीखना	दर्शन शास्त्र धर्म मंत्र, ज्योतिष, संस्कृत विद्यारम्भ, वकालत, उच्च पद, प्रशासनिक शिक्षा	नृत्य, गायन, कला, संगीत, एक्टिंग, गीत, काव्य, सौन्दर्य सम्बन्धी	तकनीकी शिल्प कला, मशीनरी, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी का ज्ञान शुरु करना
व्यापार सम्बन्धी कार्य	राज्य प्रशासन कार्य सेनाधिकारी, ज्वैलरी, औषधि, शास्त्र, अनाज, सोना, तांबा, चाँदी, गाय, बैलादि, मेडिकल, मंत्रानुष्ठान	कृषि, गाय, भैंस, दूध, घी, डेयरी, फार्म, शंख, मोती, औषधि, स्त्री, धन, सम्पदा, सौन्दर्य प्रसाधन, सुगन्धि, विदेश पत्राचार	शक्ति, अग्नि एवं बिजली से सम्बन्धित कार्य, बेकरी, लोहा तांबा, भूमि, सर्जरी एवं रक्षा सामग्री, सन्धि विच्छेद	कृषि एवं व्यापारिक वस्तुओं का क्रय-विक्रय शेयरों का क्रय, पुस्तक लेखन, शिक्षण, वकालत, शिल्प, सम्पादन कार्य	धार्मिक अनुष्ठान, उच्च प्रशासनिक कार्य, आभूषण, औषधि, लकड़ी, भूमि वाहनादि का क्रय विक्रय, विदेश गमन	संगीत, सिनेमा, विदेश यात्रा, टेलीविजन, श्रृंगारिक वस्तु, रुई, कपड़ा चाँदी, रसायन, सुगन्धि	मशीनरी, लोहा, चमड़ा, लकड़ी, सीमेंट, तेल, पैट्रोल, पत्थर, ठेकेदारी शास्त्रों का क्रय विक्रय, आपरेशन, कार्य, अधीनस्थ कर्मचारी

अन्य विविध मुहूर्त

नाम मुहूर्त	शुभ ग्रह्य तिथि	शुभ वार मास	शुभ नक्षत्र
बच्चों को स्कूल में डालना (विद्यारम्भ)	2, 3, 5, 7, 10, 11, 12	उत्तरायण, भाद्र 5 वें वर्ष रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र	अश्विनी, पुनर्वसु, अश्लेषा, रेवती, अनुराधा, आर्द्रा, स्वाती, चित्रा
दुकान:बहीखाता शुरु	1 (कृ), 3, 5, 7, 10, 11, 13 शुक्ल पक्ष में	रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, भाद्रपद, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन	रेवती, चित्रा, अनुराधा, उत्तराषाढा, उ॰फाल्गुनी, उ॰भाद्रपदा, हस्त, अश्विनी, रोहिणी, पुष्य
नौकरी करना	2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 15	रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र उत्तरायण में	अश्विनी, मृगशिरा, चित्रा, हस्त, पुष्य, अनुराधा, रेवती
स्कूटर, कार, सवारी खरीदना	1 (कृ), 2, 3, 5, 6, 10, 11, 12, 13, शुक्ल पक्ष में	सोम, बुध, गुरु, शुक्र वारों में	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, अनुराधा, शतभिषा, पुनर्वसु, पुष्य, स्वाती, हस्त, चित्रा, रेवती
गृहारम्भ (मकान बनाना)	2, 3, 6, 7, 10, 11, 12, 13, शुक्ल पक्ष में	सोम, बुध, गुरु, शुक्र, वैशाख, ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन	उत्तराषाढा, उ॰फाल्गुनी, रोहिणी, उ॰भाद्रपदा, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, अनुराधा, चित्रा, स्वाति, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती
शिलान्यास (नींव डालना)	गृहारम्भ वाली तिथियाँ	गृहारम्भ वाले वार मास, प्रविष्टा 15, 7, 9, 10, 21, 24, त्याज्य	गृहारम्भ वाले नक्षत्र (अश्विनी, श्रवण त्याज्य)
नव घर में प्रवेश	2, 3, 5, 7, 10, 11, 13, 15 शुक्ल पक्ष में	वैशाख, ज्येष्ठ, मार्ग, माघ, फाल्गुन	मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती, स्वाति, धनिष्ठा, श्रवण, मूल, उत्तराषाढा, उ॰फाल्गुनी, उ॰भाद्रपदा, रोहिणी, हस्त
भूमि खरीदने के लिए	1 (कृ), 5, 6, 10, 11, 15 शुक्ल पक्ष में	मंगल, गुरु, शुक्र	मृगशिरा, पुनर्वसु, आश्लेषा, मघा, विशाखा, अनुराधा, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, मूल, रेवति, रोहिणी
ऑपरेशन कराने के लिए	2, 3, 5, 6, 7, 10, 12, 13	रवि, मंगल, गुरु	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, पुष्य, हस्त

अन्य विविध मुहूर्त							
नाम वार	**रवि**	**सोम**	**मंगल**	**बुध**	**बृहस्पति**	**शुक्र**	**शनि**
नवीन वस्त्र धारण करना	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	शुभ	अति शुभ	अशुभ
नवीन आभूषण धारण करना	शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
तेल लगाना	अशुभ	शुभ	अशुभ	अति शुभ	अशुभ	शुभ	अति शुभ
हजामत करना	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ
नया जूता पहनना	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम
मुकद्दमा	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ

नोटः प्रतिदिन क्षौरकर्म (दाढ़ी) करने वालों के लिए शुभाशुभ गौण है।

अलंकार धारण विचारः

चित्रा, विशाखा, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा,अश्विनी, हस्ता, रेवती, नक्षत्रों में रवि, शुक्र, वृहस्पति, बुधवार के दिन स्त्री के लिए सुवर्णादि अलंकार (जेवर) धारण करना शुभ होता है।

ग्रह राशि सम्बन्धी रत्न विचार

ग्रह	राशि	रत्न	रत्ती मात्रा	धातु	वार	नक्षत्र	किस उंगली में पहने
सूर्य	सिंह	माणिक्य	5	सोना तांबा	रवि	उत्तराषाढा, उ.फा., कृत्तिका	अनामिका
चन्द्र	कर्क	मोती	4, 6, 11	चांदी	सोम	रोहिणी, हस्त	अनामिका
मङ्गल	मेष वृश्चिक	मूंगा	6, 8, 12	तांबा	मङ्गल	मृगशिरा, चित्रा	अनामिका
बुध	मिथुन कन्या	पन्ना	3, 6, 7	सोना	बुध	ज्येष्ठा, अश्लेषा, रेवती	कनिष्ठिका
गुरु	धनु मीन	पुखराज	3, 5, 9, 12	सोना	गुरु	पुष्य, पुनर्वसु, विशाखा	तर्जनी
शुक्र	तुला वृष	हीरा	1, 3	चांदी	शुक्र	पुष्य, भरणी, पू.फा.	मध्यमा
शनि	मकर कुम्भ	नीलम	5, 7, 9, 12	लोहा	शनि	उ.भा., पुष्य, चित्रा	मध्यमा
राहु	कन्या	गोमेंद	5, 7, 9	सीसा, पञ्च धातु	शनि	शतभिषा, स्वाति, आर्द्रा	मध्यमा
केतु	मीन	लह-सूनिया	6, 8, 12	सीसा, पञ्च धातु	शनि	शतभिषा, स्वाति, आर्द्रा	अनामिका

ग्रह कृत अनिष्ट फल निवारण हेतु सूर्यादि ग्रहों के दानादि पदार्थ

ग्रह	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
धातु	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण
उपधातु	ताम्र	चाँदी	ताम्र	काँस्य	काँस्य	चाँदी	लोहा	सीसा	सीसा
रत्न	माणिक	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसूनिया
धान्य	गेहूँ	चावल	मसूर	मूंग	चना	श्याम मूंग, चावल	तिल	उड़द	उड़द
पशु	रक्त धेनु	श्वेत वृष	रक्त वृष	हाथी	अश्व	श्वेत अश्व	भैंस	घोड़ा	अजा
रस	गुड़	घृत	गुड़	घृत	शक्कर	घृत	तेल	तेल	तेल
वस्त्र	केशरी वस्त्र	श्वेत वस्त्र	रक्त वस्त्र	नील वस्त्र	पीत वस्त्र	चित्र वस्त्र	कृष्ण वस्त्र	नील वस्त्र	कृष्ण वस्त्र
पुष्प	रक्त कमल	श्वेत पुष्प	रक्त कमल	सर्व पुष्प	पीत पुष्प	श्वेत पुष्प	कृष्ण पुष्प	कृष्ण पुष्प	धुम्र पुष्प
जप संख्या	7 हजार	11 हजार	10 हजार	9 हजार	19 हजार	16 हजार	23 हजार	18 हजार	17 हजार
समिधा	आक्	पलाश	कदिर	अपामार्ग	अश्वत्थ	उदुम्बर	शमी	दूर्वा	कुश
देवता	शिव	दुर्गा	गणेश	विष्णु	कुलदेवता	इन्द्राणि	देवी	भैरव	भैरव

ग्रह दोष निवारण हेतु बीज मंत्र				
ग्रह	**जपनीय बीजमन्त्राः**	**जपकाल**	**जप संख्या**	**हवन समिधा**
सूर्य	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सूर्योदय	7000	आक् काष्ठ
चन्द्र	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्याकाल	11000	पलाश
मंगल	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	सूर्योदय से 54 मिनट	10000	खैर
बुध	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	सूर्योदय से 2 घण्टे	9000	अपामार्ग
गुरु	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्याकाल	19000	पीपल
शुक्र	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सूर्योदय	16000	गूलर
शनि	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्याकाल	23000	शमी
राहु	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रि	18000	दूर्वा
केतु	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	रात्रि	17000	कुशा

॥ नवग्रहपीडाहरस्तोत्रम्॥

ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः।
विषमस्थानसम्भूतां पीडां हरतु मे रविः॥1॥

रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः।
विषमस्थानसम्भूतां पीडां हरतु मे विधुः॥2॥

भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत् सदा।
वृष्टिकृद्वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु मे कुजः॥3॥

उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः।
सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु मे बुधः॥4॥

देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः।
अनेकशिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः॥5॥

दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः।
प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडा हरतु मे भृगुः॥6॥

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः॥7॥

महाशिराः महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः।
अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी॥8॥

अनेकरूपवर्णैश्च शतशोऽथ सहस्त्रशः।
उत्पातरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः॥9॥

॥ इति ब्रह्माण्डपुराणोक्तं
नवग्रहपीडाहरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ नवग्रहस्तोत्रम्॥

सूर्य -

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

चन्द्रमा -

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥

भौम -

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजःसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥

बुध -

प्रियंगुकलिकाभासं रूपेणाऽप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥

गुरु -

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां तं नमामि बृहस्पतिम्॥

शुक्र -

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥

शनि -

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥

राहु -

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥

केतु -

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥

अथ वास्तु प्रकरण

गृह निर्माण में वास्तु दिग्दर्शन

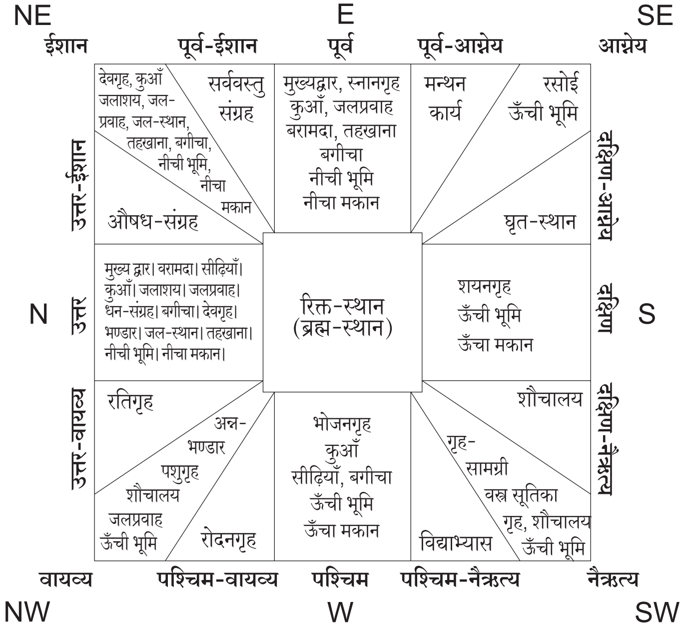

गृह निर्माण तथा वास्तु सम्बन्धी आवश्यक बातें

मकान पूर्व व उत्तर में नीचा और पश्चिम व दक्षिण में ऊँचा होना चाहिए। ऐसा होने से गृह स्वामि की उन्नति होती है।

1. मत्स्य पुराण में आया है कि दक्षिण दिशा में ऊँचा घर मनुष्य की सब कामनाओं को पूर्ण करता है।
2. जिस घर, देवालय, मठ आदि में सूर्य की किरणें और वायु प्रवेश नहीं करती वह शुभ नहीं होता।
3. किसी मार्ग या गली का अन्तिम मकान (जहाँ आगे मार्ग न हो) अशुभ है। ऐसा मकान कष्ट देने वाला है।
4. घर में टूटे-फूटे आसन (कुर्सी आदि) शयनिका और वाहन का होना भी अशुभ है।
5. गृहराम्भ और गृह प्रवेश के समय कुल देवता, गणेश, छत्रपाल और दिग्पति की विधिवत पूजा करें। आचार्य, द्विज और शिल्पी को विधिवत सन्तुष्ट करें। शिल्पी को वस्त्र और अलंकार दें। ऐसा करने से घर में सदा सुख रहता है।

वास्तु दोष दूर करने के लिए अद्भुत अनुभुत उपाय

यदि आपका भवन या निवास स्थान वास्तु सिद्धान्त के विपरीत हो तो कुछ निम्न दैनिक दिनचर्या में परिवर्तन कर आप शुभ फल प्राप्त तथा अनिष्ट प्रभाव से बच सकते है।

1. उत्तर-पूर्व की ओर अपना मुख रखकर पानी पीयें।
2. दक्षिण-पूर्व की ओर थाली रखें और पूर्वाभिमुख होकर भोजन करें।
3. दक्षिण-पश्चिम कोण में सोने से दक्षिण की ओर सिर कर के सोने से नींद गहरी और अच्छी आती है।
4. उत्तर-पूर्व या उत्तर-पश्चिम की ओर मुख करके पूजा करने बैठें।
5. द्वार के ऊपर लक्ष्मी, गणेश, कुबेर, स्वस्तिक, ॐ आदि मांगलिक चिन्ह स्थापित करें।
6. यदि घर में कोई पूजास्थल नहीं है तो उसे उत्तर-पूर्व (ईशान) कोण में रखें।
7. दक्षिण-पूर्व, उत्तर-पश्चिम या दक्षिण-पश्चिम कोण में कुआँ या ट्यूबवैल है तो उसे भरवाकर उत्तर-पूर्व कोण में कुआँ या ट्यूबवैल खुदवायें। अन्य दिशा में कुएँ को भरवा न सकें तो उसे प्रयोग में लाना बन्द करें अथवा उत्तर-पूर्व में एक और ट्यूबवैल या कुआँ लगवायें जिससे वास्तु का सन्तुलन हो सके।

8. दक्षिण-पश्चिम दिशा में अधिक दरवाजे और खिड़कियाँ हो तो उन्हें बन्द करके उनकी संख्या कम कर दें।
9. रसोई घर गलत स्थान पर हो तो अग्निकोण में एक बल्ब लगा दें।
10. दुकान की समृद्धि बढ़ाने के लिए प्रवेश द्वार के दोनों ओर गणपति की मूर्ति या स्टिकर लगायें। एक गणपति की दृष्टि दुकान पर पड़ेगी, दूसरे गणपति की बाहर की ओर।
11. द्वार दोष और वेध दोष को दूर करने के लिए शंख, सीप, समुद्र झाग, कौड़ी, ताम्बे या सोने की तुश लाल कपड़े में या मौली में बाँधकर दरवाजे पर लटकायें।
12. यदि मकान में चोरी होती हो या आग लगती हो तो भौम यन्त्र की स्थापना करें। यह यन्त्र पूर्वोत्तर कोण या पूर्व दिशा में, फर्श के नीचे दो फीट गहरा गड्डा खोदकर स्थापित किया जाता है।
13. घर के सभी प्रकार के वास्तु दोष दूर करने के लिए मुख्य द्वार पर एक ओर केले का वृक्ष, दूसरी ओर तुलसी का पौधा गमले में लगायें।
14. यदि किसी व्यक्ति को प्रयत्न करने पर भी निवास के लिए भूमि अथवा मकान न मिल रहा हो तो भगवान वराह के निम्न मन्त्र का जप करें -

।। ॐ नमः श्री वराहाय धरन्युद्धारणाय स्वाहा।।

15. घर में वास्तु दोष होने पर उचित यही है कि यथा सम्भव वास्तु शास्त्र के अनुसार ठीक करें। जहाँ तक हो सके तो निर्मित मकान में तोड़-फोड़ नहीं करनी चाहिए। तोड़-फोड़ करने से वास्तु-भंग दोष लगता है। यदि घर पुराना होने पर या अन्य किसी कारण से घर में पुनर्निर्माण या तोड़-फोड़ करना आवश्यक हो तो सोने से बने हुए नागदन्त (हाँथी दाँत) अथवा गाय के सींग से वास्तु पूजन करके गिरवाने से वास्तुभंग का दोष नहीं लगता।
16. घर में अखण्ड श्री राम चरित मानस पाठ या भगवन्नाम कीर्तन करने से वास्तु जनित दोष दूर हो जाता है।
17. मुख्य द्वार के उपर सिन्दूर से स्वस्तिक का चिन्ह बनायें। यह चिन्ह नौ अङ्गुल लम्बा तथा नौ अङ्गुल चौड़ा होना चाहिए। घर में जहाँ-जहाँ वास्तु दोष हो, वहाँ-वहाँ यह चिन्ह बनाया जा सकता है।

वास्तुदोष शान्ति के लिये उपयोगी मन्त्र

ॐ नमस्ते वास्तुदेवेश सर्वदोष हर भव सुखं देहि। शान्ति देहि। सर्वकामान् प्रयच्छ मे। ॐ वास्तुपुरुषाय नमः।।

मकान निर्माण हेतु पृथ्वी की शुभाऽशुभ परीक्षा

1. मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दिखने लगे या दूसरी मिट्टी जब तक न निकले अथवा साढे तीन हाथ गहरी खोदें। खोदते समय जमीन से पत्थर निकले तो धन आयु की वृद्धि हो, अगर गुठली निकले तो धन नाश हो और अगर हड्डी, राख एवं बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा होती है।

2. एक हाथ गहरा गड्ढा खोदकर उस में पानी भर दें। पानी भर कर उत्तर दिशा की ओर सौ कदम चलें। लौटने पर देखें। यदि गड्ढे में पानी उतना ही रहे तो वह श्रेष्ठ भूमि है। यदि पानी कुछ कम (आधा) रहे तो वह मध्यम भूमि है। यदि पानी बहुत कम रह जाय तो वह अधम भूमि है।

भूमि शयन ज्ञान

संक्रान्ति मिति दिन पाँचवें सप्तम नवम जोय।
10:21:24 में षड् दिन पृथ्वी सोय॥

संक्रान्ति के 5, 6, 7, 9, 10, 21 और 24वें दिन भूमि का शयन होता है। अतः इन दिनों भूमि पूजन वर्जित है।

खातारम्भ (नींव खोदना) दिशा निर्णय

नीचे विभिन्न राशियों में सूर्य की स्थिति के आधार पर राहु मुख की दिशा दी गयी है। घर की नींव राहु-मुख दिशा के पृष्ठ भाग में खोदना (आरम्भ करना) शुभ होता है। उदाहरण के लिए सौर वैशाख मास में सूर्य मेष राशि में होता है, उस समय राहु मुख नैऋत्य कोण में होता है। अतः नींव वायव्य कोण (पश्चिमोत्तर) से खोदना आरम्भ करना चाहिए।

राहु मुख की दिशा	ईशान	वायव्य	नैऋत्य	आग्नेय
सूर्य की राशि	5, 6, 7	8, 9, 10	11, 12, 1	2, 3, 4
नींव खोदने की दिशा	आग्नेय	ईशान	वायव्य	नैऋत्य

❊ प्राकृतिक उपचार ❊

बच्चों के लिए

1. जब बच्चों के दांत निकल रहे हों तो भुना हुआ सुहागा, शहद, मुलैठी, प्रत्येक 2 ग्राम बारीक करके बच्चों के मसूड़ों पर एक सप्ताह मलने से दांत बिना कष्ट के निकल आते हैं।
2. तुलसी और अदरक का रस समान भाग लेकर थोड़ा सा गुनगुना करके पिलाने से बच्चों के पेट का दर्द ठीक हो जाता है।
3. बच्चों के पेट फूलना, अफरा, तथा खुलकर दस्त न लगने पर तुलसी और पान का रस समान मात्रा में थोड़ा सा गुनगुना कर के पिला दें, अफरा आदि तुरन्त ठीक हो जाएगा।
4. तुलसी के पत्तों का रस 5 या 10 बूँद नित्य थोड़े से पानी में डालकर पिलाने से बच्चों की मांसपेशियां व हड्डियां मजबूत बनती हैं।
5. बच्चों के कान में दर्द होने पर तुलसी के पत्तों का रस थोड़ा सा सहने योग्य गर्म कर कान में डालने से तुरन्त कान का दर्द शान्त हो जाता है।
6. बच्चों का श्वास रोग तुलसी के पत्तों का रस शहद में मिलाकर पीने से दूर होता है।

कब्ज सारी बीमारियों की जड़ हैं। इससे बचाव के लिए निम्नलिखित उपाय करें :-

1. सवेरे शौच से पूर्व, रात को तांबे के बर्तन में रखा हुआ पानी पीना चाहिये।
2. भोजन के साथ साथ या अलग कच्ची सब्जियां जैसे गाजर, पालक, खीरा, टमाटर आदि का सेवन करें।
3. भोजन के बाद फलों का सेवन करें।
4. 1 या 2 केले कब्ज करते है जबकि अधिक केले खाने से कब्ज दूर होती है।
5. नीम के ताजा 10 पत्ते सुबह-सुबह 15 दिनों तक खाते रहने से रक्त विकार सम्बन्धी रोग जैसे खुजली, फोड़ा, फुंसी आदि में लाभ होता है।
6. रात के भोजन और सोने में कम से कम दो घन्टे का अंतर होना चाहिये।

सर्दी जुकाम के लिए

अदरक का रस एक तोला (10 ग्राम), शहद एक तोला (10 ग्राम) गर्म करके दिन में 2 बार पिएं।

मुंह के छालों के लिए

1. एक केला गाय के दही के साथ सेवन करने से कुछ दिनों में छाले ठीक हो जाते हैं।
2. तुलसी के पत्ते तथा चमेली के पत्ते चबाने से मुँह के छालो में राहत मिलती हैं।
3. तुलसी के 6 पत्ते नित्य प्रतिदिन सुबह शाम खाकर ऊपर से पानी पीने से मुंह के छाले व दुर्गन्ध दूर हो जाती है।

सिर चकराना

1. पेट की गैस से सिर चकराता हो, दौरा पड़ता हो, तो एक प्याली गर्म पानी में नीम्बू निचोड़कर आठ दिन तक पियें।
2. थोड़ी चीनी मिलाकर तुलसी के पत्तों का रस पीने से चक्कर आना दूर होता है।

दिल की धड़कन के लिए

1. दो केले, 1 तोला (10 ग्राम) शहद में मिलाकर खाने से दिल के दर्द से आराम मिलता है।
2. सवेरे 15 दिनों तक 50 ग्राम सेब का मुरब्बा, चांदी के वर्क में लगाकर सेवन करने से दिल की कमजोरी और दिल का बैठना ठीक हो जाता है।
3. यदि दिल बहुत धड़कता हो या घबराता हो तो 50 ग्राम आँवले के मुरब्बे पर दो चाँदी के वर्क लगाकर सुबह निहार मुँह (कुछ भी खाने से पूर्व) 15 दिन खाने से आराम मिलता है।

लू के लिए

1. राख में दो कच्चे आम भूनकर उसका गूदा निचोड़ कर 250 ग्राम पानी में थोड़ी बर्फ और चीनी मिलाकर दो बार पियें।
2. यदि लू लग गई हो तो तुलसी के पत्तों का रस चीनी में मिलाकर पीने से आराम मिलता है।

हैजा

1. दो तोले (20 ग्राम) आम के गर्म-गर्म पत्ते मसलकर आधा किलो पानी में डुबाकर उबाल लें, जब पानी आधा रह जाए तो छान कर गर्मागर्म दो बार पियें।
2. काली मिर्च के साथ तुलसी के पत्ते पीस कर गोली बनाकर सेवन करने से हैजा दूर होता है।

मुँहांसे

12 ग्राम मलाई में चौथाई नींबू निचोड़ कर रोज चेहरे पर मलें।

उल्टी (वमन) के लिए

1. 50 ग्राम पानी में आधे नींबू का रस, एक ग्राम जीरा, एक ग्राम छोटी इलायची के दाने पीसकर मिलाकर दो-दो घन्टे में पिलाने से उल्टी बन्द हो जायेगी।
2. तुलसी के पत्तों का रस, छोटी इलायची का चूर्ण थोड़ी सी चीनी में मिलाकर खाने से उल्टी बन्द हो जाती है।

पेट दर्द के लिए

1. नमक, अजवायन, जीरा, चीनी सब दो-दो ग्राम बारीक करके नींबू निचोड़ कर गर्म पानी से खाने से पेट दर्द ठीक हो जाएगा।
2. तुलसी व अदरक का रस गर्म करके पीने से पेट दर्द ठीक हो जाता है।

दांत दर्द के लिए

1. डी.सी लौंग पीस कर नींबू निचोड़ कर दांत पर मलें।
2. खाने वाला सोडा दांत पर मलें।
3. तुलसी के पत्ते तथा काली मिर्च पीस कर गोली बना लें। इस गोली को दर्द वाले दांत के नीचे दबाने से तुरन्त लाभ होगा।

पेट की गैस

एक मीठा सेब लेकर उसमें 10 ग्राम लौंग चुभो दें। एक घन्टे बाद लौंग निकाल कर 3 लौंग प्रतिदिन चाय के साथ लें।

प्यास के लिए

प्यास अधिक लगती हो तो 40 ग्राम सेब का रस, 40 ग्राम पानी में मिलाकर दिन में एक बार एक सप्ताह तक पियें।

सिर दर्द के लिए

1. गाजर के पत्तों का पानी गर्म करके नाक और कान में डालें, आधा सिर दर्द बन्द हो जाएगा।

2. यदि सिर दर्द पुराना हो तो 15 दिन तक रोज एक मीठे सेब को काटकर नमक लगाकर 5 मिनट बाद खूब चबाकर खायें।
3. तुलसी के पत्तों और नींबू का रस, बराबर मात्रा में पीने से सिर दर्द ठीक होता है।
4. सुबह शाम तुलसी के पत्तों का चूर्ण शहद के साथ लेने से आधा सिर दर्द ठीक होता है।

खाँसी के लिए

1. 5 ग्राम अनार का छिलका, थोड़े दूध में मिलाकर पीने से काली खाँसी से आराम मिलता है।
2. अदरक का रस (10 ग्राम), शहद (10 ग्राम) गर्म करके दिन में 2 बार, आठ दिन तक पियें। परहेज – खटाई, दही, लस्सी आदि।
3. तुलसी की मंजरी का चूर्ण बनाकर शहद के साथ लेने से खाँसी दूर होगी।

दमा व खाँसी में पीपल के पत्तों का प्रयोग

1. पीपल के सूखे पत्तों को खूब कूटें। जब चूर्ण बन जाये तब उसे कपड़े से छान लें। एक माह तक रोज सुबह लगभग आधा तोला (6 ग्राम) चूर्ण में शहद मिलाकर चाटने से दमा व खाँसी में स्पष्ट लाभ होता है।

पेट के कीड़े

1. दो सप्ताह रोज खाली पेट 125 ग्राम गाजर का रस पीने से पेट के कीड़े निकल जाते हैं। बड़े आदमी को गर्म करके पिलाएं।
2. रात को दो मीठे सेब खाने से पेट के कीड़े मरकर निकल जाते हैं।

बाल-झड़ की समस्या

1. पके केले के गुदे में नीम्बू का रस मिलाकर सिर के उस भाग पर लगायें जहाँ पर बाल उड़ गये हो, कुछ ही दिन में बाल आने लगेंगे।

उच्च रक्तचाप (हाई ब्लडप्रेशर)

1. एक महीने तक रोज सवेरे खाली पेट कड़वे नीम के पके दो फल (निंबोली) पानी के साथ निगलने से उच्च रक्तचाप में लाभ होता हैं।
2. 8-10 किशमिश रात को पानी में भिगोकर सवेरे खाली पेट, चबाकर खाने से इस बीमारी में राहत होती हैं।
3. उच्च रक्तचाप में केवल गाजर का रस पीने से रक्तचाप शीघ्र ही संतुलित हो जाता है।
4. सर्पगंधा को कूट-पीसकर सुरक्षित रख लें। इस चूर्ण को प्रातः व सायं 2-2 ग्राम की मात्रा में खाने से बढ़ा हुआ रक्तचाप सामान्य हो जाता हैं।

खूनी बवासीर के लिये

1. सूखे आंवले को पीसकर 1 चाय का चम्मच-भर, सुबह शाम 2 बार छाछ या गाय के दूध से लेने से खूनी बवासीर में लाभ होता हैं।
2. अनार के छिलके का चूर्ण 8-10 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम ताजे पानी के साथ सेवन करने से रक्त गिरने की शिकायत दूर होती है।
3. रक्तस्रावी बवासीर में इमली के पत्तों का रस पीना लाभकारी होता है।
4. खूनी बवासीर, अजीर्ण और कब्ज में पका हुआ पपीता खाना परम लाभकारी है।

❋ मेथी के गुणकारी लाभ ❋

कितनी ही बीमारियाँ कब्ज के कारण ही होती हैं, जिस पर हम गौर नहीं करते और रोगों के चंगुल में फँस जाते हैं। कब्ज के कारण आँतों में जमा हुआ मल सड़ने लगता है। शरीर के विभिन्न अंगों में भी मल (सूक्ष्म-मल-क्लेद) जमा होने पर सड़ने लगता है। जिससे शरीर के वे अंग रोगग्रस्त होने लगते हैं। मधुमेह (डायबिटीज) में यह खासकर देखा जाता है, जिससे शरीर में से दुर्गंध आती है तथा खुजली होने लगती है। मेथी इस सूक्ष्म मल को भी निकालकर शरीर के विभिन्न अंगो को साफ कर देती है। इसलिये मधुमेह के रोगियों के लिये यह वरदानस्वरूप है।

मेथी के दानों के साथ मेथी की सब्जी, वह भी कच्ची सब्जी जरूर खानी चाहिये।

सुबह खाली पेट, दोपहर में तथा रात को भोजन के बाद आधा चम्मच (2 से 3 ग्राम) मेथी पानी के साथ फाँकने से जोड़ों में मजबूती आती है। जो व्यक्ति हर रोज नियमित रूप से पानी के साथ मेथी फाँकते हैं, उनके घुटने तथा शरीर के अन्य जोड़ मजबूत रहते हैं। उन्हें गठिया, लकवा, मधुमेह, कब्ज, पेट के विकार, निम्न रक्तचाप, उच्च रक्तचाप आदि नहीं होते। इसके प्रयोग से कितनी भी भयंकर कब्ज दूर हो जाती है और सभी प्रकार के वात-विकारों में राहत मिलती है।

ॐ

आद्य जगद्गुरु श्री शङ्कराचार्य

ओङ्कारानन्द आश्रम हिमालय के मुख्य प्रतिष्ठित मन्दिर